

पृष्ठ १) भारतवर्ष का इतिहास

~~पृष्ठ १)~~ पहिला भाग ।

ड. मार्सेडेन, बी. ए., एफ. आर. जी. एस., एम. आर. ए. एस।

और

लाला भीतराम, बी. ए., एफ. ए. यू., एम. आर. ए. एस.

रचित ।

SRI RAMA PRINCE OF RAMA
LIBRARY
Accession No- 3545
Date ...

सैकमिलन एण्ड कम्पनी लिमिटेड
कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, लण्डन

१८१८

**SRI RAMAKRISHNA
ASHRAM**

LIBRARY

**Shivalya, Karan Nagar,
SRINAGAR.**

Class No. _____

Book No. _____

Accession No. _____

53
Hicse

भारतवर्ष का इतिहास

पहिला भाग ।

Abhinav Sapru

डॉ. मार्सेडेन, बी. ए., एफ. आर. जी. एस., एम. आर. ए. एस.

और
Abhinav Sapru

लाला सीताराम, बी. ए., एफ. ए. यू., एम. आर. ए. एस.

अभिनव

सपरसूचित ।
SRI RAMAKRISHNA ASHRAMA
LIBRARY SRINAGAR.
Accession No. 3545
Date ... 2.3.4. ... 1985

311 मिनट सपरसूचित

मैकमिलन एण्ड कम्पनी लिमिटेड
कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, जगदल

H
954
mas B

सूचीपत्र ।

विषय ।

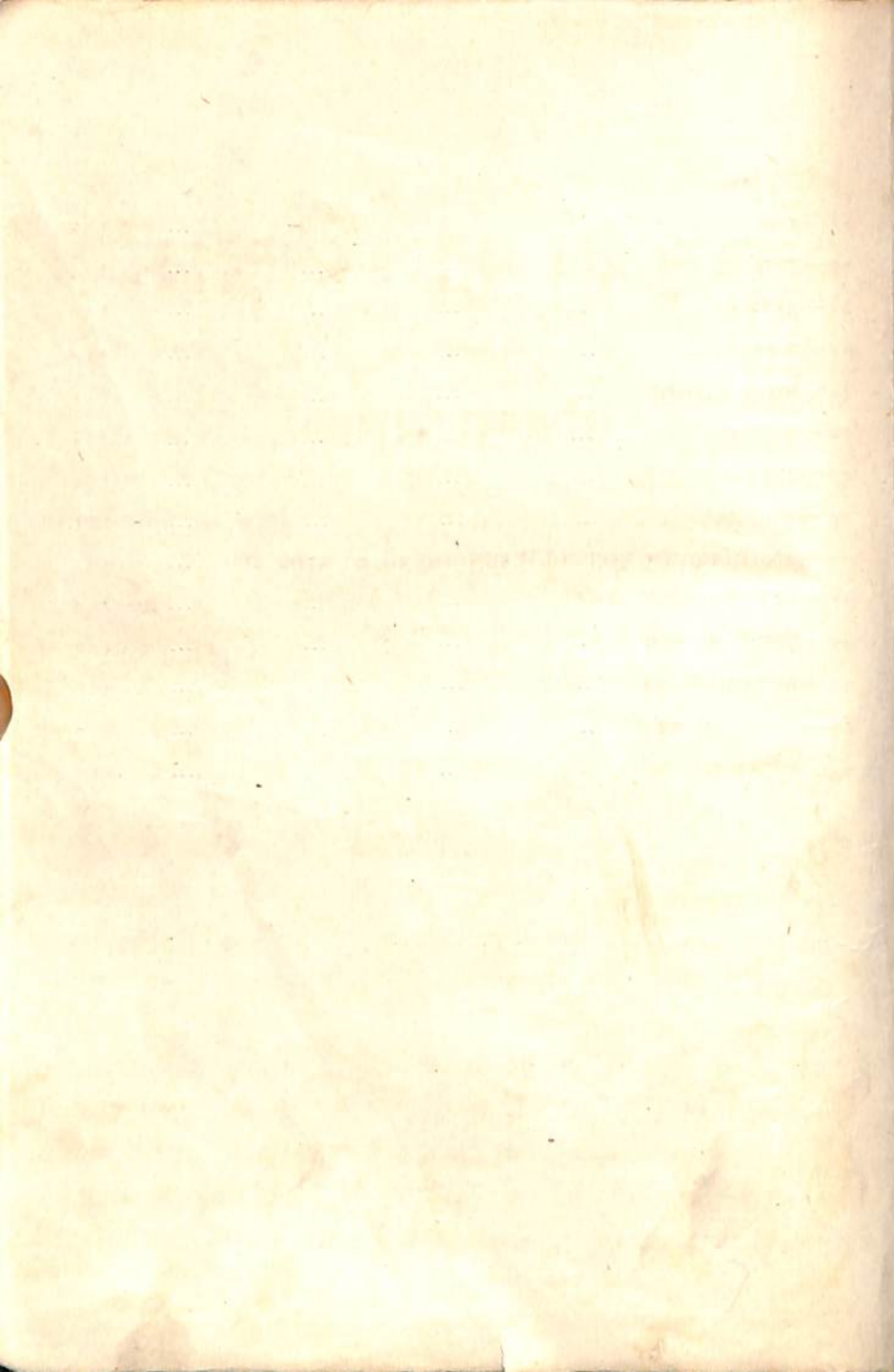
१४१

| | |
|---|----|
| १—भारतवर्ष—उसके पहाड़ और नदियाँ ... | १ |
| २—प्राचीन समय में भारतवर्ष की दशा | |
| (१) पत्थर और धातु का समय ... | ४ |
| (२) भारतवर्ष की पुरानी जातियाँ—कोल ... | ५ |
| (३) भारतवर्ष की पुरानी जातियाँ—द्रविड़ ... | ६ |
| (४) जातियाँ जो बाहर से आकर हिन्दुस्थान में बस गईं ... | ८ |
| (५) तुरानी या मंगोल ... | १० |
| ३—आर्य ... | ११ |
| ४—वेदों का समय ... | १५ |
| ५—रामायण का समय ... | १७ |
| ६—श्रीरामचन्द्र जी की कथा ... | २२ |
| ७—महाभारत का समय ... | २७ |
| ८—कौरवों और पांडवों की लड़ाई ... | ३० |
| ९—हिन्दुओं का पुरातत्व | |
| (१) जाति की उत्पत्ति ... | ३३ |
| (२) प्राचीन हिन्दू राज ... | ३६ |
| (३) प्राचीन हिन्दू समय की विद्या और कला ... | ३८ |
| १०—महात्मा बुद्ध ... | ४४ |
| ११—बुद्धमत ... | ४७ |
| १२—जैन ... | ५० |
| १३—बौद्धमत का समय | |
| (१) यूनानियों का भारतवर्ष में प्रवेश ... | ५३ |
| (२) भारत के यूनानी राजा ... | ५६ |
| (३) भारतीय सिधियन ... | ५७ |

विषय ।

| | | | | |
|---|-----|-----|-----|------|
| १४—बौद्ध समय के बड़े बड़े राजा और उनकी रियासतें | ... | ... | ... | ५४ । |
| (१) मौर्य वंश | ... | ... | ... | ५८ |
| (२) शुंग वंश | ... | ... | ... | ५९ |
| (३) गुप्त वंश | ... | ... | ... | ६२ |
| (४) हर्ष | ... | ... | ... | ६२ |
| (५) हर्ष या शिलादित्य | ... | ... | ... | ६४ |
| १५—बौद्ध समय में भारतवर्ष की अवस्था | ... | ... | ... | ६७ |
| १६—पुराण | ... | ... | ... | ७१ |
| १७—पौराणिक समय की हिन्दू महात्मा | ... | ... | ... | ७२ |
| १८—राजपूत | ... | ... | ... | ७७ |
| १९—मुसलमान | ... | ... | ... | ८१ |
| २०—महमूद गज़नवी | ... | ... | ... | ८४ |
| २१—महमूद ग़ोरी | ... | ... | ... | ८८ |
| २२—पठान बादशाह | ... | ... | ... | ९२ |
| २३—गुलामों का वंश | ... | ... | ... | ९४ |
| २४—खिलजीवंश | ... | ... | ... | १०१ |
| २५—तुगलकवंश | ... | ... | ... | १०८ |
| २६—तैमूरलंग | ... | ... | ... | १११ |
| २७—हिन्दुस्थान की दशा तैमूर के जाने के पक्ष | ... | ... | ... | ११३ |
| (१) सैयदवंश | ... | ... | ... | ११५ |
| (२) लोधीवंश | ... | ... | ... | ११७ |
| २८—दखिन में पठानों की चढ़ाइयाँ | ... | ... | ... | ११९ |
| २९—बहमनी और विजयनगर के राज्य | ... | ... | ... | १२४ |
| ३०—दखिन की मुसलमानी रियासतें | ... | ... | ... | १२७ |
| ३१—मुगलवंश | ... | ... | ... | १२७ |

| विषय । | पृष्ठ । |
|---|---------|
| ३२—बाबर | १२८ |
| ३३—हुमायूँ | १३६ |
| ३४—सूरवंश | १४७ |
| ३५—अकबर | १५२ |
| ३६—अकबर (उत्तरार्द्ध) | १६१ |
| ३७—जहांगीर | १७० |
| ३८—शाहजहाँ | १७६ |
| ३९—औरङ्गजेब | १८१ |
| ४०—भारतवासियों और यूरोपवालों में वाणिज्यव्यवहार का आरम्भ होना | १८६ |
| ४१—संयुक्त ईस्ट इंडिया कम्पनी | १८८ |
| ४२—शिवाजी की बढ़ती .. | १८३ |
| ४३—मुगलराज की घटती ... | १८८ |
| ४४—मराठों की बढ़ती ... | २०० |
| ४५—नादिरशाह | २०६ |



भारतवर्ष का इतिहास ।

पहिला भाग ।

१—भारतवर्ष—उसके पहाड़ और नदियां ।

१—भारतवर्ष एक बहुत बड़ा देश है । यह एशिया के दक्षिण त्रिभुज के आकार समुद्र में घुसा हुआ है । इसकी उत्तर की भुजापर बड़े ऊँचे पहाड़ों की श्रेणी हिमालय के नाम से प्रसिद्ध है और इसके पूर्व और पश्चिम समुद्र लहरें मारता है ।

२—हिमालय दो शब्दों से बना है, हिम बरफ़ और आलय घर, बरफ़ का घर । यह पृथ्वी भर में सब से ऊँचा पहाड़ है और इस देश को एशिया के और देशों से अलग करने को एक बड़ी भीत सा उठा हुआ है । हिमालय की चोटियां सदा बरफ़ से ढकी रहती हैं । ठंडक भी ऊपर ऐसी है कि वहां न जीव जन्तु रह सकते हैं न पेड़ उग सकते हैं ।

३—यह श्रेणी सीधी पूर्व के समुद्र से पश्चिम के समुद्र तक चली जाती तो उत्तर की ओर से इस देश में कोई न आ सकता ; पर पूर्व और पश्चिम दोनों सिरों पर पहाड़ बहुत नीचे हो गये हैं, जिन के बीच बीच में बड़ी बड़ी घाटियां हैं, जिन्हें दरा या दर्रा कहते हैं, और इनमें से होकर लोग आते जाते हैं । यह घाटियां

भी कहीं कहीं हजारों फीट ऊंची हैं और इनमें बहुधा बरफ जमी रहती है।

४—उत्तर-पश्चिम की ओर नीची पहाड़ियों की एक श्रेणी है, उसका नाम सुलेमान है और उसका मुख्य दर्रा खैबर कहलाता है। उत्तर-पूर्व में पटकोई की पहाड़ी है। इस पहाड़ी और हिमालय के पूर्व के सिरे के बीच में होकर महानद ब्रह्मपुत्र ने अपने लिये राह बनाली है। उत्तर-पूर्व में भारत में आने की जितनी राहें हैं सब ब्रह्मपुत्र ही की बनाई हुई हैं।

५—हिमालय के दक्षिण हिन्दुस्थान का बड़ा मैदान है जिस में दो बड़ी नदियां सिन्धु और गङ्गा बहती हैं। सिन्धु पश्चिम के भाग को सींचती और गङ्गा पूर्व के भाग की प्यास बुझाती है। इस लम्बे चौड़े देश के दक्षिण बिम्ब्याचल और सतपुरे के पहाड़ हैं जो भारतवर्ष के बीच में पटके की तरह बंधे पड़े हैं। जैसे हिमालय पहाड़ भारतवर्ष को एशिया से अलग करता है वैसे ही बिम्ब्याचल दक्षिण देश को उस भाग से बांटे हुए है जो मुख्य हिन्दुस्थान के नाम से प्रसिद्ध है।

६—दकन या दखिन (दक्षिण) भारतवर्ष का वह भाग है जो मुख्य हिन्दुस्थान के दक्षिण में है। बिम्ब्याचल पहाड़ दोनों के बीच में है। यह पहाड़ पश्चिम की ओर बराबर समुद्र तक चला गया है परन्तु पूर्व में इसकी उंचाई घटती गई है यहां तक कि इनके नीचे होने से चुरिया नागपुर का पठार बन गया है। जो लोग दखिन में बसे हैं वह प्राचीन काल में इसी राह हिन्दुस्थान से गये थे।

७—दखिन के दश में पहाड़ियां और नदियां भरी पड़ी हैं। पश्चिम में जो पर्वतश्रेणी है वह पश्चिमीय घाट के नाम से प्रसिद्ध है। पूर्व की पर्वतश्रेणी को पूर्वीय घाट कहते हैं। यह श्रेणी

पहिली से बहुत नीची है। दखिन की प्रायः सब नदियां पश्चिमीय घाट से निकलती हैं और पूर्व की ओर बहती हुई पूर्वीय घाटों को चीरती समुद्र में गिरती हैं। दोनों घाटों और समुद्र के बीच में कुछ कुछ तरी है। पूर्वीय घाट की तरी सिकुड़ कर उत्तर में बहुत छोटी रह गई है, परन्तु दक्षिण में इसकी चौड़ाई बहुत है और यहां इसे कारनाटिक का मैदान कहते हैं। उत्तर से दक्षिण जाने का रास्ता इन्हीं तरैटियों में होकर है।

२—प्राचीन समय में भारतवर्ष की दशा ।

(१) पत्थर और धातु का समय ।

१—हज़ारों बरस पहिले भारतवर्ष जङ्गली देश था। सारे देश में बड़े बड़े वन खड़े थे जिनमें जङ्गली जीवजन्तु फिरा करते थे। पेड़ों की घनी क्रांभ में अजगर लोटते थे। न कहीं शहर थे, न गांव, न घर, न सड़कें।

२—कहीं कहीं थोड़े से वनमानुस रीछों की तरह खोहों में या बन्दरों की तरह पेड़ों पर रहा करते थे। इनका डील छोटा, रंग काला, चेहरा मोहरा भोंडा था; नंगे और मैले रहते और वन के फल फूल बेर और कन्दमूल खाते थे; कभी कभी बनेले सुअर और हिरन भी मारकर खा जाते थे। इनके पास चाकू कुरे न थे। काटने का काम चकमक पत्थर के पौने टुकड़ों से लिया करते थे। इससे हम इन लोगों को पत्थर के समय के आदमी कहते हैं। यह लोग लकड़ियों को रगड़ कर आग बनाना भी जानते थे।

३—इन लोगों की यह दशा बहुत दिनों तक रही। पीछे धीरे धीरे इन्होंने ने कुछ उन्नति की और वनों में रहने के लिये छोटी छोटी भोपड़ियां बनाईं; पत्तों या पशुओं की खाल से अपना तन

ढांकने लगे ; फिर तीर कमान और भाले बना लिये जिन से हिरन मार लिया करते थे । इनके खाने पीने की वस्तु भी अच्छी हो गई जिस से बनमानुसों की अपेक्षा यह लोग मोटे ताज़े और बली भी हो गये । यह लोग मिट्टी की हांडियां बनाते और उनमें साग पात पका लेते थे । कुछ दिन पीछे धातों का काम भी जान गये और उनकी कटारियां और भालों की अनी बनाने लगे । इस समयवाले धात के समय के मनुष्य कहे जाते हैं ।

(२) भारतवर्ष की पुरानी जातियां—कोल ।

१—इस देश में पहिले जो लोग बसे वह सब जहां तक हम जानते हैं, दो ही बड़ी जाति के थे एक कोल दूसरे द्रविड़ । कोल वंश उत्तर और मध्य भारत में बसा था और द्रविड़ वंशवाले जो गिनती में बहुत थे देश भर में फैले थे ।

२—किसी किसी विद्वान का यह भी मत है कि कोल धात के समयवालों की सन्तान हैं । जसे धात के समयवाले पत्थर के समयवालों से बढ़कर निकले वसे ही धातवालों की सन्तान में जो बली बुद्धिमान और श्रेष्ठ हुए कोल कहलाये । बहुतों का यह मत है कि कोलों का असली घर कहीं और था । वहां से यह लोग उत्तर-पूर्व की राह से हिन्दुस्थान में आये । हम निश्चय करके कह नहीं सकते कि कौन बिचार ठीक है केवल इतना जानते हैं कि प्राचीन काल में यह लोग उत्तर और मध्य भारत में फैले हुए थे ।

३—इनके पास ढोर न थे ; यह शिकार करके मांस खाते और धरती खोद कर अनाज बोते थे । पहिले इनके पास धरती गोड़ने को लकड़ी के हथियार थे पीछे इन्होंने लोहे के फाल बना लिये । इनके कुल अलग अलग रहते थे । एक कुल एक गांव में रहता

था। यह लोग अपने पितरों की पूजा करते थे। जो जातियाँ पीछे से भारत में आईं उनमें कोई कोई कोल कुल ऐसे मिलजुल गये कि अब उनका अलग करना कठिन है। पर अब भी इनके दस बारह कुल ऐसे हैं जो हिन्दुओं से नहीं मिले और हजारों बरस से अलग अलग चले आते हैं। ऐसे कोल गिनती में ३०००० हैं और पूर्वीय बंगाला, चुटिया नागपुर, उड़ीसा और मध्य देश के पहाड़ी इलाकों में बसे हैं। इनकी बड़ी उपजातियाँ भील और सन्ताल के नाम से प्रसिद्ध हैं।

(३) भारतवर्ष की पुरानी जातियाँ—द्रविड़।

१—द्रविड़ों के पुरखों का ब्योरा हम उतना ही कम जानते हैं जितना कि कोलों के पुरखों का। सम्भव है कि द्रविड़ धात के समयवालों की सन्तान हों और यह भी हो सकता है कि इनके पुरखें भी वही हों जो कोलों के थे। कुछ अचरज नहीं जो बरसों तक भारत के उपजाऊ और हरे भरे भागों में रहकर कुछ लोग अपने पहाड़ी भाइयों की अपेक्षा अधिक बली और सभ्य हो गये हों और द्रविड़ उन्हीं के वंश में हों। कोई कोई विद्वान यह मानते हैं कि द्रविड़ पश्चिम-उत्तर देशों से भारतवर्ष में आये; बहुत दिनों तक उत्तर भारत में बसे रहे और कोलों से लड़ते भिड़ते दक्षिण में पहुँच गये।

२—बहुतों का यह विचार है कि द्रविड़ दक्षिण से आये। दक्षिण कहां से? इस विषय में भी दो मत हो सकते हैं। एक यह कि यह लोग उस महादेश से आये हों जो भारतवर्ष के दक्षिण हिन्दसागर में बहुत दूर तक फैला हुआ था और अब बैठते बैठते समुद्र में डूब गया है; दूसरा यह कि उन टापुओं से आये हों जो एशिया के दक्षिण आस्ट्रेलिया तक फले हैं। पुराने समय में यह

टापू भारतवर्ष से मिले हुए थे ; अब वह सूखा रास्ता समुद्र में डूब गया है ।

३—द्रविड़ ढोरो के बड़े बड़े गल्ले रखते थे । उन्होंने ने घने वन काटे, धरती साफ की और उसमें खेती कियारी का काम शुरू किया । द्रविड़ गांव में रहते थे । गांव में एक मुखिया रहता था जिसको आज्ञा सब मानते थे ; पृथिवी को धरतीमाता कहते और उसे पूजते थे । सांपों और पेड़ों की भी पूजा होती थी ।



द्रविड़ों की नागपूजा ।

द्रविड़ अपने देवताओं से भक्ति और प्रीति नहीं करते थे बरन उनसे डरते थे और उनसे यह विनती करते थे कि तुम हमें दुख न दो । द्रविड़ यह समझते थे कि उनके देवता रक्त पीने से प्रसन्न होते हैं ; इसी से वह सुर्ग, बकरे, भैंसे उनको चढ़ाया करते थे ।

४—हम यह जानते हैं कि प्राचीन समय में भारतवर्ष के उत्तर और दक्षिण में द्रविड़ों के बड़े बड़े नगर थे । उनमें उनकी बहुत सी जाति और कुल बसते थे । बड़े बड़े प्रान्तों में राजा राज करते थे । मुखिया उनको खेतों की पैदावार का एक भाग देता था । इन्हीं

लोगों ने पहिले पहिल गांवों के प्रबन्ध और बन्दोबस्त के नियम बनाये। उनमें बहुत से अब तक जारी हैं। यह लोग बड़े व्यापारी थे। भारतवर्ष में आर्यों के आने से पहिले ही यह लोग जलमार्ग से दूसरे देशों में सागवान को लकड़ी, मलमल, मोर, चन्दन की लकड़ी और चावल भेजते थे; बड़ई, लोहार और जुलाहे का काम अच्छे तरह जानते थे। उस समय के विचार से इनको सभ्य कहना अनुचित नहीं है।

५—द्रविड़ कोलों के पास पड़ोस में रहते पर उनसे बहुत बली, गिनती में अधिक, और सभ्यता में बहुत बढ़े थे। जो धरती अधिक उपजाऊ थी वह द्रविड़ों ने आप ले ली जो बची वह कोलों के लिये छोड़ दी। कहीं कहीं द्रविड़ और कोल दोनों मिलजुलकर एक भी हो गये। जब बाहर से और जातियां एक के पीछे दूसरी लगातार भारतवर्ष में आने लगीं तब पहिले तो द्रविड़ और कोल उनसे लड़े पीछे उन में मिल गये। भारत के उत्तर के देशों से आनेवालों का ऐसा तांता लगा कि कुछ दिन पीछे हिन्दु-स्थान के पश्चिम के भागों में जिन्हें अब पंजाब, कश्मीर और राजपुताना कहते हैं कोल और द्रविड़ों का नाम तक न रह गया। परन्तु उत्तर भारत के मध्य भाग, गङ्गा की तरैटी, और सारे मध्य देश में इनकी संख्या अधिक थी। यह बातें उन प्रान्तों के रहनेवालों के रंग, सिर की बनावट, आंख, नाक और डीलडौल से सिद्ध होती हैं। इन के देखने से यह सिद्ध होता है कि इन प्रान्तों के रहनेवालों की किसी किसी जाति में थोड़ा बहुत द्रविड़ और कोल अंश मिला हुआ है।

६—दक्षिण भारत के रहनेवालों की बनावट में जो द्रविड़ हैं बहुत कम भेद पड़ा है। वह अब तक द्रविड़ कहलाते हैं। हजारों बरस तक गरम देश में रहने से उनका रंग बहुत

काला हो गया है। भारतवर्ष के और देशों में इतने काले लोग नहीं रहते। दक्षिण हिन्दुस्थान में आज ५ करोड़ ७० लाख द्रविड़ बसते हैं और १४ भिन्न भिन्न बोलियां बोलते हैं जिनमें टामिल, तिलगू, मलयाडम् और कनाड़ी प्रधान हैं।

७—हिन्दुस्थान के किसी किसी भाग में कुछ पुरानी द्रविड़ जातियां अभी तक ऐसी हैं जिन्हें हिन्दू कहना कठिन है। यह जान पड़ता है कि और द्रविड़ों की नाईं इन्हें सभ्यता प्राप्त न हुई। ऐसे लोग दक्षिण के पहाड़ी देशों में बसते हैं और गोंड और खांद इनकी प्रसिद्ध जातियां हैं।

(४) जातियां जो बाहर से आकर हिन्दुस्थान में बस गईं।

१—मध्य एशिया हिमालय पहाड़ के उत्तर में है। वहां बड़ी ठंडक पड़ती है क्योंकि बड़े बड़े पहाड़ सदा बरफ से ढके रहते हैं। धरती कड़ी और पथरीली है। पानी कम बरसता है। नदियां भी थोड़ी हैं। जो जातियां इन पहाड़ी देशों में बसी हैं वह अपने ढोरो के लिये घास चारे की खोज में इधर उधर फिरा करती हैं। अनाज भी वहां पैदा नहीं होता, इससे उनका निर्वाह कठिनाई से होता है।

२—हिमालय के दक्षिण एक हजार मील तक ऐसे मैदान हैं जो गरम हैं, जिन में सूर्य का प्रकाश बहुत रहता है, बड़ी बड़ी नदियां बहती हैं, धरती उपजाऊ है, खाने पीने का सुभीता है और सब तरह का अनाज पैदा होता है। बहुत ही प्राचीन समय से उत्तर के ठंडे देशों के रहनेवाले पहाड़ों के दरों को राह दक्षिण के हरे भरे देशों में आते रहे और जब उन्होंने देखा कि उनके उत्तर के देश की अपेक्षा यहां सब तरह से सुख चैन है तो यहीं के मदानों में बस गये।

३—कुछ दिन पीछे जब उत्तर से और लोग आये तो उन्होंने पहिले आये हुआओं को दक्षिण हटा दिया या उनसे मिलजुल कर एक हो गये। ऐसा कई बार हो चुका है।

४—आज दिन उनमें से बहुतेरी जातियों का नाम भी कोई जानता। यहां तक निश्चय हुआ है कि नीचे लिखी जातियां क्रम से समय समय पर बाहर से आकर भारत में बस गईं :—तूरानी या मंगोल, आर्य, ईरानी, यूनानी, शक या सीथियावाले, हूण, अरब के रहनेवाले, अफगान या पठान, तुर्क, मुगल।

५—इस किताब में इन सब जातियों का कुछ कुछ हाल बताया जायगा। जैसे यह कि कौन जाति के लोग कैसे कब और कहां भारत में बसे? तूरानी पूर्व और उत्तर भाग में रह गये ईरानी, यूनानी और अरबी पश्चिमोत्तर भाग से आगे न बढ़े। मुगल, तुर्क और पठान बहुधा उत्तर भारत के सिन्धु और गङ्गा की तरेटियों में बसे। कुछ जातियां जैसे शक और हूण उत्तर-पूर्व और मध्य भारत के पश्चिमीय भाग में रहने लगीं। आर्य लोग इन सब से पहिले आये थे सब से आगे पहुंचे और दक्षिण देश को छोड़ जहां उनमें से बहुत थोड़े लोग गये थे सारे देश में फैल गये।

(५) तूरानी या मङ्गोल ।

१—मङ्गोलिया मध्य एशिया का वह देश है जिसे चीनी-तातार कहते हैं। मङ्गोल यहीं के रहनेवाले थे और यहीं से यह लोग चीन और आस पास के देशों में फैले। मुसलमान इतिहास रचने वाले इस देश को तूरान कहते हैं, और इसके निवासियों को तूरानी या तातारी।

२—इनका डील छोटा, सिर चौड़ा, नाक चिपटी, आंखें छोटी और तिरछी, रंग पीला लिये भूरा था। आर्यों के भारत में आने से

बहुत पहिले यह लोग उतरे थे और पूर्व-उत्तर के उन प्रान्तों में भर गये जो अब आसाम और बङ्गाल के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह लोग उन पहाड़ी रास्तों से आये थे जिनमें से होकर ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियां भारत में प्रवेश करती हैं। यह लोग कोलों और द्रविड़ों से अधिक बली और लड़ाके थे। मङ्गोल पहिले कोलों और द्रविड़ों से लड़े पर कुछ दिन पीछे धीरे धीरे उन्हीं में मिलजुल गये। बहुत दिनों से भारतवर्ष में रहने और दूसरी जातियों से मिल जाने से इनके रूप रंग में बड़ा भेद पड़ गया है फिर भी इन प्रान्तों के रहनेवालों के रूप रंग डील डील के देखने से स्पष्ट जान पड़ता है कि इनके पुरखा कौन थे।

३—कोल और द्रविड़ तो इस देश में पहिले से बसे थे और तूराणी उस समय में आये जब प्रामाणिक इतिहास की नेव भी न पड़ी थी, और न जिसका कोई पता लगता है। इससे उचित यह जान पड़ता है कि आर्यों के आने से पहिले के समय को ऐतिहासिक समय से पहिले का काल कहें। इस समय का ठीक अनुमान नहीं हो सकता। गोल गोल इतना कह सकते हैं कि ईसा के जन्म से २००० बरस पहिले तक इसकी सीमा है।

३—आर्य ।

१—सब से प्राचीन ग्रन्थ जिसमें हिन्दुस्थान के पुराने रहनेवालों का व्यौरा मिलता है वेद है। इसके पढ़ने से जाना जाता है कि अब से अनुमान ४००० बरस पहिले भारतवर्ष के उत्तर और पश्चिम के भाग में जिसे अब पंजाब कहते हैं कुछ ऐसी जातियां बसी थीं जिनका रंग गोरा और डील लम्बा था। यह लोग अपने को आर्य कहते थे।

२—इनके विषय में हम इतना ही जानते हैं कि इनकी जन्म-भूमि तुर्किस्तान थी और यहां से चलते चलते अफ़ग़ानिस्तान होते हुए हिमालय पहाड़ के पश्चिमोत्तर के दरों की राह इस देश में आ गये। आर्य लोगों का रंग गोरा, डील बड़ा, माथा उंचा और रूप सुन्दर था। यह उन पीले नाकचिपटों से भिन्न थे जो पूर्व की ओर मङ्गोलिया में रहते थे।

३—इन लोगों ने गांव और छोटे छोटे नगर बसा रखे थे ; भेड़, बकरो, गाय, बैल पालते थे ; धरती जोतते बोते थे ; जौ, गेहूं की खेती करते थे और कपड़ा बिनना जानते थे। पर लोहे के हथियार बनाना इन्हें नहीं आता था। ताम्बा और रांग आग पर गलाते थे और उनको मिलाकर कांसा बना लेते थे। इसी के चाकू, छूरी और बरकियां बनती थीं।

४—आस पास के बहुत से कुल मिलकर एक जाति के नाम से पसिद्ध थे जिसका एक सरदार रहता था और वही काम पड़ने पर सेनापति बन जाता था। यह जातियां बढ़ते बढ़ते इतनी बढ़ गईं कि जन्मभूमि में समा न सकीं। इस लिये कुछ जातियां दक्षिण-पश्चिम चली गईं और पारस में जा बसीं और उन्हीं के कारण इस देश का नाम ईरान पड़ गया जो आर्यान् का दूसरा रूप है। कुछ आर्य भारतवर्ष में चले आये और बहुत दिनों तक पंजाब में बसे रहे।

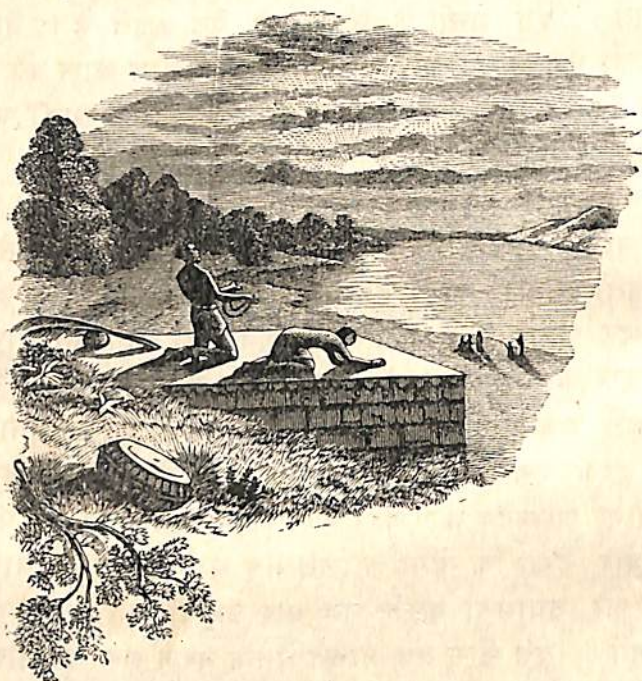
५—जो आर्य हिन्दुस्थान में आकर बसे उनको अङ्गरेज लोग इन्डो आर्यन् कहते हैं जिसका अर्थ हिन्दुस्थानी आर्य है। यह लोग लिखना नहीं जानते थे और हमारे लिये ऐसा कोई लेख नहीं छोड़ गये जिससे उनका पूरा हाल जाना जाय। पर यह लोग देवताओं की स्तुति मन्त्र पढ़कर करते थे और अपनी सन्तान को शुद्धता और स्वच्छता के साथ उन मन्त्रों का पढ़ना सिखाते थे।

मन्त्र ऐसे कण्ठ हो जाते थे कि उनका भूलना कठिन था। यही कारण है जो सैकड़ों बरस तक मन्त्र सुन ही सुनकर कण्ठ किये गये। कुछ दिन पीछे लिखने की भी रीति निकली और मन्त्र लिख डाले गये। इस मन्त्रों के संग्रह को वेद कहते हैं। वेद और विद्या की ही बात है। वेदों का समय प्राचीन काल की विद्या-कलाओं का समय है। इन से हम को हिन्दुस्थानी आर्यों के बहुत कुछ पुराने इतिहास की छाया मिलती है।

६—यह लोग बहुत दिनों तक पंजाब की नदियों के किनारे सीधी सादी चाल से रहते थे। इन्होंने वन काटकर धरती साफ की; खेती कियारी का डोल डाला; अनाज विशेष करके जौ, गेहूं की सुन्दर फसलें पैदा कीं; दिव्य देवताओं को पूजते और उनसे सब प्रकार की सहायता की आशा रखते थे। हिन्दुस्थान में आने से पहिले जब वह ठंडे देशों में रहते थे इनकी भोजन बनाने और शरीर गरम रखने के लिये आग परम आवश्यक थी। इस लिये यह लोग अग्निदेव की बड़ी पूजा करते थे पर जब यह पंजाब में आये और देखा कि खेती के लिये मेंह भी चाहिये तो आकाश के इन्द्रदेव की उपासना करने लगे और उनकी स्तुति करने को मन्त्र पढ़ने लगे। यह लोग यह जानते थे कि गरज इन्द्र की बोली और बिजुली उसकी बरक़ी है। यह बरक़ी जब काले मेघों की पीठ में चुभती है तो उनसे पानी निकलकर धरती पर बरसता है।

७—यह लोग यह भी मानते थे कि मरने के पीछे जीव वायु और आकाश के ऊपर एक ज्योतिर्मय लोक में पहुँचता है जहाँ कोई दुःख नहीं है, सदा प्रकाश रहता है परम आनन्द और शान्ति छाई रहती है, मित्रों और सगों से भेंट होती रहती है। इस लोक के शासक को यह लोग यम कहते थे जिसके सामने मरने पर सब को जाना पड़ता है और वही उनके कर्मों पर बिचार करता

है। इनके सिवाय और भी देवता थे जैसे वरुण (नीला आकाश), सवित्र या सूर्य, वायु (हवा), रुद्र (गरज), और उषस् (सवेरे का लाल और सुनहरा आकाश)।



आर्यों की सूर्य पूजा।

८—पुराने हिन्दू आर्य आजकल के हिन्दुओं से कई बातों में भिन्न थे। इनमें जातिभेद न था, न इनके शिवालय और ठाकुरद्वारे थे, न ठाकुर और मूर्तियाँ। लड़कियाँ स्वयंवर करती थीं; विधवाओं का विवाह होता था। आये अन्न और मांस खाते थे और सोमरस पीते थे जिससे आँखें चढ़ जाती थीं।

४—वेदों का ससय ।

(ईसा के पहिले २००० से १५०० तक ।)

१—जब आर्य पंजाब में आये तो उनको यह देश कोल द्रविड़ और दूसरी जातियों से भरा मिला, जिनका अब कोई नाम तक नहीं जानता । आर्यों को उनसे बड़ी लड़ाइयां लड़नी पड़ीं । इनका हाल वेदों में आया है । पर आर्य कम थे, पुराने रहनेवाले गिनती में बहुत थे । यह जान पड़ता है कि कुछ दिन पीछे आर्यों ने उनसे मेल कर लिया और उनके साथ नातेदारियां जोड़ने लगे । उस समय में जाति पांति का बिचार न था ।

२—आर्य लोग धीरे धीरे पंजाब में फैल गये ; बन काटे, खेत बनाये, जौ गेहूं की खेती की ; जो लोग देश में पहिले से बसे थे उनसे लड़े ; कभी आपस में भी लड़ बैठते थे । आर्य पंजाब में सब एक साथ नहीं आये, समय समय पर भिन्न भिन्न कुल आकर बसते गये । जो पहिले आये उन्होंने ने उपजाऊ धरती अपने बस में करके अच्छे अच्छे घर बनाये । पीछे आनेवालों ने चाहा कि उनसे घर और धरती छीन लें । इसपर बड़ी लड़ाइयां हुईं जिनका हाल पोथियों में लिखा है ।

३—हम यह नहीं कह सकते कि आर्यों का सब से पहिला कुल हिन्दुस्थान में कब आया और कितने दिनों में उसने सिन्धु की तरैटी पर अपना अधिकार जमा लिया । विद्वानों का यह मत है कि इस बात को लगभग ४००० बरस हुए होंगे अर्थात् ईसा से २००० बरस पहिले आर्य पहिले पहिल खेबर की घाटी होकर हिन्दुस्थान में घुसे । विद्वान लोग यह भी मानते हैं कि आर्यों को यहां के असली रहनेवालों से लड़ते भिड़ते सरस्वती नदी तक

पहुँचने में, जो सिन्धु की सब से पूर्व की सहायक नदी थी, लगभग ५०० बरस लगे होंगे।

४—जिस नदी को अब हम घाघरा कहते हैं उसका नाम उस समय में टृषवती था और अब जिसका नाम सरसुती है वह सरस्वती कहलाती थी। इन दोनों नदियों के बीच का देश बड़ा उपजाऊ था। इसकी लम्बाई ६० मील और चौड़ाई २० मील थी। आर्य लोग इस टुकड़े को परम पवित्र मानते थे और इसे ब्रह्मावर्त (देवताओं का देश) कहा करते थे। आर्य कहते हैं कि इस देश के आचार व्यवहार सब उज्ज्वल और उत्तम थे।

५—आर्यों ने ५०० बरस में पंजाब पर अपना अधिकार जमा लिया। यह समय वेदों का समय कहा जा सकता है। वेद चार हैं। सब से बड़ा और सब से पुराना ऋग् वेद है। और तीन पौछे के बने हैं। इनका व्यौरा आगे लिखा जायगा। ऋग् वेद स्तुतियों का संग्रह है। यह ग्रन्थ संसार की बहुत पुरानी पुस्तकों में से है। इसमें अग्नि, इन्द्र, और अनेक आर्य-देवताओं की स्तुति के १०२८ मन्त्र हैं। जब कोई बूढ़ा आर्य नित्य ईश्वर की स्तुति करता था तो वह सदा एकही वाक्य एकही ढंग से कहता था। उसकी सन्तान को सुनते सुनते वह वाक्य कंठाग्र हो जाते थे और बूढ़ों को देखते देखते लड़के भी वैसे ही मन्त्र पढ़ना सीख लेते थे। यही क्रम एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक और एक शताब्दी से दूसरी शताब्दी तक जारी रहा और वेद का ज्ञान, सुन सुन कर और रट रट कर एक के पीछे दूसरे को होता गया।

६—आर्य ऋषियों ने हिन्दुस्थान आने से पहिले जो मन्त्र रचे थे उनमें से बहुतों का पता भी नहीं चलता। जो बचे हैं वह सब ऋग्वेद में मिलते हैं। यह अनुमान किया जाता है कि ऋग्वेद में वह मन्त्र जो सब से पौछे जोड़े गए ईसा से १५०० बरस पहिले बने

थे जब आय लोग सिन्धु की तर्रेटी के सब से पूर्व के भाग ब्रह्मावट में रहते थे। इन मन्त्रों में सिन्धु का नाम बहुत आया है; गङ्गा का केवल दो बार सो भी सब से पीछे बने मन्त्रों में है।

७—भारतवर्ष के पुराने आर्यों का हाल जो कुछ हमने जाना है सब ऋग्वेद से। वेद की भाषा वैदिक है जो पिछली और प्रचलित संस्कृत का पहिला रूप है। बहुत दिनों तक थोड़े से पण्डितों को छोड़ वेद को कोई समझ नहीं सकता था। आज कल अङ्गरेज़ी और कई भाषाओं में इसका अनुवाद हो गया है। वेद मन्त्र बहुत पहिले के बने हैं परन्तु बरसों तक उनका किसी ने ऐसा संग्रह न किया जैसे अब छापे जाते हैं। बनने से ५०० बरस पीछे तक उनको गिनती भी ठीक न हुई थी।

५—रामायण का समय।

१—जब आर्यों को गंगा यमुना की तर्रेटी में रहते बहुत दिन बीत गये तो उनमें से कई कुल अपने सरदारों के साथ पूर्व की ओर उस देश में बढ़े जो गंगा और हिमालय के बीच में है और एक एक करके गोमती, घाघरा, गंडक और कोसी नदियों को जो पहाड़ से उतर कर गंगा में मिल जाते हैं, पार कर गये; गंगा के दक्षिण चम्बल और बेतवा की तर्रेटियों को लांघते विन्ध्याचल पहाड़ तवा पहुँच गये और जो देश विन्ध्याचल और हिमालय के बीच में है उसका नाम मध्यदेश रख लिया।

२—भरत और पांचालवंश के सिवाय जो और बड़ी बड़ी जातियाँ उत्तर हिन्दुस्थान में बसी थीं उनमें से किसी किसी जाति का नाम हम अब भी जानते हैं। जिस प्रान्त को अब अवध कहते हैं वहाँ

गंगा और गंडकी नदी के बीच कोशल वंश के क्षत्रिय रहते थे और अयोध्या उनकी राजधानी थी ।

जो देश अब बिहार के उत्तर में तिरहुत नाम से प्रसिद्ध है वहां गंडकी के पूर्व विदेहीं का राज था और उनकी राजधानी मिथिला थी ।



काशी ।

जहां गोमती गंगा में आकर मिलती है उसके पास गंगा के तीर पर काशी का राज था और काशी नगरी जिसको अब बनारस कहते हैं और जो हिन्दुओं का बहुत बड़ा तीर्थ है उसकी राजधानी थी ।

३—यह अनुमान किया जाता है कि इस प्रान्त पर अपना अधिकार जमाते २०० बरस लगे होंगे । इस काल को रामायण का

समय कह सकते हैं क्योंकि हिन्दुओं के एक बहुत बड़े ग्रन्थ रामायण में जो घटनायें लिखी हैं वह इसी समय की हैं।

४—जिस रूप में रामायण की पोथी अब देखी जाती है वह बहुत पीछे का रचा है जिसे ब्राह्मणों का समय कह सकते हैं। आजकल दो ग्रन्थ रामायण के नाम से प्रसिद्ध हैं एक वाल्मीकि का बनाया दूसरा तुलसीदास का रचा। इनमें वाल्मीकि का ग्रन्थ बहुत पुराना समझा जाता है। परन्तु जिस समय का हाल इसमें लिखा है उस से बहुत दिन पीछे यह ग्रन्थ रचा गया। जिस समय वाल्मीकि ने यह काव्य रचा था, हिन्दुओं का धर्म उनको बोल चाल, उनके रीतरसम में बहुत कुछ अदल बदल हो गया था इस से यह कहना कठिन है जिन आचार व्यवहार का वर्णन इस ग्रन्थ में है वह किस समय के हैं। इस की एक कहानी तो पुरानी है। समय समय पर अवसर पाकर और कहानियां जोड़ी गई हैं और इन सब का ऐसे ढंग से वर्णन कर दिया गया है कि सब एक ही समय की जान पड़ें। जिस कथा को हम प्रधान मानते हैं वह निस्सन्देह उन आर्य वंशों और राजाओं से सम्बन्ध रखती हैं जो महाभारत को लड़ाई के पहिले पूर्व और दक्षिण के प्रान्तों को जाकर बसे थे।

५—ऋग्वेद के मन्त्र इसी समय के लिखे भासते हैं और इस समय में उनका वह क्रम ठीक किया गया था जिस क्रम में वह अब देखे जाते हैं। जसा हम ऊपर लिख चुके हैं कि ऋग्वेद सब से पुराना ग्रन्थ है। इसमें १०२८ मन्त्र हैं और इनमें बहुत से ऐसे हैं जिनको ईसा के १५०० बरस पहिले आर्य ऋषि बना चुके थे। इस प्राचीन काल में पुरोहितों और पुजारियों की कोई अलग जाति न थी। देवताओं को पशु मारकर बलि नहीं दी जाती थी। पूजा में अन्न और सोमरस चढ़ाया जाता था।

६—ज्यों ज्यों आर्य लोग उत्तर हिन्दुस्थान में फैले और देश के

असली रहनेवालों से मेल जोल हो गया इन का धर्म भी धीरे धीरे बदल गया। यज्ञ और बलिदान होने लगे और उनके विधि पूर्वक करने के लिये पुजारियों के समाज बन गये। इसी समय दो नये वेद बने एक यजुर् अर्थात् यज्ञों का वेद—इसमें ऋग्वेद की वह ऋचायें हैं जो यज्ञ करानेवाले ब्राह्मण यज्ञ कराने के समय देव आराधन के लिये पढ़ा करते थे। यज्ञ की कुछ विधियां भी इस में लिखी हैं। इसे हम आर्यों की पूजा की पोथी कह सकते हैं। दूसरा सामवेद है ; इस में ऋग्वेद के वह मन्त्र हैं जो यज्ञ के समय एक प्रकार के यज्ञ करानेवाले पुरोहित गाया करते थे। यह आर्यों के देवस्तोत्रों का ग्रन्थ है। इन से बहुत दिन पौछे चौथा वेद बना। इस में ऐसे मन्त्र हैं जिनके उच्चारण से सब प्रकार के दुखों का निवारण होता है। इस का नाम अथर्ववेद है।

ब्राह्मण—सैकड़ों बरस पौछे जब आर्य गंगा यमुना के बीच में फला गये और यज्ञ करनेवाले ब्राह्मणों को गिनती भी बढ़ी और बल भी बढ़ा तो इन्हीं ने यज्ञों के विधान को बढ़ाते बढ़ाते इतना कर दिया कि वह वेदों से भी बढ़ गये। अब उन्होंने ने चारों वेदों के साथ एक एक नया खंड मिलाया। यह खंड ब्राह्मण कहलाते हैं। इन में यज्ञ करानेवाले पुरोहिता के, जिनको ऋत्विक् और अध्वर्यु कहते हैं, कर्म विस्तार समेत लिखे हैं। ऋग्वेद ब्राह्मण में मन्त्र पढ़नेवाले के लिये मन्त्रों के उच्चारण की विधि लिखी है। सामवेद ब्राह्मण में मन्त्रों के गाने की विधि है, यजुर्वेद ब्राह्मण में ऋत्विजों के कर्म लिखे हैं जो अपने हाथ से यज्ञ और हवन करते थे। अथर्ववेद ब्राह्मण में वेद के मन्त्रों की व्याख्या की गई है।

आरण्यक—इनमें से कोई कोई ब्राह्मण आरण्यक कहलाते हैं। इन में उन ऋषियों मुनियों के धर्म कर्म का वर्णन है जो घर बार त्याग कर बस्ती से दूर बनों में आश्रम बना लेते थे।

आरण्यक भी वेदों के नाम से पुकारे जाते हैं, जैसे ऋग्वेदारण्यक यजुर्वेदारण्यक। इतना न भूलना चाहिये कि सामवेद और अथर्ववेद के साथ कोई आरण्यक नहीं है।

उपनिषद्—यह जान पड़ता है कि कुछ दिन बीते प्राचीन आर्य इन विधानों और नियमों के संग्रहों से उकता गये और उनके मन में ऐसे प्रश्न उठे “यह संसार जो हम देखते हैं क्या है ? कैसे बना ? हम कहां से आये ? कहां जायेंगे ?” ऐसे प्रश्नों के उत्तर जो आर्य ऋषियों को सूक्तों उपनिषदों में लिखे हैं। उपनिषद् ब्राह्मणों के पीछे या ईसा के जन्म से पहिले बन चुके थे। इन के रचनेवालों को यह सिद्ध हो चुका था कि वेद के देवताओं चन्द्र, सूर्य, वायु और आकाश का बनानेवाला एक और ही है जो इनसे बड़ा और शुद्ध है। इस को ब्रह्म कहते थे। यह मानते थे कि सारा जगत ब्रह्म ही से निकला और ब्रह्म में समा जायगा। वह कहते थे कि जैसे समुद्र का जल बादल बनकर आकाश में उड़ता है, धरती पर बरसता है, फिर नदियों में बहता हुआ समुद्र में मिलकर उसमें लीन हो जाता है ऐसेही सारा विश्व उसी एक परमब्रह्म परमात्मा से निकला और उसी में लीन हो जायगा।

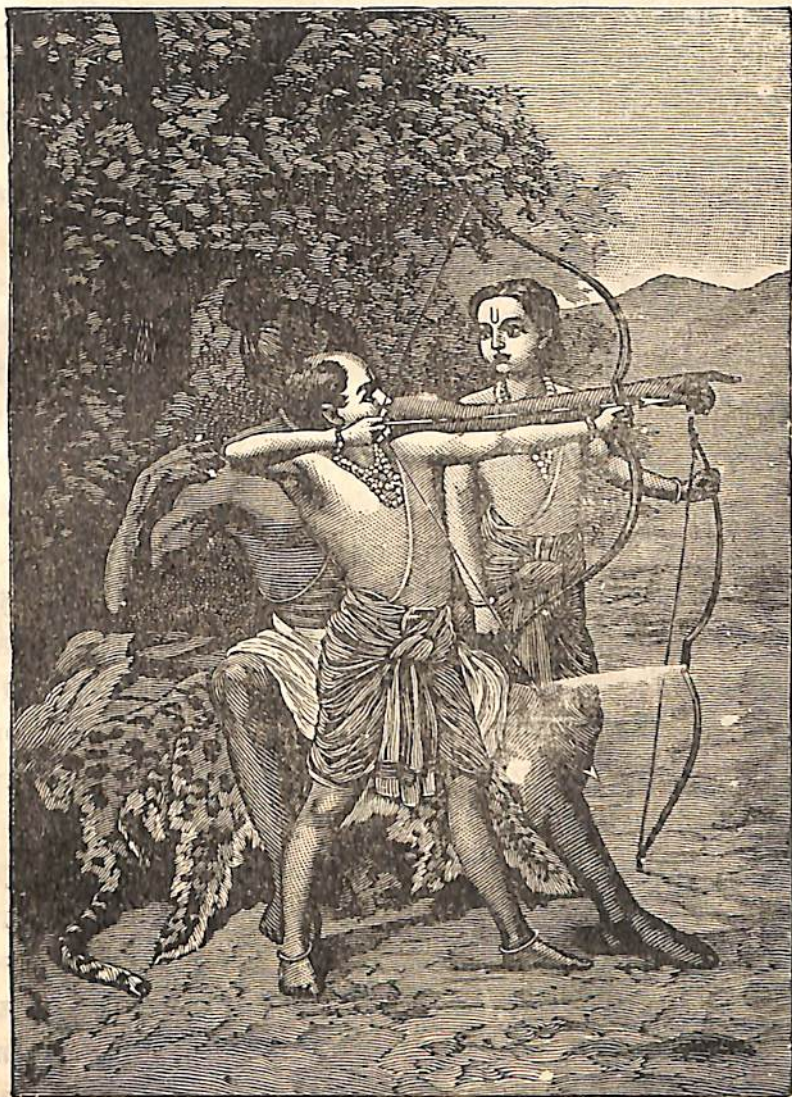
हिन्दुओं के पुराने ग्रन्थ दो श्रेणियों में बंटे हैं। एक श्रुति जो सब से पुरानी है दूसरी स्मृति जिन में पीछे के ग्रन्थ हैं। श्रुति का अर्थ ईश्वर का वाक्य। वेद ब्राह्मण आरण्यक और उपनिषद् श्रुति हैं। स्मृति का अर्थ वह आचार व्यवहार के नियम जो स्मरण किये जाते थे।

६—श्रीरामचन्द्र जी की कथा ।

१—रामायण में श्रीरामचन्द्र जी का चरित लिखा है । अयोध्या के राजा दशरथ की तीन रानियां थीं । जेठी रानी का नाम कौशल्या और सब से छोटी का कैकेयी था । कौशल्या के लड़के श्रीरामचन्द्र थे और वह ही राज्य के उत्तराधिकारी थे । पर राजा दशरथ कैकेयी को जो सब से छोटी और परम सुन्दरी थी, बहुत मानते थे और मानो उन्हीं के हाथ बिकेसे थे । कैकेयी की यह इच्छा थी कि उनका बेटा भरत राज पावे । मझली रानी सुमित्रा के भी दो लड़के लक्ष्मण और शत्रुघ्न थे ।

२—राजा के बड़े बेटे राम सारे देश में वीरता और पराक्रम में अद्वितीय थे । वह सुशील और सत्यप्रिय थे । अवधवासी उनको देख देख कर जीते थे । राजा भी उन पर और बेटों से अधिक स्नेह रखते थे और उन्हीं को राजतिलक देना भी चाहते थे ।

३—अवध से दूर पूर्व की ओर गंडक नदी के पार मिथिला का राज था । वहां के राजा महाराज जनक को सीता नाम की एक बेटी बड़ी रूपवती थी । बड़े बड़े राजकुमारों ने उसके साथ बिवाह के सन्देश भेजे थे । पिताने बेटों को अधिकार दे दिया था कि वह अपना बर आप चुन ले, इसलिये स्वयम्बर रचने का बिचार किया गया और इस बात की चरचा चारों ओर फैल गई । राजा जनक को अपने पुरखों से एक बहुत बड़ा धनुष मिला था जो कि बहुत कड़ा था । सीता ने कहा कि जो कोई इस धनुष को तोड़ देगा वहीं मेरा पति होगा । भुंड के भुंड राजा मिथिला में आ उपस्थित हुए । एक एक करके सबने जोर लगाया परन्तु कोई उस धनुष को न तोड़ सका । धनुष इतना भारी था कि बहुतेरों से तो हिला भी नहीं । परन्तु जब राम की बारी आई तो उन्हीं ने सहज ही उसे



राम धनुर्विद्या शिक्षण ।

तोड़ डाला। सीता ने उसी समय फूलों की माला उनके गले में डाल दी, जिसका आशय यह था कि राम ही मेरे बर हैं। फिर बड़ी धूम धाम के साथ उन का विवाह हो गया और अयोध्या में आकर महाराज दशरथ के महलों में सुख से दिन बिताने लगे।

४—कुछ दिन पीछे महाराज दशरथ को बुढ़ापे ने आ दबाया मानों यह दिखाई देने लगा कि अब हम कुछही दिनों के पाहुने हैं और वह समय आ गया कि कोई युवराज नियत किया जाय जो राज के काम काज में बड़े राजा की सहायता करे और उसके पीछे उसको जगह राज करे। सब यही चाहते थे कि राम युवराज हों। प्रधान मन्त्री सभासद और नगर के छोटे बड़े सब राम की बड़ाई करते थे। महाराज दशरथ ने इस सर्वाप्रिय राजकुमार को बुलाया और कहा कि कल तुम युवराज बनाये जाओगे। नगर में रागरंग होने लगा, क्योंकि नगरवासी राम को जी जान से चाहते थे।

५—कैकेयी को जब समाचार मिला तो वह आग बगूला हो गई। अपने कपड़े फाड़ डाले, गहने उतार कर फेंक दिये, धरती पर लोट गई और जब राजा आये तो उनसे मुंह से भी न बोलों। बूढ़ा राजा कैकेयी के हाथ तो बिका हुआ ही था, उसने कैकेयी के कहने से यह मान लिया कि भरत युवराज हों और राम चौदह वरस का बनवास भोगें।

६—राजा दशरथ ने प्रतिज्ञा तो कर ली पर पीछे बहुत पछताये क्योंकि अपने प्यारे बेटे को देश बाहर करने का विचार उन्हें काटे खाता था। अवध के लोग जो वीर और बुद्धिमान रामचन्द्र को जी से चाहते थे बहुत बिगड़े। कौशल्या ने राम को समझाया कि तुम बन को न जाओ पर राम ने एक न सुनी और कहा कि पहिले तो पिता कैकेयी को वचन दे चुके हैं दूसरे यह कि बेटे का धर्म है कि पिता की आज्ञा पालन करे। राम चाहते थे कि अकेले

ही बन को चले जायं पर सीता ने कहा कि मैं यहां तुम्हारे बिना रहना नहीं चाहती, स्त्री का धर्म यह है कि जहां पति रहे वहीं उसकी सेवा में रहे चाहे घर में हो चाहे बनवास में हो। लक्ष्मण भी भाई का साथ छोड़ना नहीं चाहते थे और उनके साथ बन को चले।

७—राम सीता और लक्ष्मण यमुना से दक्षिण के बनों में चले गये और चलते चलते विन्ध्याचल के दक्षिण मध्य भारत के प्रसिद्ध दंडक वन में जा पहुंचे। इनके घर छोड़ने के थोड़े ही दिन पोछे राजा दशरथ परलोक सिधारे। कैकेयी ने विचारा कि मेरा बेटा भरत राज करेगा। परन्तु भरत सत्यव्रत और सत्यप्रिय थे और राम से बड़ा सनेह रखते थे; पिता के देहान्त के पीछे राम की खोज में चले और उनसे बड़ी बिनती की कि आप घर लौट चले और अवध में राज करें परन्तु राम ने उनकी बात न मानी और कहने लगे कि पिताने मुझे चौदह बरस के बनवास की आज्ञा दी है और मैंने उनकी आज्ञा मान ली है। राजकुमार अपने वचन से नहीं फिरा करते हैं। जब तक चौदह बरस न बीत जायं तब तक मैं अवध में पर नहीं रख सकता। भरत को उलटे पैर लौट आना पड़ा। उन्होंने राज पाट को अपना नहीं जाना और रामचन्द्र जी की खड़ाऊं गद्दी पर रख दी। इस का अभिप्राय यह था कि राज के असली मालिक रामचन्द्र जी हैं और उनके लौट आने तक उनकी जगह राज का काम काज और प्रजा का पालन करता रहूंगा।

८—कई बरस तक रामचन्द्र जी बनों में फिरते रहे। राम और लक्ष्मण प्रति दिन आखेट को जाया करते थे। एक दिन उनके पीछे एक बड़ा बली राजा रावण जो दक्षिणीय भारत के कुछ भाग पर राज करता था सीता जी की सुन्दरता का बखान सुनकर अकेले में



श्रीराम, सीता और लक्ष्मण गङ्गा उत्तर रहे हैं

कुटी में आया और उन को उठा कर लंका में जिसको अब सीलोन कहते हैं, अपने घर ले गया। वहां फुसला कर और धमका कर रावण ने चाहा कि सीता को अपनी रानी बनावे पर उस पतिव्रताने उसकी ओर आंख उठा कर भी न देखा। रावण ने उन को एक घने बाग में अलग बन्द कर दिया और सिपाहियों का पहरा बैठा दिया।

८—राम लक्ष्मण ने पश्चिमीय घाट के प्रतापी राजा सुग्रीव से मित्रता करली। सुग्रीव ने बहुत बड़ी सेना देकर अपने सेनापति हनुमान को राम की सहायता के लिये भेजा। हनुमान की सहायता से राम लक्ष्मण लङ्का पहुँचे, रावण को मारा और सीता जी को कुड़ा कर कुशल पूर्वक ले आये।

१०—इसी समय बनवास की अवधि भी पूरी हुई। राम लक्ष्मण सीता जी समेत अवधि में आये। बहुत दिनों तक रामचन्द्र जी ने राज किया। प्राचीन समय के राजाओं में यह राजा बड़े प्रसिद्ध हुए हैं। इन्हें हिन्दू परमेश्वर का अवतार मानकर पूजते हैं। सीता जी से इन के दो पुत्र थे कुश और लव। राजपूतों के दो बड़े परिवार जिनका वर्णन आगे किया जायगा अपने को लव और कुश की सन्तान बताते हैं।

७—महाभारत का समय ।

१—जब आर्यों को पंजाब में अपना अधिकार जमाये और ब्रह्मावर्त ऐसे रमणीय स्थान में रहते बहुत दिन बीत गये तब उन्होंने जाना कि उन से पूर्व का देश जिस में गंगा और यमुना बहती हैं इससे भी बढ़कर रमणीय और उपजाऊ है। अब वह गिनती में इतने बढ़ गये थे कि सिन्धु की घाटी में उनका निर्बाह कठिन

था इस के सिवाय नये आर्यों के झुंड के झुंड अफगानिस्तान और कश्मीर से चले आते थे जो पहिले आये हुए आर्यों को आगे ठेलते जाते थे। आर्य लोग पंजाब के दक्षिण तो जा नहीं सकते थे क्योंकि उस दिशा में चार सौ मील तक रेत ही रेत था जो आंधियों में एक स्थान से दूसरे स्थान तक उड़ता फिरता था। इस लिये उनमें से बहुत से यमुना नदी पार करके गंगा की ओर चल पड़े।

२—परन्तु यह देश भी वस्तियों से भरा था। यहां भी द्रविड़ कोल जाति के लोग रहते थे और कुछ मिली जुली जातियां भी थीं जो द्रविड़ और कोल के मिलने से उत्पन्न हुई थीं। यह लोग गिनती में आर्यों से कम से कम बीस गुने अधिक रहे होंगे परन्तु बहुत दिन तक भारतवर्ष के गरम मैदानों में रहते रहते न तो आर्य जाति के मनुष्यों की भांति लम्बे चौड़े ही थे, न वैसे बलवान ही थे और न उन के समान बुद्धिमान और चतुर थे। बहुत दिनों तक आर्य इन को नीच समझते रहे और इन का निरादर करते थे। इसलिये उनको दास कहा गया है। दूसरे पुराने निवासियों को आर्य अपने ग्रन्थों में असुर दानव और दैत्य कहकर सम्बोधन करते हैं। इनके विषय में कहा गया है कि इनका रंग काला और इनका रूप भोड़ा था। यह कच्चा मांस खाते थे। इनकी नाक चिपटी थी और इनका कोई धर्म न था। इस बात का ध्यान रहै कि यह उनका खान उनके बैरियों का किया हुआ है। इतना निश्चय होचुका है कि इनमें से बहुतेरे सभ्य थे और उनके बड़ बड़ नगर बसे थे; और और देशों से वणिजव्यापार करते थे। उस समय के लिखे द्रविड़ ग्रन्थों का यदि पता लगता तो अवश्य उनमें आर्यों के विषय में भी वही बातें होती जो आर्यों ने अपने शत्रुओं के विषय में अपने ग्रन्थों में लिखी हैं। पहिले तो आर्य इनसे लड़ते रहे; अन्तको उनसे मित्रता करली और उन्हीं में मिल गये। इस

भांति नये नये कुल बने जैसे कि पश्चिम के आर्यों में यूरोप जाने से बने थे ।

३—इस तरह बहुत से आर्य गंगा की उपजाऊ तरेटियों में जाकर बसे । यहाँ आने के पीछे भी वह लोग नये नये मन्त्र बनाते गये । और इसी से उन्होंने इस भूमि का नाम ब्रह्मर्षि देश रक्खा ।

४—जान पड़ता है कि इन्होंने ने पहिले पहिल यमुना के ऊपरी भाग को पार करके गंगा के ऊपर के भाग में तीन सौ मील तक जीत लिया और यमुना के तीरे एक नगर बसाया जिसका नाम अपने बड़े देवता के नाम पर इन्द्रप्रस्थ रक्खा । यह नगर पौछे उत्तरीय हिन्दुस्थान की राजधानी हो गया और दिल्ली के नाम से प्रसिद्ध हुआ । इस से साठ मील की दूरी पर गंगा के ऊपरी भाग में एक और नगर बसाया गया जिसका नाम हस्तिनापुर रक्खा गया । यहाँ से चल कर बहुतेरे दक्षिण की ओर चल पड़े और प्रायः डेढ़ सौ मील की दूरी पर दो और नगर बसाये । एक आगरा यमुना के तट पर और दूसरा कन्नौज जिसको वह कामपित्य भी कहते थे । गंगा के तट पर इस के आगे जाकर कुछ आगे आर्य लोग उस स्थान पर पहुँचे जहाँ गंगा और यमुना मिलती हैं । यहाँ पाँचवाँ नगर बसाया उस का नाम प्रयाग था । अब इस को इलाहाबाद कहते हैं ।

५—कुछ लोगों का बिचार है कि आर्यों को इस भूमि के विजय करने में प्रायः तीन सौ बरस लगे हुए होंगे । उस समय भी वेद के देवताओं की पूजा होती थी परन्तु आर्यों के आचार व्यवहार में धीरे धीरे अन्तर पड़ता गया । इस तीन सौ बरस के समय को महाभारत का समय कह सकते हैं क्योंकि संस्कृत की बड़ी पोथी महाभारत में जिस खड़ाई का हतान्त है वह इसी समय में हुई थी ।

६—आर्यों की बहुत से प्राचीन जातियों और परिवारों के नाम तक मिट गये हैं। यह लोग भारतवर्ष के पुराने निवासियों से लड़े और इन के आपस में भी लड़ाइयां हुईं। महाभारत में उन दो जातियों के नाम दिये हैं जिन में महायुद्ध हुआ था। महाभारत शब्द से महायुद्ध समझना चाहिये जोकि राजा की सन्तान में हुआ था। इस युद्ध का ठीक समय ऊपर कह दिया गया परन्तु महाभारत ग्रन्थ इस से बहुत पीछे रचा गया। इस लड़ाई की कहानियां पहिले योहीं कही जाती थीं। कवि और भाट राजाओं महाराजाओं की सभा में यह कहानियां सुनाया करते थे। बढ़ते बढ़ते यह कहानी बहुत बढ़ गई। समय समय पर इस में बहुत से दृष्टान्त जुड़ते गये। पीछे उस समय में जिसे हम ब्राह्मणों का समय कहते हैं व्यास जीने उन कहानियों को इकट्ठा करके उनका क्रम निश्चित किया और पद्य में रच डाला। यही काव्य अब महाभारत के नाम से प्रसिद्ध है। महाभारत में आर्यों के जिन आचार व्यवहार का वर्णन है उनके विषय में यह कहना कठिन है कि वह महाभारत के समय का ठीक पता देते हैं या नहीं। यह भी निश्चय नहीं हुआ कि इस कहानी में कहां उस ब्राह्मण समय से जोड़ मिलाया गया है जो इस के पीछे आया था और जिसमें आर्यों के बोल चाल और आचार व्यवहार में बहुत कुछ भेद हो गया था।

८—कौरवों और पांडवों की लड़ाई।

१—प्राचीन काल में आर्यों के दो बड़े कुल थे, जिन के नाम आज तक चले आये हैं, पहिला भरत या कुरुवंश जो गंगा नदी की ऊपरी तरैटी में रहता था और जिसकी राजधानी हस्तिनापुर

थी ; दूसरा पाञ्चाल वंश जो कुछ नीचे उतर कर गंगा के किनारे रहता था । इसकी राजधानी कामपिल्य अथवा कन्नौज थी ।

२—भरतवंश के राजा धृतराष्ट्र जन्म के अंधे थे । उन्होंने ने अपने छोटे भाई पांडु को राज दे दिया था । इन के सौ बेटे थे जिन में दुर्योधन सब से बड़ा था । यह लड़के अपने पुरखा कुरु के नाम से कौरव कहलाते थे । पांडु के भी पांच बेटे थे और पांडव कहलाते थे । इन में से बड़े और प्रसिद्ध युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन थे ।

३—सब ने राज-मन्दिर में साथ ही साथ विद्या पढ़ी और गुण सीखे ; पर सदा आपस में लड़ते भगड़ते रहते थे । बात यह थी कि कौरव चाहते थे कि पांडु के पोछे हम राज पावें और पांडव चाहते थे कि हम राज करें । जब पांडु के मरने का समय आ पहुंचा धृतराष्ट्र अपने सौ पुत्रों की सहायता से हस्तिनापुर की गद्दी पर बठ गया । पांडव दुखी होकर बहुत दिनों तक इधर उधर फिरते रहे कि कोई अच्छी जगह मिल जाय जिसमें वह बस जायं ।

४—इस समय के पाञ्चाल के राजा का नाम द्रुपद था । उसकी बेटी द्रौपदी बड़ी रूपवती थी । उन दिनों यह रवाज था कि एक नियत दिन पर कन्या अपना बर आप चुन लेती थी । राजा द्रुपद ने भी एक ऐसा ही दिन ठीक किया कि द्रौपदी अपना बर चुन ले । जब सब राजकुमार सभा में आकर बैठ गये तो द्रौपदी की ओर से यह कहा गया कि जो कोई मेरे पिता के धनुष से निशाने पर तीर मार देगा वही मेरा पति होगा । बहुत से राजकुमारों ने अपने बल की परीक्षा ली पर सुफल-मनोरथ न हुए । कौरवों का भी यही हाल हुआ । पर अर्जुन जो अपने भाइयों के साथ वहीं उपस्थित था आगे बढ़ा और कमान पर तीर

चढ़ा कर जो छोड़ा तो सीधा निशाने पर बठा और उसी समय द्रौपदी का ब्याह हो गया ।

५—जब कौरवों ने देखा कि अब पांडवों का सहायक उनका ससुर पाञ्चाल का राजा है तो उन्होंने ने हस्तिनापुर का आधा राज बांट कर पांडवों को दे दिया । पांडवों ने वह पश्चिमीय भाग जिसमें यमुनाजी बहती हैं ले लिया और उसमें इन्द्रप्रस्थ को नेव डाली । जो घने बन और जङ्गल उस प्रान्त में थे वह कुछ तो काट डाले और कुछ जला दिये और उन असभ्य जातियों को जो यहां पर बसी हुई थीं निकाल कर अपना राज स्थिर कर लिया ।

६—इसपर भी कौरवों से चुपचाप न बैठा गया । उन्होंने ने पांडवों को बुलाकर उनके साथ पासीं का खेल खेला और चालाकी से उनका राज पाट ही नहीं बरन उनकी स्त्री भी जीत ली । इन बेचारों को हस्तिनापुर छोड़ना और फिर १३ बरस तक बनवास भोगना पड़ा । तेरह बरस के पीछे उन्होंने ने चाहा कि हमारा राज हमको मिल जाय । पर कौरव कब मानते थे, उन्होंने ने न दिया ।

७—निदान कौरवों पांडवों में बड़ा भारी युद्ध हुआ । दोनों के साथ बहुत से राजा उनके सहायक थे । श्रीकृष्ण जी पांडवों के साथ थे । यह द्वारका के राजा थे जिसे अब गुजरात कहते हैं और बड़े भारी योद्धा थे । अब हिन्दू इनको अवतार मानते हैं । दिल्ली से उत्तर-पश्चिम की दिशा में कुरुक्षेत्र के मैदान में जहां अब पानीपत बसा हुआ है अठारह दिन तक घमसान की लड़ाई हुई । कौरव हार गये और एक एक करके मारे गये और पांडव हस्तिनापुर के राज के मालिक हुए ।

६—हिन्दुओं का पुरातत्व ।

(ईसा से पहिले १००० बरस से २०० बरस तक ।)

(१) जाति की उत्पत्ति ।

१—ईसा से पहिले एक हजार बरस से दो सौ बरस तक के समय को हिन्दुओं का प्राचीन काल कह सकते हैं। आर्य जाति के द्रविड़, कोल, तूरानी और प्राचीन भारतवासियों के साथ मिल जुल जाने से बहुत सी जातियां बन गई थीं। जातिभेद भी लोग मानने लगे थे। ब्राह्मण पुजारी और पुरोहित का काम करते थे, वेद के प्राचीन देवता और आर्य जाति के सीधे सादे धर्म को लोग भूल चुके थे। वेदों की भाषा भी अब नहीं बोलनी जाती थी। इसकी जगह ब्राह्मणों के लिखने की भाषा संस्कृत हो गई थी। साधारण पुरुषों की बोलनी तरह तरह की प्राकृत थी जिससे आजकल की प्रचलित भाषायें निकली हैं।

२—प्राचीन काल में आर्यों के घरों पर कोई बड़ा बूढ़ा या घर का मालिक अपने कुल की ओर से अग्नि और इन्द्र देवताओं की पूजा किया करता था, और उसके बेटे पोते खेत जोतते थे या कपड़ा बुनते थे। छोटे बालक गाय बैल चराते थे, औरतें दूध दुहती थीं, चरखा कातती थीं या घर के और धंधे करती थीं। लड़ाई के समय मर्द तलवार और तीर कमान लेकर शत्रु से लड़ने जाते थे। इस जाति का सब से बहादुर और समझदार मनुष्य सर्दार या सेनाध्यक्ष बनता था। सर्दार देवताओं से प्रार्थना करता था कि लड़ाई के समय वह उसकी सहायता करें, और लड़ाई के अन्त में उनको धन्यवाद देता था।

३—जब आर्यों ने उत्तरीय भारत पर आक्रमण करना आरम्भ किया तो नित्य का लड़ाई भगड़ा रहने लगा। परिवारों के बड़े बूढ़ों को और जाति के सर्दारों को इतना अवकाश न मिलता था कि वह वेदों के मन्त्र या देवताओं की बन्दना को याद करते। इस कारण हर जाति में कुछ ऐसे मनुष्य नियत किये गये जिनका पूजा पाठ करना करानाही कर्तव्य कर्म था। इसको छोड़ वह और कोई काम नहीं करते थे। कुछ दिन बीतने पर जाति के लोग उनको बड़े धर्मात्मा और साधू समझने लगे। इन लोगों की एक नई जाति बन गई और वह ब्राह्मण कहलाने लगी।

४—इस समय सर्दारों या उनके सिपाहियों को खेतीबाड़ी या और किसी काम के करने का भी अवकाश न मिलता था। इस कारण जाति के बहुत से बहादुर पुरुष युद्ध के निमित्त नियत किये गये। जाति का सर्दार उनका अध्यक्ष होता था और राजा कहलाता था। होते होते यह भी एक अलग जाति हो गई जो क्षत्रिय कहलाने लगी। बहुत दिनों तक ब्राह्मण और क्षत्रिय बराबर दरजे पर रहे। पीछे ब्राह्मण क्षत्रियों से श्रेष्ठ समझे जाने लगे।

५—बचे बचाये मनुष्य जो खेतीबारी करते थे या कपड़ा बुनते थे अथवा और कोई कार्य करते थे वैश्य कहलाये। यह भारतीय आर्यों की तीसरी जाति थी।

६—चौथी जाति सब से बड़ी थी—यह शूद्र कहलाती थी। इसमें उन पहिले आर्यों की सन्तान मिली जुली थी जिन्होंने ने प्राचीन भारतवासियों की स्त्रियों से व्याह कर लिया था और उन जातियों के वह मिले हुए लोग भी थे जो आर्यों के साथ रहते रहते उन्हीं के सदृश हो गये थे।

७—जो असभ्य जातियां आर्यों के साथ न मिलीं और जिनको आर्यों ने जीत लिया वह दास की दशा पर आ गईं और सब से

नोची जाति समझी जाने लगीं। यह लोग चाण्डाल कहलाते थे। इनको बस्तियों के अन्दर रहने की आज्ञा नहीं थी, इस कारण गांव के बाहर भोपड़ियां डालकर रहते थे।

८—इस भांति बहुत समय बीत जाने पर वह जाति बनी जिसको हिन्दू कहते हैं। इसको इस ढंग में आये हुए कम से कम तीन हजार बरस हो गये। हिन्दुओं के बहुत से परिवार थे। पृथक् पृथक् परिवारों के पृथक् पृथक् राजा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और चाण्डाल होते थे। बड़े बड़े नगर बस गये, मन्दिर बन गये, नये नये देवताओं की पूजा होने लगी। इन पुराने नगरों में एक काशी था। जो लोग एक उद्यम करते थे उनकी एक जाति बन गई। होते होते सकड़ों जातियां हो गईं जो अब तक विद्यमान हैं। एक जाति दूसरी जाति का उद्यम नहीं कर सकती। एक जाति के लोग न दूसरी जातिवालों के साथ खाना खा सकते हैं न शादीब्याह करते हैं। जातिभेद का विचार भारतही के रहनेवालों में पाया जाता है और कहीं नहीं है।

९—हिन्दू धर्म भी धीरे-धीरे रूप बदलता जाता था। आर्यों के प्राचीन देवता अग्नि और इन्द्र को लोग भूल चुके थे, ऐसा कोई बिरला था जो इनकी पूजता हो। आर्यों और पुराने भारतवासियों के धर्मों के मेल से जो नया धर्म बना वही अब हिन्दुओं का धर्म था। इस धर्म के बड़े देवता ब्रह्मा, विष्णु और शिव माने जाने लगे। इनके सिवाय और भी देवता थे। इसी प्रकार आर्यों की वैदिक भाषा और प्राचीन भारतवासियों की भाषा के मेल से पण्डितों की लिखने की संस्कृत और साधारण मनुष्यों के बोल चाल की वह भाषा बनी जिसको प्राकृत कहते हैं और जिस से आजकल की हिन्दी, बङ्गाली और प्रचलित भाषायें निकली हैं।

१०—हम कह नहीं सकते कि जातियों के अलग होने में कितना समय बीता। केवल इतना जानते हैं कि मनु जी के समय से पहिले यह रीति भलीभांति प्रचलित हो चुकी थी। मनु जी ने आचार व्यवहार (धर्मशास्त्र) का संग्रह इस समय के अन्त में किया था। यह संग्रह ईसा के जन्म से लगभग ५०० बरस पहिले हुआ था। इस धर्मशास्त्र में जातियों का बिस्तारपूर्वक वर्णन है। मनु जी ने हिन्दुओं के चार वर्ण लिखे हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र; पर यह भी कहते हैं कि जो शूद्र जातियाँ वर्णों के संकर (गड़बड़) होने से बनो यों उनको संख्या बहुत थी।

यह ८०० बरस का समय ईसा के जन्म से १००० बरस पहिले से २०० बरस पहिले तक ब्राह्मणों का समय कहा जा सकता है क्योंकि इसमें ब्राह्मणों का अधिकार बहुत था।

(२) प्राचीन हिन्दू राज ।

(ईसा से पहिले १००० बरस से २०० बरस तक ।)

१—प्राचीन आर्य सदाँर अपने अपने परिवारों को संग लिये हुए उत्तरीय भारत की बड़ी बड़ी नदियों के बराबर बराबर बड़े और उनको उपजाऊ तरेटियों पर अपना अधिकार जमा लिया। वेदों के समय में वह सिन्धु नदी की तरेटी में रहे। उसके पीछे गंगा और यमुना की उत्तरीय तरेटियों में पाँच बड़े बड़े नगर और राज्य स्थापित किये, फिर उन नदियों के बराबर बराबर चले जो उत्तर की दिशा में हिमालय से और दक्षिण में विन्ध्याचल से निकल कर गंगा जी में मिली हैं और अन्त में महानदी, गोदावरी और दूसरी दखिन की नदियों के किनारे किनारे बस गये।

२—प्राचीन काल में हिन्दुओं के बहुत बड़े बड़े राज थे। प्रायः

हर एक स्थान में क्षत्रियों का राज था पर कहीं कहीं शूद्र भी राज करते थे। कितने ही स्थान पर सैकड़ों बरस तक एक ही परिवार के राजा क्रम से राज करते रहे। इनमें आपुस में भी लड़ाई होती रहती थी। जो अधिक शक्तिमान होता था वह शक्तिहीन को दबा लेता था। हर एक राजा का दरबार था। हर दरबार के अमीर, सिपाही, कवि और पुरोहित अलग अलग थे। इनमें से बहुत सी रियासतों के नाम भी किसी को याद नहीं है। जिन जिन का हमको ज्ञान है उनका नीचे वर्णन किया जायगा।

३—इस समय सब से बड़ी शक्तिमान रियासत दक्षिण बिहार में मगध की थी। इसके उत्तर में गंगा जी के पार विदेह की रियासत थी। मगध पर कई शताब्दियों तक बहुत से राजवंश क्रम से राज करते रहे। कहा जाता है कि धीरे धीरे गंगा जी की तरफ्टी की रियासतें मगधराज्य के आधीन हो गईं।

४—आजकल जिसको बङ्गाला कहते हैं उस समय उसका पूर्वोत्तर भाग बङ्ग कहलाता था और पश्चिमीय अङ्ग के नाम से प्रसिद्ध था। उड़ीसा एक तीसरी रियासत में मिला हुआ था जिसे कलिङ्ग कहते थे। मालवे का सुन्दर पहाड़ी प्रान्त जिसमें कि चम्बल नदी बहती है अवन्ति कहलाता था। अवन्ति के दक्खिन में सौराष्ट्र या सोरठ का देश था जिसे अब गुजरात बोलते हैं। दक्खिन में गोदावरी के तीर अंध्र का राज्य स्थापित था।

५—इस समय उत्तरीय भारत का धर्म, वहां के शास्त्र और रस्म रिवाज दक्खिन और मध्य भारत में भी फैल गये थे। ब्राह्मण देश देश में फिरते थे; जहां जाते थे वहीं उनका धर्म, उनका शास्त्र और उनकी बोली भी उनके साथ जाती थी। दक्खिन की द्रविड़ जातियां भी ब्राह्मणों के बहुत से देवताओं को पूजने लगीं और उनकी भाषा में भी संस्कृत के बहुत से शब्द मिल गये। उत्तरीय

भारत के ब्राह्मणों और आर्यों ने अपनी विज्ञता, योग्यता और सभ्यता के प्रभाव से दक्खिन के लोगों को अपने आधीन कर लिया। इस समय में दक्खिनी द्रविड़ों ने भी बड़े बड़े नगर बसाये और मन्दिर बनाये। इनकी भी रियासतें थीं। विद्या और कला की भी बहुत सी बातें उन्होंने ने जान ली थीं पर उत्तरीय भारत के ब्राह्मण उनसे अधिक विद्वान थे। ब्राह्मणों ने उनके धर्म और उनकी भाषाओं पर अपना सिका बिठाकर यह प्रामाणित कर दिया कि हम तुमसे बढ़कर हैं। इस से यह न समझना चाहिये कि द्रविड़ों ने अपना धर्म और अपने देवता सब बदल डाले। जिस तरह उत्तरीय भारत के हिन्दुओं का धर्म कुछ आर्य कुछ द्रविड़ कुछ कोल और तूरानियों के धर्म से मिल जुल कर बना था उसी तरह दक्खिनी हिन्दुओं का धर्म द्रविड़, कोल और आर्यों के धर्म से मिल जुल कर उत्पन्न हुआ। इसमें पेड़ पल्लव और नागों की पूजा का अंश द्रविड़ों के धर्म से लिया गया है।

६—जो हाल कि द्रविड़ देश के विषय में लिखा गया है वही मध्य भारत के विषय में भी कहा जा सकता है। उत्तरी भारत के ब्राह्मण और व्यापारी कुल दक्खिन में फैल गये। व्यापारी तरह तरह का माल अपने साथ ले जाते थे तो ब्राह्मण अपना धर्म, अपनी भाषा, अपने आचार और व्यवहार का प्रचार करते थे। इसी तरह धीरे धीरे सारा भारतवर्ष हिन्दू हो गया। यद्यपि हर जाति की पृथक् भाषा थी फिर भी उसमें संस्कृत के बहुत से शब्दों ने भर कर लिया था। हर एक धर्म के पृथक् देवता थे पर बहुत से देवता उत्तरीय भारत के पूजे जाने लगे। यद्यपि देश देश के ब्राह्मण अपने अपने यहां की भाषा बोलते थे पर वह संस्कृत के लिखने पढ़ने का अभ्यास रखते थे और उनके सब शास्त्र संस्कृत ही भाषा में थे।

७—दक्खिन की सब से प्राचीन और शक्तिमान् चार रियासतें थीं। पहिली पाण्ड्य, टामिल देश के धुर दक्षिण में थी; इसकी राजधानी मदुरा थी। दूसरी चोल, टामिल देश में पाण्ड्य की उत्तर दिशा में; इसकी राजधानी काञ्ची (कांजीवरम) थी। तीसरी चेर कर्नाटक देश में जो आज कल मैसूर के नाम से प्रसिद्ध है। चौथी केरल जो पश्चिमीय घाट और समुद्र के बीच में थी। इसको अब मलयवार और त्रावंकोड़ कहते हैं। इनमें नित्य लड़ाई भगड़े रहते थे; विशेष करके पाण्ड्य और चोल की रियासतों में। कुछ विद्वानों का बिचार है कि उत्तरीय भारत के क्षत्रियों ने इन रियासतों की नेव डाली थी; कुछ का कथन है कि पहिले ही से यहां द्रविड़ राजा राज करते थे। कहते हैं कि अगस्त्य मुनि द्रविड़ देश में आये थे और पाण्ड्य की राजधानी में बहुत दिनों तक एक राजा के पाहुने रहे और उन्होंने ने इस देश के निवासियों को अपना धर्म सिखाया। पश्चिमीय घाट की सब से ऊँची चोटी उनके नाम पर आज तक अगस्त्यमलय कहलाती है।

(३) प्राचीन हिन्दू समय की विद्या और कला ।

(ईसा से पहिले १००० बरस से २०० बरस तक ।)

१—जब आर्य भारतवर्ष की हरी भरी और उपजाऊ तरैटियों में बस गये तो ब्राह्मणों को जिनकी एक पृथक् जाति बन गई थी पढ़ने लिखने के हेतु बड़ा समय मिलता था। अब वह न तो लड़ाई में जाते थे और न खेतीबारी करते थे। जिस किसी वस्तु की उन्हें आवश्यकता पड़ती थी वह और जातियों के लोग उन्हें पहुँचा देते थे। पूजा के पीछे सारा दिन अपना था। इनको वेद कंठ करना पड़ता था और इसमें निःसन्देह बड़ा समय व्यतीत

होता था फिर भी इतना अवकाश मिलता था कि वह कविता करें शास्त्र बनायें अथवा विद्या और कला सीखें ।

२—इस पुस्तक में इस बात का वर्णन पहिले हो चुका है कि रामायण और महाभारत काव्य इसी समय में लिखे गये और इन दोनों में बहुत से ऐसे किस्से कहानियां हैं जो वाल्मीकि और व्यास जी से बहुत पहिले राजाओं महाराजाओं के दरबार में भाट और कवि गाया और सुनाया करते थे । इनमें बहुत सी प्राचीन आर्यराजाओं की कीर्तियां वर्णित हैं और उनकी वीरताओं के साथ ही साथ बहुत से देवी देवताओं की अख्यायिकायें भी हैं ।

३—ब्राह्मणों ने संस्कृत बड़े ध्यान से पढ़ी थी और उसके व्याकरण को बहुत ऊंचे पद पर पहुंचा दिया था । व्याकरण पर उन्होंने ने बड़ी बड़ी पुस्तकें लिख डालीं । उस समय का सब से प्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनि हुआ है । संस्कृत व्याकरण का ग्रन्थ जो इसने लिखा है वह अपने ढंग का अद्वितीय है । ऐसी और कोई पुस्तक सारे संसार में कदाचित न निकलेगी ।

४—उस समय के हिन्दुओं ने जब रात को आकाश का अवलोकन किया और चन्द्रमा की चाल पर ध्यान दिया तो ज्योतिषशास्त्र की नींव डाल दी और उन २७ नक्षत्रों के नाम रक्खे जिनमें चन्द्रमा क्रम से प्रवेश करता है । उन्होंने ने उन १२ राशियों को भी पहिचाना जिनमें पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा रहता है और उनके नाम रक्खे ।

५—उन्होंने ने गिनती की रीति निकाली और अङ्कगणित के सूत्र बनाये । दहाई पर गिनती की रीति निकालना इन्हीं आर्यों की बुद्धि का चमत्कार है । पश्चिमीय जातियों ने भी यह गुर इन्हीं से सीखा है । यज्ञ की वेदियों को नाप कर नियमों के अनुसार बनाया करते थे, इस कारण रेखागणित और क्षेत्रमिति की रीतियां

भौ भलीभांति जान गये। वर्गक्षेत्र, वृत्तक्षेत्र और त्रिभुजक्षेत्र के करणसूत्र अच्छी तरह मालूम हो चुके थे।

६—इस प्राचीन काल के हिन्दुओं ने जीवनरहस्य और उसका मूलतत्त्व, संसार की अस्थिरता, परमेश्वर, मनुष्य, आत्मा, भूत वा भविष्य हर विषय पर बरसों तक बड़ा ध्यान दिया ; जिसका इनको ज्ञान हुआ और जो कुछ इनकी समझ में आया सब लिखते गये। इस ज्ञान बीन का परिणाम यह हुआ कि कुछ प्रधान मत बन गये जिसको दर्शन कहते हैं।

७—सांख्य दर्शन कपिल मुनि का रचा हुआ है। इनका यह बचन है कि हम उसी वस्तु का विश्वास कर सकते हैं जिसका कि हमको इन्द्रियों से ज्ञान हो सकता है या जिसे हम अनुमान कर सकते हैं या जो कोई प्रामाणिक बचन हो। यह कहते हैं कि ईश्वर प्रमाणां से सिद्ध नहीं हो सकता। इनकी शिक्षा यह थी कि पृथ्वी अपने आपही प्रकृति से बनी है। प्रकृति सदा से संसार में उपस्थित है और उपस्थित रहेगी। प्रकृति अपने स्वाभाविक गुणों के अनुसार अदलती बदलती रहती है और भांति भांति के रूप धारण करती है। संसार की सारी वस्तु और दृश्यों इसी प्रकृति के पलटते रहने, बढ़ने और घटने से उत्पन्न होती है। यह प्रकृति के साथ पुरुष (आत्मा) को भी अनादि और अविनाशी मानते हैं। इनका कथन है कि प्रकृति और पुरुष का न तो आदि है न अन्त ; यह हर काल में थे और सदा रहेंगे। मनुष्य की आत्मा कुछ काल तक एक शरीर में रहती है और अपने कर्मों के अनुसार ऊंची नीची योनि में जाती है। पुरुष प्रकृति से भिन्न है पर उसे अपना समझता है। जब मनुष्य को भेद का पूरा पूरा ज्ञान हो जाता है तो आवागमन से छूट जाता है और मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

८—दूसरा दर्शन योग है। यह पातञ्जलि ऋषि का बनाया हुआ है, जो ईसा से प्रायः २०० बरस पहिले हुए थे। इनका मत वही है जो कपिल का है पर यह ईश्वर को मानते हैं। मनुष्य की आत्मा के मोक्ष होने का एक उपाय यह भी है कि मनुष्य परमात्मा का ध्यान करे और प्रकृति के बन्धन से छूट कर उसमें लीन हो जाय।

९—तीसरा दर्शन गौतम ऋषि का चलाया हुआ न्याय है। न्याय में प्रमाणों से किसी वाक्य का झूठ सच जांचना सिखाया जाता है। गौतम की शिक्षा यह है कि आत्मा को छोड़ सारी वस्तुओं को परमेश्वर ने बनाया है। आत्मा अनन्त और अविनाशी है। आत्मा जब पूरा पूरा ज्ञान प्राप्त कर लेता है तो शरीर के बन्धन से छूट जाता है।

१०—चौथा दर्शन वैशेषिक कहलाता है इसके रचयिता कणाद ऋषि हैं। कणाद का कथन है कि पृथ्वी उन छोटे छोटे कणों से बनी है जिनमें किसी प्रकार का रूपान्तर नहीं हो सकता और जो नित्य हैं पृथ्वी और उसपर की सारी वस्तु कितनी ही क्यों न बदलती रहें। आत्मा के विषय में उनकी शिक्षा वही है जो गौतम की है।

११—शेष दोनों दर्शन मीमांसा कहलाते हैं। इनमें से पहिले का नाम पूर्व मीमांसा है। इसको जैमिनि ऋषि ने रचा था। इसका अभिप्राय यह है कि लोग जो अपना धर्म कर्म भूल गये हैं उनको सावधान करे और सच्चा धर्म सिखाये। मनुष्य का धर्म यह है कि वेद की शिक्षा के अनुसार चले और उसी की दी हुई रीतियों के अनुसार पूजा करे। मन्त्र पढ़े और यज्ञ और हवन करे। जैमिनि परमेश्वर के विषय में कुछ नहीं कहते।

दूसरे को उत्तर मीमांसा अथवा बादरायण व्यास का वेदान्त

कहते हैं। यह वह व्यास जी नहीं हैं जिन्होंने ने महाभारत की रचना की थी। यह अपनी शिक्षा को उपनिषदों के अनुसार बताते हैं और इनका कथन है कि मनुष्य को चाहिये कि परमेश्वर की आराधना करे। आत्मा, सत और समस्त सृष्टि का जन्म उसी से हुआ है, और अन्त में सब उसी से मिल जायगा। फिर वही वह रह जायगा और कुछ न रहेगा। बादरायण का कथन है कि मनुष्य की आत्मा परमेश्वर ही का एक अंश है जिस तरह चिनगारी अग्नि का अंश है। अर्थात् एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करती है। इसको अद्वैत वेदान्त कहते हैं। कारण यह कि वह जगत को ईश्वर से भिन्न नहीं समझता और ऐक्यता की शिक्षा देता है। दोनों परमेश्वर के स्वरूप हैं। यथार्थ में एक ही हैं भेद कुछ भी नहीं है। जो कुछ है सो एक वही परमात्मा है।

१२—ब्राह्मण सारी जातियों के गुरु और राह बतानेवाले थे। इस कारण उन्होंने ने सब जातियों के कर्तव्य निश्चित किये और उनके लिये नियम बना दिये। पहिले यज्ञ और हवन की रीतियां बनाईं और और उनके हर भाग के विषय में पृथक पृथक नियम बतलाये। फिर ब्रह्मभोज और जेवनार के कायदे स्थिर किये। गृहस्थ के धर्म और उसके निवाहने की रीतियां बड़ी सुगमता के साथ वर्णन कीं। यह सब बातें श्लोकों में लिखी हैं जो कांठ किये जाते हैं। मनु जी के धर्मशास्त्र में आचार व्यवहार के नियम हैं। मनु यह बताते हैं कि शासन कैसे होता है और अपराधियों को किस प्रकार दंड देना चाहिये। जान पड़ता है कि मनु स्मृति पहिले सूत्रों में रची गई थी ; श्लोक बहुत पीछे बने हैं।

१०—महात्मा बुद्ध ।

(ईसा से पहिले ५५७ बरस से ४७७ बरस तक ।)

१—प्रायः २५०० बरस से अधिक हुए, ब्राह्मणों के समय के पीछे कोशल की शक्तिमान रियासत के कुछ पूर्व शाक्य वंश के क्षत्रिय बसते थे । इनका बहुत छोटा सा कुल था । कपिलवस्तु इनकी राजधानी थी ; शुद्धोदन इनके राजा थे । यह नगर बनारस से सौ मील उत्तर था । शुद्धोदन बड़ा प्रतापी और शक्तिमान राजा था और चाहता था कि मेरे पीछे मेरा बेटा गौतम भी ऐसा ही बौर और प्रतापी हो । उसने उन्हें शस्त्र-विद्या की सब कलायें सिखाईं जैसे भाला और तलवार चलाना, धनुर्विद्या इत्यादि । गौतम जब १८ बरस के हुए तो एक परम रूपवती राजकुमारी से जिसका नाम यशोधरा था, उनका ब्याह हो गया । और ब्याह के दस साल पीछे उनके एक पुत्र भी हुआ ।

२—बचपन ही से गौतम सोच बिचार में रहा करते थे । इनका हृदय बड़ा कोमल था और बहुतही मीठे बचन बोलते थे ; जीव जन्तु पर बड़ी दया करते थे । आखेट को चले हैं, तीर धनुष पर चढ़ा हुआ है, चुटकी दबा ली है, कुछ कुछ धनुष भी खींच लिया है, पर यह देख कर कि भोला भाला हिरन बेखटके नन्हें नन्हें दांतों से महीन महीन दूब चर रहा है, बस कमान वहीं रख दी और सोच में पड़ गये । “हाय, हाय, इस पशु ने मेरा क्या बिगाड़ा है ? इसने किसको सताया है जो मैं इसे मारूं ?” ऐसा सोचकर तीर तरकश में रख लिया और घर लौट आये । घोड़दौड़ हो रही है, घोड़ा वायु की भांति उड़ा जाता है ; सम्भव है कि बाज़ी जीत ले पर संकेत पर पहुंचने से पहिले जो

घोड़े के हांपने और लम्बी लम्बी सांस लेने पर ध्यान जा पड़ा, वहीं रुक गये और लज्जित होकर बोल उठे, “हाय, हाय, क्या बाज़ी के कारण इस निरपराध पशु का सताना ठीक है ? बाजी जाय तो जाय पर इस घोड़े को दुख देना ठीक नहीं है।” घोड़दौड़ से अलग हो गये और घोड़े को चमकारते दिलासा देते एक ओर ले गये।

३—एक दिन वसन्त ऋतु में पिता ने कहा, “आओ बाहर चलो, देखो वृक्षों और खेतों पर कैसा जोवन आया हुआ है।” बाप बेटे धीरे धीरे सवार चले जाते थे। वसन्त तो था ही। चारों ओर बाग़ही बाग़ थे। पृथ्वी पर हरी हरी दूब उगी हुई थी। खेतियां लहलहा रही थीं। वृक्ष फलों से लदे हुए थे। गौतम इन्हें देखकर प्रसन्न हुए। पर उन्होंने ने देखा कि एक हरवाहा बड़ी क्रूरता से एक बैल को जिसकी पीठ में घाव है मार मार कर हांक रहा है। बेचारा पशु पीड़ा के मारे बैठा जाता है। फिर क्या देखा कि एक बाज़ एक पिड़की का मांस नोच नोच कर खा रहा है। आगे बढ़े तो देखा कि एक पिड़की मक्खियां पकड़ पकड़ निगल रही है। यह सब देख कर उनकी बड़ा शोक हुआ और वह घर चले आये।

४—कुछ दिनों के पीछे गौतम ने एक स्वप्न देखा। उन्हें जान पड़ा कि एक महा बूढ़ा जो मारे निर्वलता के चल भी नहीं सकता उनके सामने है और स्वप्न ही में जैसे कोई उनसे कह रहा है, “देखो गौतम तुम भी ऐसे बूढ़े और निर्वल हो जाओगे।” फिर उन्होंने ने एक महा रोगी मनुष्य को देखा जो मारे पीड़ा के कांख रहा था और फिर उनसे किसी ने कहा, “गौतम तुम भी एक दिन ऐसे ही रोगग्रस्त होगे और तुम्हें भी ऐसी ही पीड़ा होगी।” फिर उन्हें एक जीवरहित मनुष्य जो बिल्कुल ठंडा होकर अकड़

गया था दिखाई दिया और फिर उनसे किसी ने कहा, “देखो गौतम एक दिन तुम्हें भी मरना है।”

५—इसके कुछ दिनों पीछे गौतम ने जिनकी आयु अब ३० बरस की थी अपने पिता और स्त्री पुत्र को छोड़ दिया, अपने राजकीय बस्त्र उतार डाले और सिर मुंडा कर गेरुआ बस्त्र धारण



राजकुमार सिद्धार्थ ।

कर लिया और वन को चले गये। वह इसी की खोज करते रहे कि किस उपाय से संसार दुख और पाप से रहित हो सकता है। राजगृह के पास जो मगध की राजधानी थी दो ब्राह्मण तपस्वी रहते थे। गौतम उनके पास भी गये पर वह उनके संसार के दुख दर्द से बचने अथवा मोक्ष का कोई उपाय न बता सके। फिर पटने से दक्षिण गया के आस पास के घने वन में चले गये। वहां छ बरस बराबर तपस्या की, कड़े कड़े व्रत रक्खे और शरीर की ताड़ना की

पर इस से भी उनका मनोरथ सिद्ध न हुआ। गया जी का मन्दिर इस बात का स्मारक है कि यहां गौतम ने छ बरस तपस्या की थी।

६—अन्त में वह दिन भी आया कि गौतम को शान्ति मिली। एक बड़े वृक्ष के नीचे ध्यान धरे बैठे थे कि अचानक उनके हृदय में एक प्रकाश सा ज्ञान पड़ा जिससे उनका हृदय

शान्त हुआ। उन्होंने जान लिया कि व्रत रखने से और शरीर को कष्ट देने से कोई लाभ नहीं है। लोक और परलोक में आनन्द प्राप्त करने का उपाय यही है कि मनुष्य शुद्धता से रहे, सब पर दया करे और किसी को न सताये। गौतम को विश्वास हो गया कि मोक्ष का सच्चा रास्ता यही है।

७—अब गौतम ने अपना नाम बुद्ध रख लिया। और संसार को सीधी राह बताने और शिक्षा देने के हेतु देश विदेश फिरने लगे। पहिले काशी जी गये; वहां स्त्री पुरुष सब को अपना धर्म सुनाया। तीन ही महीने ठहरे थे कि उनके ६० चेले हो गये। इन सब से उन्होंने कहा कि जाओ और हर एक दिशा में धर्म का प्रचार करो। फिर राजगृह गये यहां के राजा प्रजा सब ने उनका धर्म ग्रहण किया। इसके पश्चात् कपिलवस्तु गये जहां इनके पिता राज करते थे। घर से बिदा होते समय यह राज-कुमार थे। अब जो लौट कर आये तो गुरुआ बस्त्र, हाथ में कमंडल और सिर मुंडा हुआ था। बाप, स्त्री, पुत्र और समस्त शाक्य-वंश ने उनका व्याख्यान सुना और उनके चेले हो गये। इस से ४५ बरस बीतने पर ८० बरस की आयु तक बुद्ध जी एक स्थान से दूसरे स्थान जाकर अपने धर्म का प्रचार करते रहे। इस भांति सारे मगध देश, कोशल अर्थात् बिहार और संयुक्त प्रान्त आगरा और अवध में धीरे धीरे इनका मत फैल गया।

११—बुद्धमत।

१—बुद्ध जी का मत ऐसा अच्छा और उनका जीवन ऐसा शुद्ध था कि बहुत से मनुष्य उनके अनुगामी हो गये। क्या धनी, क्या कङ्काल, क्या बड़ा क्या छोटा, स्त्री पुरुष, हर जाति और धर्म के

लोगों ने इनके मत को धारण किया। साधारण मनुष्यों पर इनके वर्म का बड़ा अच्छा फल पड़ा, कारण यह कि इनका कथन था कि मेरे माननेवाले कुल स्त्री, पुरुष जो सच बोलें शुद्ध रहें और पाप से बचते रहें वह बराबर हैं और मोक्षपद को पहुंच सकते हैं।

२—बुद्ध की शिक्षा का सारांश यह है कि मनुष्य को चाहे लोक चाहे परलोक में उसके कर्मों का फल मिलता है। पाप करने से दुःख दर्द मिलता है और अच्छे कामों से सुख। बुद्ध जी का कथन है कि लाख बलिदान, यज्ञ और हवन करो कि देवता प्रसन्न हों पर इससे अपने किये हुए पाप का नाश नहीं कर सकते। करोड़ जप करवाओ और मन्त्र पढ़वाओ पर इससे कभी तुम्हारी राह नहीं सुधर सकती। जो बोयेगा सो काटेगा, जैसा करेगा वैसा भरेगा। वह यह भी कहते थे कि मरने के पीछे मनुष्य की आत्मा कर्मों के अनुसार और और योनियों में जाती है और बारम्बार जन्म लेती और मरती है। आत्मा को मोक्ष उस समय मिलता है जब मनुष्य पाप के फन्दे से निकल जाय, दुःख दर्द और काम क्रोध मद लोभ से रहित हो जाय, न दुःख को दुःख जाने न सुख को सुख। मित्र और बैरी दोनों को बराबर समझे। ऐसी दशा को बुद्ध जी निर्वाण कहते हैं। इस दशा को पहुंच कर आत्मा आवागमन से छूट जाती है, उंची नीची योनियों में मारी मारी फिरने से बची रहती है, भवसागर को पार करके शान्ति के कुंज में निवास करती है। अब आत्मा अचल और अटल हो जाती है और इसको परम आनन्द मिल जाता है।

३—बुद्ध जी के चले जो संसार को छोड़ कर जप तप करने की अभिलाषा करते थे भिक्षु कहलाते थे और स्त्रियां जो घर बार छोड़ कर तपस्विनी हो जाती थीं भिक्षुणी कहलाती थीं। इनके रहने के लिये बस्तियों से दूर बहुधा पहाड़ों के खोह में बिहार बनवा दिये

जाते थे। यहां भिक्षु और भिक्षुणियां जप तप और पढ़ने लिखने में अपना समय व्यतीत करती थीं। यह सब सिर मुड़ाते थे गेरुआ वस्त्र पहिनते थे और भिक्षा पर निर्वाह करते थे। मगधदेश में इस भांति के बहुत से बिहार थे इस कारण उस प्रान्त का नाम ही बिहार हो गया।



अजन्ता की खोह में भिक्षुओं का स्थान।

४—बुद्ध जी अपने चेलों को यही शिक्षा दिया करते थे कि तुम भी मेरी राह पर चलो और दूसरों को इसी राह पर लाने का उद्योग करो। वह इसी सलाह पर चले यहां तक कि बुद्ध जी के जीते जी हजारों हिन्दू उनके मत के अनुगामी हो गये। इनमें से मगध देश के राजा बिम्बिसार भी थे। धीरे धीरे यह मत यहां तक बढ़ा कि हजार बरस तक भारत में सब से अधिक बढ़ती इसी की रही।

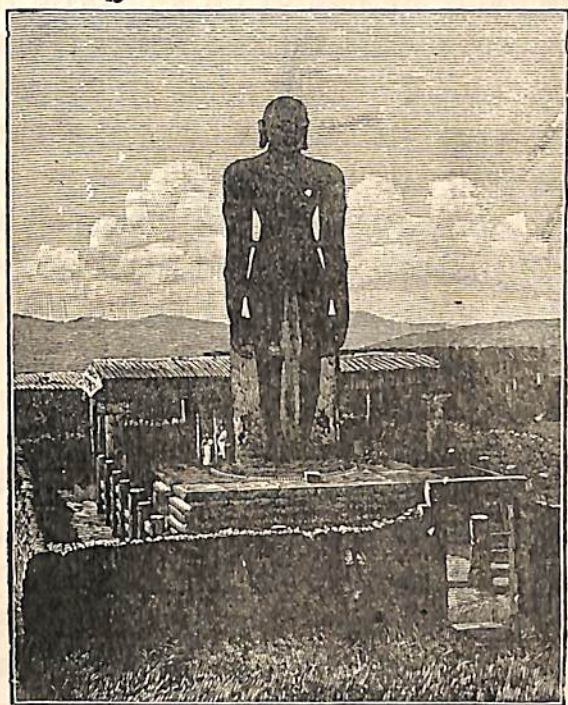
५—बुद्ध जी की मृत्यु के पीछे ईसा से ४७७ बरस पहिले उनके ५०० चेले इकट्ठे हुए। उनकी इच्छा यह थी कि अपने गुरु के कहे हुए वाक्यों का संग्रह करें। जब उनके समस्त वाक्य इकट्ठा कर लिये गये तो सबों ने उनको कांठ कर लिया और उनको तीन भाग में जिनको त्रिपिटक कहते हैं अलग अलग किया। पहिले पिटक में वह उपदेश हैं जो बुद्ध जी ने अपने चेलों को दिये थे। दूसरे में वह धर्म हैं जिनके अनुसार मनुष्य को रहना उचित है। तीसरे में बुद्ध मत के धर्म का वर्णन है। यह बुद्धमतवालों की पहिली सभा थी। इसके सौ बरस पीछे प्रायः ३७७ बरस ईसा से पहिले ७०० भिक्षुओं की दूसरी सभा हुई। इसमें वह मतभेद की बातें जो इस समय में उत्पन्न हो गई थीं तै की गईं। इसके २३५ बरस पीछे मगध के प्रसिद्ध सम्राट महाराज अशोक ने पठने में तीसरी सभा की। चौथी और अन्तिम सभा महाराज कनिष्क ने इसके ३०० बरस पीछे इकट्ठी की। यह शक जाति के राजा थे और उत्तर-पश्चिमीय भारत पर राज करते थे।

६—इस हजार बरस के समय को, अर्थात् ३०० बरस ईसा के पहिले से लेकर सन् ७०० ई० तक, बुद्धमत का समय कह सकते हैं क्योंकि इस काल में यह मत बढ़ते बढ़ते सब मतों से बढ़ गया था।

१२—जैन ।

१—जिस समय बुद्ध जी जीते थे और अपने मत को फैला रहे थे उसी समय एक और क्षत्रियकुमार ने जिसका नाम दुर्धमान था अपना नाम महावीर रखकर एक नया मत फैलाया, जो कि बहुत सी बातों में बुद्धमत से मिलता जुलता है। यह जिन

अर्थात् सिद्ध कहलाते थे। इनके मत को जिनमत या जैनमत कहते हैं। इसके माननेवाले जैनी कहलाते हैं। यह भी उत्तरीय भारत में रह कर उपदेश करते थे। जैनी लोग कहते हैं कि हमारा मत बुद्धमत से पुराना है और कुछ विद्वानों का विचार



कार्कुल में जैनियों की मूर्ति।

है कि उनका कहना ठीक भी है। गुजरात देश के नगर पालिताना में जैनियों के बड़े बड़े सुन्दर मन्दिर बने हुए हैं। यहाँ तक कि वह मन्दिरों का नगर कहलाता है। इन मन्दिरों में कुछ ऐसे हैं जो हजार बरस पहिले के बने हैं। अबू पहाड़ पर जैनियों के

दो मन्दिर हैं जो भारत के अत्यन्त सुन्दर और बड़े प्रसिद्ध मन्दिरों में गिने जाते हैं। यह निरे संग मरमर के बने हुए हैं, जो तीन सौ मील से यहां लाया गया था। महावीर स्वामी की मृत्यु के दो सौ वर्ष पीछे प्रसिद्ध राजा चन्द्रगुप्त के समय में मगध देश में बड़ा भारी अकाल पड़ा। उस समय बहुत से जैनी उत्तरीय हिन्दुस्थान को छोड़कर दक्षिण देश कर्नाटक में चले गये जिसे अब मैसूर और कनाड़ा कहते हैं। अभी तक यहां कुछ जैनी बसे हुए हैं। अब जैनियों के दो भाग हो गये थे। एक तो खेताम्बर अर्थात् उज्ज्वल वस्त्र धारण करनेवाले दूसरे दिगम्बर जो नग्न रहना करते थे। आज दिन १५ लाख जैनी भारत के तमाम हिस्सों में बसे हुए हैं। बुद्ध मत की तरह जैनियों के भी साधू होते हैं। जैनी लोग दया करने का इतना विचार रखते हैं कि जहां तक हो सकता है छोटे से छोटे जीवों को भी हत्या नहीं करते। यह भी कर्म की गति को मानते हैं और निर्वाण को मुक्ति समझते हैं। इनका भी यही मत है कि मृत्यु के पीछे मनुष्य की आत्मा बहुत से पशुओं और दूसरी योनियों में प्रवेश करती है और बार बार जन्म मरण के फेर में आती है। जैनी बस्ती से दूर घने बनों या पेड़ों में ठके पहाड़ों पर अपने मन्दिर बनाते हैं और इन मन्दिरों के भीतर या उनके आस पास अपने तीर्थंकरों की बड़ी बड़ी मूर्तियां रखते हैं। दक्षिण देश के कनाड़ा प्रान्त में कार्कुल स्थान में जैनियों की एक मूर्ति है जो एक ही पत्थर को काट कर बनाई गई है और ४२ फुट ऊंची है।

१३—बौद्धमत का समय ।

(१) यूनानियों का भारतवर्ष में प्रवेश ।

१—यहां तक हमको भारत और उसके निवासियों के विषय में जो कुछ मालूम हुआ है, वह सब भारत की पुस्तकों से मिला है । भारत का सब से पहिला इतिहास साल समेत जो हमको मिलता है वह यूनानियों की लेखनी से लिखा गया था ।

२—जो आर्य फारस में जाकर बसे थे उन्होंने ने वहां एक बड़ा राज स्थापित कर लिया था । बुद्ध के समय अर्थात् ईसा से ५०० बरस पहले फारस का बादशाह सिन्धुनद से लेकर रूम के समुद्र तक सारे पश्चिम एशिया पर राज्य करता था । एशियाई तुर्की, फारस, अफ़गानिस्तान और पंजाब का वह हिस्सा जो सिन्धुनद के पार बसा है सब उसके राज में था ।

३—फारस का एक राजा ज़रकसीज़ नाम इस बड़े राज पर सन्तोष न करके उस जलडमरूमध्य के पार गया जो यूरोप और एशिया को अलग करता है, और एक बड़ी भारी सेना लेकर यूनान पर चढ़ दौड़ा । यूनानियों ने उसे हरा दिया और उसकी सेना के सब से बड़े हिस्से को मार कर उसे अपने देश से निकाल दिया ।

४—इस समय यूनानी यूरोप की सारी आर्य जातियों से बढ़ थे ; विद्या और गुण और शस्त्र-विद्या में भी सब से निपुण थे । ज़रकसीज़ के हारने के बहुत दिनों पीछे यूनानियों में एक बहुत बड़ा राजा हुआ जिसका नाम सिकन्दर था । इसने बिचार किया कि फारस पर चढ़ाई करूँ और फारसवालों को यूनान पर चढ़ाई करने का स्वाद चखा दूं । इसने कोई ३५००० यूनानी सिपाही साथ लिये और फारस पर चढ़ आया ।

५—सिकन्दर की आयु २० बरस की थी। फिर भी यह पृथ्वी के बीर धीर योद्धाओं में गिना जाता था और अब तक सिकन्दर महान के नाम से प्रसिद्ध है। इसने कुल एशियाई तुर्की और फारस को विजय किया और फारस के राजा दारा से जितनी लड़ाई लड़ा सब जीतता गया। इसके पीछे तुर्किस्तान अफगानिस्तान पर विजय पाता हुआ खैबर दर्रे से जिधर से किसी समय में आर्य लोग पंजाब में आये थे इसने भारत में प्रवेश किया।

६—पंजाब का पौरव नाम एक क्षत्रिय राजा सिकन्दर को जीतने की आशा से उसके सम्मुख आया। भेलम नदी के तट पर महा घोर युद्ध हुआ पर सिकन्दर और उसके यूनानी योद्धाओं ने पौरव और उसके सिपाहियों को हरा दिया। जब लड़ाई बन्द हो गई तब बन्दियों के समान पौरव सिकन्दर के सम्मुख उपस्थित किया गया। सिकन्दर ने पूछा कि तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाय। पौरव ने उत्तर दिया कि जैसा राजा राजाओं के साथ करते हैं। सिकन्दर इस उत्तर से प्रसन्न हुआ और उसका राज उसे लौटा दिया।

७—सिकन्दर चाहता था कि गंगा नदी के तरेटी की ओर बढ़े और सब भारतवर्ष को जीत ले परन्तु उसके सिपाही व्याकुल हो गये थे और वह यूनान को ही लौटना चाहते थे। इस लिये सिकन्दर को उलटा लौटना पड़ा। एशियाई तुर्की के बाबुल नगर में पहुँच कर उसे ज्वर आ गया और वह मर गया।

८—सिकन्दर के मरने के पीछे उसका बड़ा राज्य उसके सेनापतियों में बंट गया। पहिला यूनानी सेनापति जो सिकन्दर की मृत्यु के पीछे बाख़र का हाकिम हुआ मलयकेतु था। इसने पंजाब को अपने आधीन रखने का उपाय किया किन्तु सिकन्दर के भारत से लौट जाने के पीछे मगध के प्रसिद्ध राजा चन्द्रगुप्त ने

पंजाब को जीत लिया। मलयकेतु चन्द्रगुप्त को आधीन न कर सका और परस्पर सन्धि कर ली गई। चन्द्रगुप्त ने पांच सौ हाथों मलयकेतु को भेंट दिये, मलयकेतु ने पंजाब पर अपना अधिकार त्याग देने का प्रण किया और चन्द्रगुप्त के साथ अपनी बेटी ब्याह दी। चन्द्रगुप्त की सभा में मलयकेतु का राज-दूत भी रहने लगा जिसका नाम मेगस्थनीज़ था।

८—यूनानियों ने ३२७ बरस ईसा के पहिले जो सिकन्दर के साथ चढ़ाई की थी वह भारत के इतिहास में एक बड़ी भारी घटना जान पड़ती है। सिकन्दर के साथ विद्वान और गुणी यूनानी जो भारत में आये उन्होंने जो बातें यहां की देखीं उन सब का हाल अपनी पुस्तकों में लिखा। उनके लिखे हुए सच्चे इतिहास तो अब नहीं मिलते हैं पर यूनानी इतिहासलेखकों ने जो बातें अपनी पुस्तकों में इनसे लिख ली थीं, अभी तक पाई जाती हैं। मेगस्थनीज़ ने भी जो सिकन्दर की मृत्यु के २० बरस पीछे पटने में राज-दूत था कुछ हाल लिखा था जो उसने अपनी आंखों देखा या कानों सुना था। उसकी पुस्तक के कुछ भाग अभी तक मिलते हैं।

१०—मेगस्थनीज़ लिखता है कि भारतवासी मनुष्य जिनको उसने देखा सत्यवादी और वीर थे। स्त्रियां सीधी और पवित्र थीं। दासत्व का नाम तक न था। लोग एक दूसरे की बात पर बिश्वास करते थे। कोई अपने दरवाजे पर ताला नहीं लगाता था क्योंकि चोर और लुटेरे कहीं न थे। मुकदमे इत्यादि होते ही न थे। बिरला ही कोई किसी पर नालिश करता था। मेगस्थनीज़ लिखता है कि उस समय हिन्दुस्थान में ११८ राजा राज्य करते थे। भारतवासियों में जो लोग गोरें थे वह जंची जाति के आर्य ब्राह्मण और क्षत्रिय थे और जो लोग काले थे वह शुद्र

और नीची जातियों के मनुष्य थे। हर एक बस्ती और गांव अपनी सब आवश्यकता की चीजों से भरा था, और दूसरे के आसरे न था क्योंकि इसमें प्रत्येक जाति के और प्रत्येक उद्यम के मनुष्य बसते थे। प्रजा अपने राज में और हाकिमों की रक्षा में सुख चैन से रहती थी।

(२) भारत के यूनानी राजा ।

१—जब सिकन्दर भारत से लौट गया तो उसके हजारों यूनानी सिपाही पीछे तुर्किस्तान में रह गये। फ़ारस के यूनानी तुर्किस्तान को बाख़्तर कहते हैं। यूनानी सैनिकों ने बाख़्तर की स्त्रियों से ब्याह कर लिया और उन्हीं के देश में बस गये। सिकन्दर के पीछे यूनानी बादशाह फ़ारस में पांच सौ और बाख़्तर में सौ बरस के लगभग राज करते रहे। इसके पीछे सीथियन के बड़े बड़े भुंडों ने आकर इनको तुर्किस्तान से निकाल दिया।

२—तीन सौ पचास बरस अर्थात् ईसा मसीह से दो सौ पचास बरस पहिले और सौ बरस पीछे तक बाख़्तर के यूनानी राजा और उसके पीछे फ़ारस के यूनानी बादशाह अफ़ग़ानिस्तान और पंजाब के कुछ भाग पर राज करते थे। इनके नाम के सिक्के आज तक बहुधा वहां निकलते रहते हैं। इन बादशाहों में सब से प्रसिद्ध मीनाण्डर था जिसको भारतवासी लेखकों ने मलिनद लिखा है। वह बौद्ध हो गया था। कहा जाता है कि यह बड़ा नेक राजा था। भारत के लेखकों ने ऐसा लिखा है कि यूनानी यहां के वासियों से मिल गये थे। पीछे उनका कहीं नाम तक नहीं सुनाई देता।

(३) भारतीय सिथियन ।

(ईसा मसीह से १५० बरस पहिले से ४०० ई० तक ।)

१—जो जातियां मध्य एशिया में बसी थीं यूनानी उनको सीथियन और उनके देशको सीथिया कहते थे । इन जातियों की गिनती बहुत थी । पांच सौ बरस अर्थात् ईसा मसीह से १५० बरस पहिले और ४०० बरस के अन्तर में यह जातियां एक एक करके उसी भांति भारत में आती रहीं जिस तरह पहिले आर्य लोग आये थे । यह कश्मीर, अफगानिस्तान, पंजाब, सिन्ध, गुजरात और मध्य भारत के पश्चिमी भाग में बस गये । ऐसा जान पड़ता है कि पहिले पहिल उन्हीं ने पंजाब में भारतीय यूनानी राजाओं के साथ छोटी छोटी रियासतें बसाईं फिर सारे देश को जीतकर स्वाधीन कर लिया ।

२—इनमें से जो जातियां पहिले पहिल भारत में आईं उनमें से एक शक थी । यह लोग सिन्ध, मालवा और पश्चिमी भारत में पहुंचे । शक राजाओं का कुटुम्ब जो पश्चिमीय राजाओं के नाम से प्रसिद्ध था, ४०० ईस्वी तक उज्जैन को अपनी राजधानी बनाकर मालवा में राज करता रहा । इसके पीछे भारतवासियों के प्रसिद्ध राजा विक्रमादित्य ने शक वंश को निकाल दिया ।

३—एक और भारतीय सीथियन जाति कुशन कहलाती थी । यह ४५ ई० से २२५ ई० तक अर्थात् १८० बरस तक उत्तरीय भारत में रही । कनिष्क इस जाति का प्रसिद्ध राजा हुआ है । पुरुषपुर अर्थात् पेशावर उसकी राजधानी थी । पंजाब, कश्मीर और सिन्ध में उसका राज था । तुर्किस्तान और अफगानिस्तान

और इसी के आधीन थे। इसके नाम के बहुत से सिक्के निकले हैं। यह बौद्ध था और उस मत को बहुत मानता और उसपर पूरा विश्वास रखता था।

१४—बौद्ध समय के बड़े बड़े राजा और उनकी रियासतें।

(ईसा से २०० बरस पहिले से लेकर ६०० ई० तक)

१—हम पहिले लिख आए हैं कि प्राचीन हिन्दुओं के समय में सब से प्रसिद्ध राज्य मगध का था। इस प्रान्त को अब बिहार कहते हैं। पहिले यहां विदेहों का राज था। बौद्धों के समय में यह देश और भी बढ़ा। मगध के राजा बिम्बिसार ने बुद्ध जी का धर्म उपदेश सुना और उन्हीं के मत का हो गया। इस समय मगध की राजधानी राजगृह थी। पीछे जो वंश मगध देश का शासक हुआ शूद्र जाति का था। इसका मूल पुरुष नन्द था इस कारण से कुल वंश ही को नन्दवंश कहते हैं। नन्दों ने पाटलीपुत्र को जो गंगा और सोन नदी के सङ्गम पर बसा हुआ था अपनी राजधानी बनाया। जब सिकन्दर ने भारतवर्ष पर धावा मारा तब इस वंश का एक राजकुमार चन्द्रगुप्त नाम जो अपने यहां के राजा को राजगृह से उतारना चाहता था सिकन्दर से जा मिला और उस से प्रार्थना की कि आप मगध में चले और वहां राज करें। पर यूनानी सिपाहियों ने इतनी दूर जाना स्वीकार न किया। जब सिकन्दर भारतवर्ष से लौट गया, तो चन्द्रगुप्त ने अपने मित्रों की सहायता से नन्द राजा को मार डाला और ईसा से प्रायः ३२१ बरस पहिले मगध का राजा बन बैठा।

(१) मौर्य वंश ।

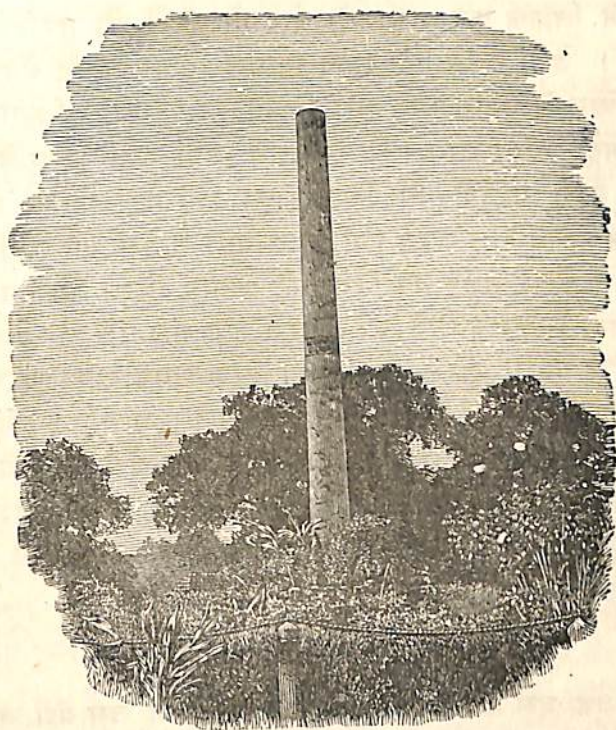
१—चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में (ईसा से ३२१ बरस पहिले से लेकर २८७ बरस तक) उत्तरीय भारत में मगध एक बहुत बड़ा राज हो गया । कहते हैं कि गङ्गा जी की तरैटी से लेकर पंजाब तक सारा देश इसके आधीन था और प्राचीन आर्यों की समस्त रियासतें जो विदेह, पञ्चाल, कोशल के नामों से प्रसिद्ध थीं उसी राज में मिली थीं । चन्द्रगुप्त का कुल मौर्यवंश कहलाता है क्योंकि चन्द्रगुप्त की मां का नाम मुरा था । चन्द्रगुप्त ने पाटलीपुत्र में ३० बरस राज किया । हम पहिले लिख चुके हैं कि बाख्तर अर्थात् तुर्किस्तान के बादशाह सिल्यूकस ने (मलयकेतु) उसके साथ सन्धि करके उसको अपनी बेटी व्याह दी थी । एक यूनानी राजदूत मेगस्थनीज़ नामी आठ बरस तक इसके दरबार में रहा । इसने मगध देश और हिन्दुओं की रीति नीति जो उसने देखी या सुनी थी बड़े विस्तार से लिखी थी । वह लिखता है कि पाटलीपुत्र एक बहुत बड़ा नगर था, नौ मील लम्बा दो मील चौड़ा था । मगध के राजा की सेना में ६ लाख पैदल और ४० हजार सवार थे । राजा बड़ी सुगमता और विज्ञता से शासन करता था ।

२—चन्द्रगुप्त का पोता अशोक २७२ बरस से २३२ बरस तक इस वंश का तीसरा राजा हुआ । यह चन्द्रगुप्त से भी अधिक प्रसिद्ध हुआ । इसको बहुधा अशोक महान कहते हैं, क्योंकि यह अपने समय का सब से बड़ा और प्रतापी राजा था । जवानी में यह बड़ा लड़नेवाला था । यह कहा करता था कि कलिङ्ग देश को जीत कर अपने राज्य में मिला लूंगा ; तीन साल तक लड़ा और कलिङ्ग को जीत लिया । इस लड़ाई में हजारों लाखों मनुष्यों को

मरते कटते देखकर उसको बड़ा तर्स आया और एकाएक उसका स्वभाव बिल्कुल बदल गया और कहने लगा कि अब मैं बुद्ध जी के धर्म पर चलूंगा और कभी किसी से लड़ाई न करूंगा। अशोक ने बुद्ध धर्म को अपने सारे राज का धर्म नियत किया और अपना नाम प्रियदर्शी रक्खा। इसका एक बेटा भिच्छु और एक बेटी भिच्छुणी हो गई। इसने दोनों को लज्जा भेजा कि वहां जाकर वे बुद्ध मत का प्रचार करें। बौद्ध समाज के दूसरे सम्मेलन को प्रायः सवा सौ बरस से अधिक हो चुके थे और बुद्ध मत में कई प्रकार के उलट फेर हो गए थे। इनके निर्णय करने के लिए ईसा से २४२ बरस पहिले अशोक ने इस धर्म के १००० महात्माओं और विद्वानों की तीसरी बड़ी समाज इकट्ठा की। आशय यह था कि बुद्ध धर्म की पीछे की मिलावटों से रहित करके बुद्ध जीके मूल धर्म के अनुसार हो जाय—यह समाज पाटलीपुत्र में इकट्ठा हुआ। बुद्ध धर्म के समस्त उपदेश पाली भाषा में लिख लिये गये। २००० बरस से कुछ अधिक से जो बुद्धमत के ग्रंथ दक्षिण एशिया में प्रचलित हैं वह इसी समाज के इकट्ठा किये हुए हैं। इसने बुद्ध धर्म प्रचार के निमित्त, कश्मीर, गांधार, तिब्बत, बर्मा दखिन और लज्जा में भिच्छु भेजे।

३—अशोक ने २१ शासन लिखाये और जगह जगह सारे भारत में पत्थर की लाटों और पहाड़ों पर अङ्कित करा दिये। इनमें से कई आज तक विद्यमान हैं। एक प्रयाग में है, एक गुजरात में गिरनार पर्वत पर है। इन शासनों में बुद्ध धर्म की बड़ी बड़ी बातें सब आ जाती हैं जैसे दया करो, सुशील बनो, अपने चित्त को शुद्ध करो, दान दो। एक शिला पर यह लिखा हुआ है कि अशोक ने कलिङ्ग देश जीत लिया और पांच यूनानी बादशाहों से संधि की। इनमें से तीन—मित्र, यूनान और शाम के

बादशाह थे। इससे यह जाना जाता है कि अपने समय का अशोक बड़ा प्रसिद्ध और प्रतापी राजा था।



इलाहाबाद में अशोक की लाट ।

४ —ईसा से २३२ बरस पहिले अशोक का देहान्त हुआ। इस के ४० बरस पीछे मौर्य वंश का भी अन्त हो गया—मौर्य वंश के पीछे दो वंश और मगध में ऐसे हुए जिनके नाम छोड़ो अब और कुछ कोई नहीं जानता। अशोक के २०० बरस पीछे मगध का राज अंध्र वंश के हाथ लगा।

(२) अंध्र वंश ।

अंध्र आर्यों की एक जाति थी जो प्राचीन काल में गङ्गा की तरेटी से निकल कर महानदी और गोदावरी की तरेटियों में बस गई थी। यहां उसने एक राज्य स्थापन किया जिसने सैकड़ों बरस तक दखिन के पूर्वीय भाग और तिलङ्गाना पर राज्य किया। आज तक तैलङ्गी भाषा का दूसरा नाम अंध्र भाषा चला आता है। ईसा से २६ बरस पहिले जो हिन्दू राजा यहां राज करता था उसने देखा कि मगध राज बहुत शिथिल होगया है इस कारण उसने एक बड़ी सेना लेकर उत्तर की दिशा की प्रस्थान किया और मगध को जीत लिया। इसके पीछे ३०० बरस तक अंध्र वंश की एक शाखा मगध और पूर्वीय भारत और दूसरी दखिन पर राज्य करती थी। हम पहिले लिख चुके हैं कि ईसा से पहिले ४ शताब्दियों में पहिले बाख्तर के यूनानियों और फिर शकों ने पंजाब और उत्तर-पश्चिमीय भारत को अपने आधीन किया था। अंध्र वंश के २४ राजाओं ने राज किया। उन्होंने ने शकों को भारत के मध्य और पूर्व के भाग में घुसने नहीं दिया।

(३) गुप्त वंश ।

१—बुद्ध धर्म के समय के अन्त में मगध में उस वंश का राज था जो गुप्त के नाम से प्रसिद्ध है। ३०० ई० से ६०० ई० तक ३०० बरस के लगभग इस वंश का शासनकाल कहा जाता है। इस वंश के दो राजा बड़े नामी हुए हैं। एक समुद्रगुप्त और दूसरा चन्द्रगुप्त—विक्रमादित्य। इस चन्द्रगुप्त के साथ विक्रमादित्य की पदवी इस कारण सम्मिलित की गई थी कि इसमें और चन्द्रगुप्त मौर्य में भेद हो जाय जो इससे ७०० बरस पहिले मगध में राज करता था।

२—समुद्रगुप्त (३२६ ई० से ३७० ई० तक) बड़ा बली राजा हुआ है। यह एक बड़ी भारी सेना लेकर सारे मध्य भारत में होता हुआ धुर दक्षिण में पहुंचा और जिन राजाओं की रियासतों में होता गया उन सब को अपने आधीन करता गया। उसने उन देशों को अपने राज में तो नहीं मिलाया पर वहां से लूट का माल बहुत लाया। यह एक बड़े राजा होने के अतिरिक्त कवि भी था और बीणा बहुत अच्छी बजाता था। इलाहाबाद की लाट पर अशोक के लेख के नीचे एक लेख इसका अङ्कित कराया हुआ भी है। यह अशोक के लेख के बहुत पीछे का है। इस से जाना जाता है कि समुद्रगुप्त सारे उत्तरीय भारत का राजा था और दखिन के राजा उसको अपना महाराजाधिराज मानते थे।

गुप्त वंश के राजाओं का सम्बत ही पृथक् है। यह ३१८ ई० से प्रारम्भ होता है। गुप्त राजा बुद्ध धर्म के अनुगामी न थे; वह वैष्णव थे और उन्होंने ने प्राचीन हिन्दू धर्म को उन्नति कराने में बड़ा उद्योग किया। बहुत दिनों तक गुप्त वंश के राजाओं ने शकों का सामना किया जो भुंड के भुंड भारत में चले आ रहे थे और उनको गंगा जी की तरैटी में घुसने न दिया।

द्वितीय चन्द्रगुप्त (३७५ से ४१३ ई० तक) समुद्रगुप्त से भी बलवान हुआ है। उसने विक्रमादित्य की पदवी धारण की जिसका अर्थ है “बाहादुरी में सूर्य”। हिन्दू ग्रन्थों में यह इस नाम का सब से प्रसिद्ध राजा पाया जाता है। यह बड़ी भारी सेना लेकर उत्तर पश्चिम की दिशा में सिंधु नदी की घाटी, पञ्जाब, सिन्ध और गुजरात और मालवे में जहां सैकड़ों बरस से शकों की अमल्दारी चली आती थी पहुंचा और उनका देश जीत के अपने राज्य में मिला लिया।

लोगों का बिचार है कि यह वही विक्रमादित्य है जो हिन्दू

धर्म का बड़ा पक्षपाती और विद्या का प्रचारक प्रसिद्ध है— इसको विक्रम भी कहते हैं। यह हिन्दू राजाओं में सब से प्रसिद्ध है; जैसा वीर था वैसाही विद्वान भी था। इसकी सभा में नौ विद्वान ऐसे थे जो उस समय के नौ रत्न कहलाते थे। इनमें सब से बड़ा विद्वान कालिदास था जिसके रचे बड़े प्रसिद्ध ग्रन्थ यह हैं, शकुन्तला, रघुवंश, मेघदूत, कुमारसम्भव; अमरसिंह जिसका बनाया हुआ अमरकोश भारतवर्ष की प्रत्येक पाठशाला में पढ़ाया जाता है; धन्वन्तरि वद्य थे। एक रत्न वररुचि ने उस समय की प्रचलित प्राकृत भाषा का व्याकरण रचा है। पांचवें रत्न प्रसिद्ध ज्योतिषी बराहमिहिर थे। पञ्चतन्त्र की कहानियां विक्रमादित्य ही के समय में लिखी गई थीं पीछे उसका अनुवाद फारसी अरबी और अनेक यूरोपी भाषा में हुआ। विक्रमादित्य के समय की बहुत सी कहानियां आज तक भारत के गांव गांव में कही जाती हैं।

४—विक्रमादित्य के समय में बुद्ध धर्म धीरे धीरे भारतवर्ष में मिट रहा था—कालिदास के ग्रन्थों से जाना जाता है कि शिवालय और ठाकुर द्वारे बहुत थे और उनमें हिन्दुओं के देवताओं की पूजा होती थी। राजा शिवजी की आराधना करता था पर बौद्धों के साथ भी दयालुता का बर्ताव करता था। इसकी सभा के नौ रत्नों में से एक बौद्ध भी था।

(४) हर्ष ।

(४५० ई० से ५२८ ई० तक)

गुप्त वंश का पराजय उन मङ्गोल जातियों के हाथ से हुआ जो हर्ष कहलाती थीं और ४५० ई० के लगभग पञ्जाब में आकर बस

गई थीं। यहां से चलकर यह लोग यमुना जी की तरफ़ी में पहुँचे और उस समय के गुप्त राजा को परास्त किया। इनके सर्दार का नाम तूरमान था। उसने ५०० ई० के लगभग अपने को मालवे का राजा बनाया और महाराजा की पदवी धारण की—उसके पीछे उसका पुत्र मिहिरिकुल गद्दी पर बैठा। यह बड़ा क्रूर था। इसने इतने मनुष्यों का बध किया कि अन्त में मगध के राजा बालादित्य ने मध्य भारत के एक राजा यशोधर्मन की सहायता से एक बड़ी सेना लेकर उसका सामना किया और ५२८ ई० में मुलतान के पास कोदरौर के स्थान पर उसे परास्त किया और उसको और उसकी सेना को भारत से निकाल दिया। हूण भारत में २०० बरस के लगभग रहे। बहुत से हूण तो कहीं कहीं बस गये। गुप्त वंश के राजा उनके निकाले जाने के कोई २०० बरस पीछे तक यानेश्वर में राज करते रहे।

(५) हर्ष या शीलादित्य ।

बौद्ध समय के अन्तिम काल का बड़ा राजा हर्ष हुआ है। यह ६०६ ई० से ६४८ ई० तक सतलज और यमुना के बीच के देश पर राज करता था। इसकी राजधानी यानेश्वर थी जिसका पुराना नाम कुरुक्षेत्र है। इसने शीलादित्य की पदवी धारण की और यह उत्तरीय भारत का राजाधिराज कहा जाता था। इसके पीछे हिन्दू राजाओं में कोई ऐसा बलवान नहीं हुआ जो इस देश का महाराजाधिराज कहलाया हो। पञ्जाब से लेकर आसाम तक गङ्गा और सिंधु की तरफ़ियों की कुल रियासतों को जीतने में इसे ३० बरस लगे थे। इसने दक्खिन को जीतने का भी उद्योग किया पर इसका मनोरथ पूरा न हुआ।

२—इसके राज्य का पूरा वृत्तान्त मिलता है। पहिले तो एक चीनी यात्री ह्वेनत्सांग के लेख से जो कुछ काल तक उसके दरबार में रहा था, दूसरे कवि बाण की लिखी हुई पुस्तक हर्ष चरित में। हर्ष बौद्ध मत का था पर ब्राह्मणों और हिन्दू धर्म का ऐसा आदर करता था जैसे निज धर्म का। कन्नौज में बौद्ध मत के सौ बिहार थे तो हिन्दुओं के मन्दिर दो सौ थे। ६३४ ई० में शीलादित्य ने एक बड़ी सभा की। इस में २१० राजा आये थे जिन्होंने उसको अपना महाराजाधिराज होना स्वीकृत किया। इस समाज में राजा के सामने ब्राह्मण पण्डितों और बौद्ध भिक्षुओं में कई शास्त्रार्थ हुए। पहिले दिन सभा में बुद्ध जी की मूर्ति स्थापित की गई दूसरे दिन सूर्य की तीसरे दिन शिवजी की। ७७ दिन तक शीलादित्य ने सब को भोज दिया फिर अपना सारा धन, आभूषण और महल का सराजाम बौद्ध और हिन्दू धर्म के बिचार के बिना सब को बांट दिया। इसके पीछे राजसी वस्त्र भी उतार दिये और सन्यासियों का बाना पहिन लिया जैसे कि बुद्ध जी ने बाप के महल से बिदा होने के समय धारण किया था।

हर पांच बरस पीछे शीलादित्य ऐसाही करता था—गया जी से थोड़ी दूर नालिन्द में एक बहुत बड़ा बिहार था जहां १०,००० भिक्षुक धार्मिक पुस्तकों, शास्त्रों और आयुर्वेद के ग्रन्थों के पढ़ने में अपना समय व्यतीत करते थे।

१५—बौद्ध समय में भारतवर्ष की अवस्था ।

(ईसा से २०० बरस पहिले से ६०० ई० तक ।)

१—हम पहिले लिख चुके हैं कि बौद्ध मत बुद्ध जी का चलाया हुआ था जिनका जन्म मगध देश में हुआ था और वहीं उनकी मृत्यु भी हुई थी । इस कारण मगध को बौद्ध मत की जन्म-भूमि कह सकते हैं । सारे संसार के बौद्ध इस स्थान को अपना तीर्थ मानते हैं और कपिलवस्तु का जहां उनके मोक्ष की राह बतानेवाले पैदा हुए और बुद्ध-गया का जहां उनको मोक्ष प्राप्त हुआ और उस बड़ के वृक्ष का जिसके नीचे उन्होंने ने अपने धर्म के उपदेश दिये बड़ा आदर और सम्मान करते हैं । बहुत से देशों में बुद्ध मत ही का डंका बज रहा था । सैकड़ों बरस तक इन देशों के धर्मात्मा वैद्य, बुद्ध जी की जन्म-भूमि उनकी तपस्या और मृत्यु के स्थान की यात्रा और दर्शनों के निमित्त आया करते थे । बहुत से यात्री चीन से आये । इनमें से दो ऐसे थे जिन्होंने ने भारत की अवस्था जो अपनी आंखों देखी या कानों सुनी थी लिखी है । पहिला फाह्यान जो लगभग ४०० ई० के और दूसरा हीनचूंग जो ६३० ई० में आया था । हिन्दू प्रायः अपने देश का वृत्तान्त नहीं लिखा करते थे इस कारण चीनी यात्रियों के वृत्तान्त को बड़े आदर से देखना चाहिये ।

२—समुद्रगुप्त की मृत्यु के पीछे जब गुप्त वंश के राजा भारत में राज कर रहे थे फाह्यान भारत में उपस्थित था । यह काबुल होकर आया था और पश्चिम से पूर्व की दिशा में सारे भारतवर्ष में होता हुआ गङ्गा जी के मुहाने से जल-यान के द्वारा लङ्का पहुँचा । राह में पंजाब और भारत के जो जो प्रसिद्ध नगर आये

उसने सब को सैर की। वह कहता है कि उत्तरीय भारत के लोग जीव-हिंसा नहीं करते थे मदिरा नहीं पीते थे, और चाण्डालों अथवा नौच जातियों के अतिरिक्त कोई लस्सुन या प्याज़ नहीं खाता था। जो लोग शिकार करते थे अथवा मांस बेचते और खाते थे वह चाण्डाल थे। इनके अतिरिक्त कोई ऐसा काम नहीं करता था। राजा बड़ी नरमो के साथ शासन करता था। जहाँ जिसका जी चाहे जाय आये, कोई रोक टोक न थी। न किसी भांति की कठिनाई थी। जो मनुष्य शास्त्र के विरुद्ध चलते थे राजा उन्हें दंड देता था। बागियों को भी प्राणदंड नहीं दिया जाता था; केवल उनका दाहिना हाथ कटवा दिया जाता था। सौदा सुलुफ़ के लेने देने में कौड़ियां चलती थीं। जगह जगह पर बिहार बने हुए थे। इनमें हज़ारों भिक्षु रहते थे। बिहारों में भिक्षुओं के लिये राजा बिक्रौना, चटार्ड, खाने पीने की सामग्री कपड़ा लत्ता देता था। मनुष्यों और पशुओं के लिये बहुत से चिकित्सालय थे जहाँ बड़े बड़े विद्वान वैद्य चिकित्सा करते थे। रोगियों को औषध के साथ खाना भी चिकित्सालय से ही बिना मूल्य मिलता था। इससे प्रगट है कि फ़ाह्यान के समय में अथवा ४०० ई० के लगभग उत्तरीय भारत में बौद्ध धर्म ही का प्रचार था।

३—हौनचांग फ़ाह्यान से २२० बरस पीछे आया और भारतवर्ष में बहुत दिनों तक रहा। उसने भी भारत की दशा और समेत वर्णन की है। इसने भी काबुल की दिशा से भारत में प्रवेश किया और काश्मीर, पंजाब और भारतवर्ष के बड़े बड़े नगर देखता भालता उड़ीसा, कलिङ्ग और दक्षिण भारत से होता हुआ पश्चिमीय समुद्रतट पर जा पहुँचा और वहाँ से महाराष्ट्र राज-पूताना, गुजरात और सिन्ध में गया अर्थात् उसने सारे भारत में चक्कर लगा डाला। इस चक्कर में उसको पन्द्रह बरस लगे थे।

४—हैनचांग जहां गया वहीं उसने हिन्दू और बौद्ध धर्म को साथ साथ चलता और बढ़ता हुआ पाया। किसी किसी प्रान्त में जैसे उड़ैसा, काश्मीर और दखिन में बुद्धमत बढ़ा हुआ था और किसी में हिन्दू धर्म का अधिक प्रचार था। हैनचांग का कथन है कि बहुतेरे देशों में जहां मैं गया राज-कार्य बड़ी सुगमता से होता था और प्रजा सुखी और निश्चिन्त थी। सब लोग चाहे वह बौद्ध हों चाहे हिन्दू जो जी में आता था सो करते थे और जिसकी चाहते थे उसकी आराधना करते थे और एक धर्म के लोग दूसरे धर्मावलम्बियों से बैरभाव नहीं रखते थे। विद्वानों की प्रतिष्ठा होती थी।

५—यद्यपि बौद्ध समय में ऐसे बड़े कवि नहीं हुए जैसे इससे पहिले के समय में हुए थे या उसके पीछे, फिर भी विद्या और कला के सीखने सिखाने में बड़ा परिश्रम किया जाता था और उस समय के हिन्दुओं ने बहुत सी नई बातें निकालीं थीं। जब यूनानियों ने भारत में प्रवेश किया तो उन्होंने भारतवर्ष के विद्वानों से बहुत सी बातें सीखीं और हिन्दुओं की भी यूनानियों से बहुत कुछ लाभ हुआ।

६—बौद्धमतवाले जीव रक्षा को अपना बड़ा कर्तव्य मानते थे। आप हिंसा करना तो दूर रहा दूसरों की भी इससे रोकते थे। हम ऊपर लिख चुके हैं कि उन्होंने ने मनुष्यों और पशुओं के निमित्त अलग अलग चिकित्सालय स्थापन किये थे। आयुर्वेद की उन्नति में बड़ा परिश्रम किया जाता था। इस विद्या में सब से निपुण चरक था। इसने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ चरकसंहिता में बड़े व्यौर के साथ जड़ी बूटियों से हजारों औषधियों के बनाने की रीतियां लिखी हैं। यूनानियों और अरबवालों ने इस विद्या की बहुत सी बातें चरक से सीखी थीं। आयुर्वेद के अतिरिक्त हिन्दू जराही में

भी बड़े निपुण थे। इस विद्या के विषय में सुश्रुत की पुस्तक बड़ी प्रसिद्ध है। उसने १०० से अधिक जर्जरही औजारों के नाम और उनकी सेवन विधि दी है। जहां इन यन्त्रों का ब्यौरा है वहां यह भी लिखा है कि इनमें से कोई कोई ऐसे तीक्ष्ण थे कि बाल को चीर कर दो कर देते थे।

७—इस समय के हिन्दू अपने सकालीन यूनानियों से अङ्कगणित और बीजगणित में अधिक ज्ञान रखते थे। हिन्दुओं की प्राचीन ज्योतिषशास्त्र की पुस्तकें जो कि अब तक प्रचलित हैं इसी समय में बनाई गई थीं। इनको सिद्धान्त कहते हैं। कहते हैं कि यह सिद्धान्त गिन्ती में अठारह थे। सब से प्राचीन सिद्धान्त सिकन्दर के आक्रमण से कुछ ही पीछे लिखा गया था। इसमें यूनानियों का भी नाम आया है। हो सकता है कि इस ग्रन्थ के रचयिता ने यूनानियों से भी कुछ सीखा हो। एक दूसरे सिद्धान्त में बाख़र के यूनानियों और शकों का भी वर्णन है। और सिद्धान्त उस समय रचे गये थे जब बौद्ध समय की आयु पूरी होने को थी। इस समय का बड़ा ज्योतिषी आर्यभट्ट है जो ६०० ई० के लगभग पाटलीपुत्र में रहता था। उसका कथन है कि पृथ्वी अपने चारों ओर लट्टू की भांति घूमती है। वह चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण का कारण भी ठीक ठीक जानता था।

८—व्याकरण भी बड़े परिश्रम के साथ पढ़ा जाता था और बहुत सी पुस्तकें इस विषय पर लिखी गई थीं। मनु जी का धर्मशास्त्र जो अब मनुसंहिता के नाम से प्रसिद्ध है ईसा के जन्म के समय में सङ्कलित किया हुआ जान पड़ता है।

१६—पुराण ।

१—५२८ ई० में जब मगध के राजा बालादित्य और यशोधर्मन ने हूणों को हरा कर हिमालय के उत्तर भगा दिया था, तब से १००० ई० तक कोई बड़ा विजयी राजा उत्तर के देशों से हिमालय के दरों में होकर नहीं आया । इसका एक कारण जैसा कि हम आगे लिखेंगे यह था कि तुर्किस्तान, ईरान और मध्य एशिया में एक नये धर्म का प्रचार हो रहा था । यह धर्म इसलाम था । अरब के रहनेवाले पहिले इन देशों के जीतने में लगे थे । जब अपनी ही जान के लाले पड़ रहे थे तो उन देशों के रहनेवाले भारत पर कैसे चढ़ाई कर सकते थे ?

२—इस समय हिन्दू बाहर की चढ़ाइयों और उपद्रवों से बचे हुए थे ; चारों ओर राजपूत राजा राज करते थे । उन्होंने ने बड़े बड़े राज अपने अधिकार में कर लिये ; शिवालय और ठाकुर-हारि बनवाये । देश धन सम्पत्ति से भरा पुरा था । बुद्धमत घट रहा था, हिन्दूधर्म की उन्नति हो रही थी । इससे यह न समझना चाहिये कि बुद्धमत नष्ट हो गया था और हिन्दूधर्म उसकी जगह स्थापित हो गया था । सच तो यह है कि सैकड़ों बरस से बुद्धमत घट रहा था और हिन्दू धर्म उभरता जाता था । एकही कुल में कुछ लोग हिन्दू और कुछ बौद्ध होते थे । बहुतेरे राजा दोनों धर्मों को बराबर मानते और दोनों की सहायता करते थे, फिर भी हम यह कहना उचित समझते हैं कि विक्रम के समय से अर्थात् ४०० ई० साल के लगभग बुद्धमत की घटती और हिन्दूधर्म की बढ़ती होने लगी, और होते होते १००० ई० तक बुद्धमत भारतवर्ष से निकल गया और उसके स्थान पर हिन्दू धर्म जम कर बैठ गया । इसके दो कारण हैं, पहिला यह कि इस समय

हिन्दुओं में बड़े बड़े विद्वान और उपदेशक हुए जिनकी शिक्षा का देश पर बड़ा प्रभाव पड़ा। दूसरा कारण यह है कि राजपूत राजा आप बड़े वीर थे। वह बुद्ध के उस सिखावन को कब मान सकते थे जिस में लड़ाई दंगा मार काट निषिद्ध है।

३—पुराण का अर्थ पुराना है और पुराण उन ग्रन्थों का नाम है जो पुराने समझे जाते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दुओं की बहुतरी पुस्तकें पुरानी हैं क्योंकि इनमें बहुतसी कम से कम १२०० बरस पहिले की बनी हुई हैं। फिर भी यह ग्रन्थ वेद, रामायण और महाभारत से पुराने नहीं हैं। यह पुराण इनसे बहुत पीछे बने। इन पुराणों में हिन्दू धर्म का वह नया रूप देख पड़ता है जो बुद्ध धर्म के निकल जाने पर देश में प्रगट हुआ। अब वेद के पुराने देवताओं की पूजा की धूम नहीं थी। अग्निदेव की पूजा में जो यज्ञ और हवन हुआ करते थे वह भी बन्द हो गये थे। मनुजी के समय में मन्दिर बनवाकर कुछ लोग इनमें देवपूजन करने लगे थे। इसको मनुजी बुरा मानते थे। उनकी इच्छा थी कि लोग फिर पुराने वैदिक देवताओं की सरन लें। पर अब समय बहुत बदल गया था और वैदिक धर्म लुप्त हो गया था। वेद में सूर्यदेव का एक नाम विष्णु भी है क्योंकि वह सारे संसार को गरमी पहुँचाता और सब का प्रतिपालन करता है। रुद्र गरजनेवाले काले बादल को कहते हैं जिसमें विजली कौंधती है और जो उसके आगे पड़ता है उसे खण्ड खण्ड कर डालती है। आजकल के हिन्दू धर्म में विष्णु परमेश्वर के उस रूप को कहते हैं जो संसार का आधार है; रुद्र या शिव परमेश्वर का वह रूप है जो संसार का संहार करता है। नये धर्म के हिन्दुओं ने दोनों को भिन्न माना है और दोनों की बड़ी मानता और पूजा होती है। ब्रह्मा भी एक देवता हैं। ब्रह्मा का नाम वेद में आया है। नये धर्म ने इनको ईश्वर की

त्रिमूर्ति का एक रूप माना और यह परमेश्वर का वह रूप है जो सृष्टि रचता है। पुराण के दोही प्रधान देवता विष्णु और शिव हैं। कालिदास के समय में सर्वत्र यही धर्म फैला था और यही देवता पूजे जाते थे।

४—पुराण बहुत से हैं। इनमें बहुतेरे स्थान, पहाड़ और नदियों के अधिष्ठाता देवताओं की पुरानी कथायें लिखी हैं। बड़े प्रामाणिक पुराण १८ हैं। यह विक्रम के समय से तीन सौ बरस पीछे तक अर्थात् सन् ७०० ई० तक बने थे। १८ पुराणों में से ६ में विष्णु की ६ में शिव की और ६ में ब्रह्मा की महिमा का वर्णन है और सब के सब एक न एक देवता के नाम से प्रसिद्ध हैं।

५—जैसे पुराणों में देवताओं की कथायें हैं वैसे ही उस समय के बने हुए उन ग्रन्थों में जिनको धर्मशास्त्र कहते हैं मनुष्यों के धर्म कर्म आचार व्यवहार लिखे हैं।

६—इस समय की पौराणिक काल कह सकते हैं क्योंकि इन्हीं दिनों पुराण रचे गये थे। अब भी वही काल चला आता है क्योंकि हिन्दू धर्म अब भी उसी ढङ्ग पर चल रहा है जैसा पुराणों में दिखाया गया है।

१७—पौराणिक समय के हिन्दू महात्मा ।

१—पौराणिक समय में कई हिन्दू महात्मा हुये जिन्होंने ने विष्णु और शिव की पूजा के प्रचार में बड़ा परिश्रम किया। इन लोगों के उद्योग का यह परिणाम हुआ कि बुद्धमत हिन्दुस्थान से नष्ट हो गया और उसकी जगह हिन्दू धर्म स्थापित हो गया।

२—इन महात्माओं में सब से पहले शङ्कराचार्य हुए। इनका जन्म दक्षिण में समुद्र के तीर मलयवार देश में हुआ था।

कुमारिलभट्ट, जो बड़े पण्डित थे और बिहार से दखिन में बौद्ध धर्म को हटाने और अपना धर्म फैलाने आये थे, इनके गुरु थे ; इन्हीं ने सारे भारतवर्ष में अपने धर्म की घोषणा की और केवल ३२ वर्ष की अवस्था में केदारनाथ तीर्थ पर जो हिमालय पहाड़ पर है परलोक सिधारे। यह शिवजी के उपासक थे और शिव और पार्वती की पूजा करते थे। पार्वती को हिन्दू लोग दुर्गा भी कहते हैं और तूरानी वंश के हिन्दू जो आर्य वंश से नहीं हैं इनको काली के नाम से पूजते हैं। दक्षिण में शङ्कराचार्यमतवाले स्मार्त के नाम से प्रसिद्ध हैं।

शङ्कराचार्य ने श्रीगिरि पर एक मठ बनाया था। यह पहाड़ी पश्चिमीय घाट का एक भाग है जो मैसूर राज्य में पड़ती है। यहां से तुंगा नदी निकलती है। स्मार्त सम्प्रदाय का गुरु अब भी इस मठ में रहता है और लाखों शैवों का आचार्य है। शङ्करा-



रामानुज स्वामी ।

चार्य ने तीन मठ और बनाये थे,— एक हिमालय में बद्रीनाथ पर दूसरा काठियावाड़ के द्वारका तीर्थ में और तीसरा उड़ीसा की जगन्नाथ पुरी में।

३—स्वामी रामानुज का जन्म ११५० ई० के लगभग एक गांव में हुआ था। वह गांव अब नहीं है और उसकी जगह अब मद्रास नगर बसा है। लड़कपन ही में इनके पिता ने इनको कांची भेज दिया जिसको आज

कल कांजीवरम् (काञ्चीपुरम्) कहते हैं। कांची उस समय चोल वंश की राजधानी थी। यहां के प्रसिद्ध पण्डित और विद्वानों से शास्त्र पढ़कर त्रिचनापली के पास श्रीरंगपत्तन में आ पहुँचे

जहां उन्होंने ने वष्णव धर्म का प्रचार किया और इस धर्म की उन्नति करने के लिये संस्कृत भाषा में कुछ ग्रन्थ भी रच डाले ।

४—कुछ दिन पीछे स्वामी रामानुज दक्षिण से चले और सारे भारतवर्ष में फिरे । जहां जाते शैवमत के विरुद्ध वैष्णव धर्म सिखाते । चोलाका राजा शैव था उसने इनको मरवाना चाहा । स्वामीजी इष्ट पर मैसूर चले गये । यहां एक जैनी राजा थे । वह इनके उपदेश से श्रीवैष्णव हो गये । रामानुज ब्राह्मणों और जंची जाति के हिन्दुओं को उपदेश देते थे । इनके सम्प्रदायवाले श्रीवैष्णव कहलाते हैं और इनका गुरु कांची (कांजीवरम्) में रहता है ।

रामानुज के १०० बरस पीछे इनके सम्प्रदाय में एक बड़े प्रसिद्ध महात्मा रामानन्द हुए जिन्होंने ने उत्तर भारतवर्ष में विष्णु को परमेश्वर मानकर अपना धर्म चलाया । यह बनारस के रहने-वाले थे पर आस पास के देशों में बहुत घूमते थे और बहुधा नीच जातियों को उपदेश देते थे । इस सम्प्रदाय के ग्रन्थ हिन्दी भाषा में हैं । स्वामी रामानन्द के बारह चले थे ; सब के सब नीच जाति के थे ।

कबीर साहेब का जन्म १३८० में हुआ और १४२० में इनका देहान्त हो गया । स्वामी रामानन्द के १२ चेलों में से एक यह भी थे । इन्होंने ने भी अपने गुरु के मत के अनुसार विष्णु भगवान् को परमेश्वर माना और उन्हीं के भजन का उपदेश दिया । इनके समय में मुसल्मान उत्तर हिन्द में फैल गये थे । कबीर साहेब ने हिन्दू मुसल्मानों के धर्म को एक करने का बड़ा उद्योग किया ।

५—कबीर साहेब जातिपात के भेद और मूर्तिपूजा के विरोधी थे और मूर्तिपूजा को पातक मानते थे । दोनों विषयों पर

आप उपदेश देते फिरते थे। वह कहते थे कि ईश्वर एक है, हिन्दू मुसलमान दोनों को उसकी बन्दगी करनी चाहिये; ईश्वर घटघटव्यापी है, मन्दिरों और मसजिदों में नहीं रहता। कबीर



कबीर ।

जी संसार के धंधों को मायाजाल कहते थे। उनका मत यह था कि जीवात्मा जब तक ईश्वर को पहिचान कर उसके प्रेम में मग्न न हो जाय उसको शान्ति नहीं मिल सकती। प्रसिद्ध है कि जब कबीर साहेब मरे तो हिन्दुओं ने कहा कि यह हिन्दू थे इनकी दाहक्रिया होनी चाहिये और मुसलमानों ने कहा कि यह मुसलमान थे इनकी हम गाड़ेंगे; जब कफ़न हटाकर

देखा तो थोड़े से फूलों को छोड़ कुछ न था। आधे फूल हिन्दुओं ने लिये और अपने तीर्थ काशी में उन पर एक क़तराी बनवा दी। आधे मुसलमान ले गये और उन्हें धूम धाम से गाड़ दिया।

चैतन्य महाप्रभु १४०६ ई० में जन्मे और १५२७ में मर गये। यह विष्णु के उपासक और जगन्नाथजी के भक्त थे, और इन्हीं की भक्ति का उपदेश बङ्गाले और उड़ीसा में करते रहे। यह बङ्गाली ब्राह्मण थे पर इनके मरने पर इनके सम्प्रदायवाले इनकी परमेश्वर का अवतार बताने लगे। बुद्धजी की नाईं इनका भी यह मत था कि परमेश्वर की भक्ति से ऊंची और नीची सब जाति के लोग पवित्र हो जाते हैं और परमेश्वर के छोटे से छोटे जीव को मारना महापाप है।

वल्लभ स्वामी १५२० ई० के लगभग उत्तर हिन्दुस्थान में प्रगट हुए। चैतन्य के पीछे इन्हीं ने भी विष्णु की उपासना का उपदेश किया। यह श्रीकृष्ण को विष्णु का अवतार बताते थे और कहते थे कि विष्णु उन लोगों से प्रसन्न नहीं होते जो तपस्या करते, व्रत रखते या घरबार छोड़ कर जङ्गलों और पहाड़ों में रहते हैं। भगवान् उन्हीं से प्रसन्न रहते हैं जो संसार के विषयों को भोगते और सुख से अपने दिन बिताते हैं। इनके चेले बहुधा धनी साहूकार होते हैं जिनके पास भोग विलास की सामग्री भी है और जो उसे भोगने की इच्छा भी रखते हैं।



वल्लभ स्वामी।

१८—राजपूत ।

(६०० ई० से १२०० ई० तक)

१—आर्य और प्राचीन हिन्दुओं के समय में राजा सरदार और सिपाही क्षत्रियजाति के होते थे। बुद्धमत के समय में भी जैसे बुद्ध जी आप थे वैसे ही बहुधा राजा और सरदार क्षत्रिय थे। कोई कोई शूद्र भी थे जैसे चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक मौर्य। बुद्धमत के समय के मध्य से ईसा से ५०० बरस तक पश्चिम और उत्तर भारत में सिथिया या शक जाति के राजाओं का राज रहा।

२—विक्रमादित्य के समय में सिथियावालों और क्षत्रिय राजाओं और राज्यों का नाम सुनने में नहीं आता। उनकी जगह ६०० ई०

से १२०० ई० तक जिधर देखो राजपूत राजाओं के राज्य दिखाई देते हैं। अब यह प्रश्न उठता है कि राजपूत कौन हैं ?

३—राजपूत कहते हैं कि हम क्षत्रिय हैं और श्रीरामचन्द्र जी से और प्राचीन काल के और क्षत्रियकुलों से हमारी वंशावली मिलती है। बहुतेरे विद्वानों का यह मत है कि यह दावा उनका ठीक है। राजपूत शब्दका अर्थ राजाओं का बेटा है। प्राचीनकाल के क्षत्रिय सचमुच राजाओं के बेटे होते थे। यह समझ में नहीं आता कि एकाएकी क्षत्रियों की बली जात समूल नष्ट हो गई हो। किसी किसी विद्वान का यह विचार है कि राजपूत सिथियन या शकजाति के लोग हैं जो ईस्वी सन् की पांचवीं शताब्दी में भुण्ड के भुण्ड हिन्दुस्थान के पश्चिमोत्तर भाग में आकर बस गये, या यूनान देश के रहनेवाले हैं जो शकों के पहिले हिन्दुस्थान में आकर रह गये थे। हमको यह ठीक जान पड़ता है कि राजपूतों की विशेष जातियाँ जो दिल्ली कन्नौज और मध्यदेश में राज करती थीं निःसन्देह क्षत्रिय हैं। और जातियाँ जिनका नाम पहिले ही पहिले राजपूताना मालवा और गुजरात में सुनने में आता था जहाँ शक भीड़ के भीड़ धावा मारकर बस गये सिथियन वंशके हैं। राजपूतों की जाति बहुत ऊँची है; यह लोग बड़े बीर होते हैं और लड़ने मरने में बड़े मर्द हैं। वह बुद्ध के दयाधर्म को कब मानने लगे। बुद्ध का बचन है कि किसी जीव को न मारो न सताओ। राजपूतों ने भरसक ब्राह्मणों की सहायता की, बुद्ध मत को दबाया और पुराने हिन्दूमत को नये सिरे से फैलाया। जिस समय का हम हाल लिख रहे हैं उस समय में बहुत से राजपूत राजा हुए थे। इसी से हम ६०० ई० से १२०० ई० तक राजपूतों के राज्य का समय कह सकते हैं।

४—आर्यों के समय में गुजरात को श्रीकृष्ण की द्वारका कहते

थे। पीछे इसका नाम सौरठ या सौराष्ट्र हुआ। यहां ४१६ ई० से अनुमान ३०० बरस तक वल्लभी कुल के राजा राज करते थे। जब चीनी यात्री ह्वेनचुंग सौराष्ट्र में आया तो उसने सौराष्ट्र को बड़ा शक्तिमान राज पाया और उस समय में यहां वल्लभी कुल के राजा राज करते थे। देश भरा पुरा था और प्रजा प्रसन्न थी और दूर दूर देशों से व्यापार होता था। ७४६ ई० से मुसलमानों की बादशाही तक सौराष्ट्र पर राजपूतों का अधिकार रहा। यह लोग चालुक्य कहलाते थे और अन्हलवारा या अन्हलपत्तन जिसको अब केवल पत्तन कहते हैं इनकी राजधानी थी।

५—मालवे में विक्रमादित्य की सन्तान का राज्य रहा। इस वंश में विक्रमादित्य के पीछे सब से बड़ा राजा शीलादित्य दूसरा हुआ जिसका हाल ह्वेनचुंग के लेखों से जाना जाता है। इनके पीछे राजपूत आये। और तब से मालवा की गिनती राजपूतों के बड़े बली राज्यों में होने लगी।

६—प्राचीन समय में उड़ैसा अंध्र राज्य के नाम से प्रसिद्ध था। ४७४ ई० तक यहां केशरीवंश के राजपूत राज करते थे। इनकी राजधानी भरोनेश्वर में थीं जहां उन्होंने बड़े बड़े सुन्दर मन्दिर बनवाये। इस वंश के पहिले राजा का नाम व्यातकेशरी था। प्राचीन काल में उड़ैसे में बुद्ध धर्म प्रबल था। पर केशरियों की राजधानी के नाम से सिद्ध होता है कि उनके समय में सारे देश में हिन्दू धर्म का प्रचार था और शिवजी की पूजा होती थी। केशरी राजाओं के पीछे गंगापुत्र वंश का अधिकार हुआ। यह भी राजपूत थे। ११३२ ई० से १५३४ ई० तक उड़ैसा में इनका राज रहा। गंगापुत्र विष्णु के उपासक थे। पुरी में जगन्नाथ जी का प्रसिद्ध मन्दिर इसी कुल के एक राजा का बनवाया हुआ है।

७—नर्मदा नदी से कृष्णा नदी तक दक्खिन देश में ५०० ई०

से १२०० ई० तक चालुक्य राजपूत शासन करते थे। इस वंश की दो शाखाएं थीं; पूर्वीयशाखा की राजधानी गोदावरी नदी के तीर पर राजमहेन्द्री और पश्चिमीय की महाराष्ट्र देश में कल्याण नगरी थी। अब इन राजाओं के नामही नाम रह गये हैं।

८—मैसूर देश ८०० ई० से १३१० ई० तक बल्लालवंश राजपूतों के हाथ में रहा। द्वारसमुद्र इनकी राजधानी थी। यहां उन्होंने हलीबैद का प्रसिद्ध मन्दिर बनवाया। मुसलमानों ने इनको जीत कर देश अपने अधिकारों में कर लिया।

९—तिलङ्गाने में ११०० ई० से १३३३ ई० तक ककाती वंश के राजपूत राज करते थे। उनकी राजधानी वारङ्गल थी। १३२३ ई० में मुसलमानों ने वारङ्गल ले लिया और उसको अपनी राजधानी बनाकर गोलकुंडे का राज स्थापित किया।

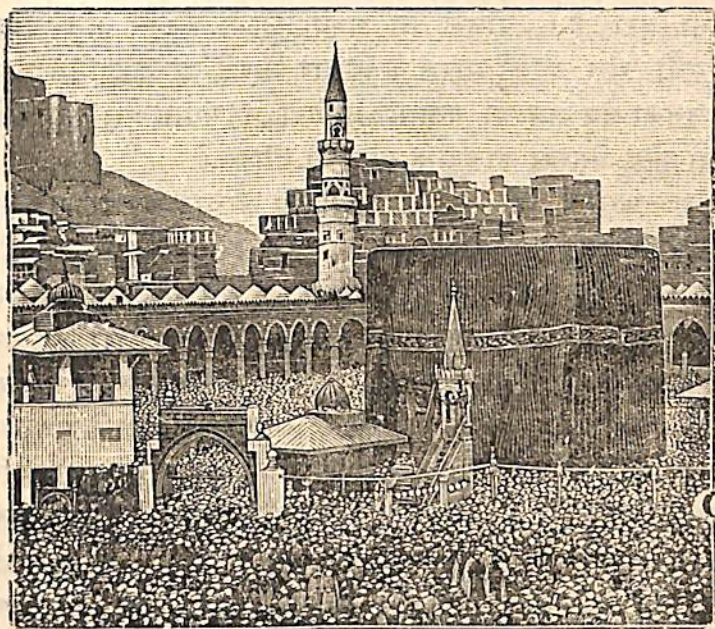
१०—बंगाले में ५०० बरस तक पाल और सेन वंश के राजा राज करते थे। ८०० ई० से लेकर १०५० ई० तक पाल राजाओं ने राज किया और १०५० ई० से १३०० ई० तक सेनवंश का अधिकार रहा। इसके पीछे यह देश मुसलमानों ने जीत लिया।

११—देवगिरि जो महाराष्ट्र में है वहां ११०० ई० से १३०० ई० तक यादव वंशी राजपूत राज करते थे और यह कहते थे कि हम श्रीकृष्ण की संतान हैं। १३०० ई० के लगभग मुसलमानों ने देवगिरि को जीतकर उसका नाम दौलताबाद रख दिया।

१२—राठौर चौहान और तोमर राजपूतों के प्रसिद्ध वंश हैं। ११८० ई० के लगभग कन्नौज अजमेर और देहली में इनका शासन था। ११८० ई० में गोर मुसलमान भारतवर्ष में आ गये।

१६—मुसलमान ।

१—अरब देश का बहुत बड़ा भाग ऊसर और बंजर है ।
यहां न नदी है न भील । सारा देश रेत से ढका है । कहीं कहीं
हरा भरा टुकड़ा भी मिल जाता है जहां घास उगती है और कुंए
या सोतों से पानी मिल जाता है । अगले समय में इस देश में



काबा-मक्का ।

अंगली जातियां बसी थीं और वह अपने खेड़ां आर गल्लों के
जिये घास चारे की खोज में घर बार साथ लिये एक जगह से
दूसरी जगह और दूसरी जगह से तीसरी जगह फिरा करती थीं ।

लोग सब जंगली थे। एक दूसरे से लड़ा करते थे। इनके आचार व्यवहार भी बुरे और पशुओं के से थे।

२—ईसा से अनुमान ६०० बरस पीछे अरब में एक नबी (ईश्वर के दूत) प्रगट हुए। इनका नाम महम्मद था। अरब देशवालों के बुरे आचार देख कर इनका जी बहुत कुढ़ा और उनके सुधारने के लिये उनसे जो कुछ हो सका इन्होंने किया। इनका उपदेश यह था कि ईश्वर एक है, मूर्तिपूजा पाप है, आपस में लड़ना बुरा है। पहिले तो अरबवालों ने इनकी बात ध्यान से न सुनी और उनको मारने के विचार में रहे पर कुछ दिन बीतने पर उनका द्वेष कम हो गया। बहुतेरों ने अपनी मूर्तियां तोड़ डालीं और पैगम्बर साहब के साथ हो गये।

३—अरब के जो कुल अपने पुराने आचार छोड़ना न चाहते थे उन्होंने ने महम्मद साहब और उनके अनुगामियों को बहुत सताया पर अन्त को वह भी परास्त हो गये और ६३२ ई० तक जिस साल महम्मद साहब का अन्तकाल हुआ सारा देश उनके बस में हो गया। जिस धर्म का प्रचार महम्मद साहब ने किया उसको इसलाम कहते हैं और इस धर्म पर चलनेवाले मुसलमान या मुसलिम कहलाते हैं। मुसलमान अपने कुरान को परम पवित्र आकाश से उतरी किताब मानते हैं और कहते हैं कि इसलाम धर्म का प्रचार ६२२ ई० से हुआ जब महम्मद साहब मक्के से मदीने चले गये थे। इस प्रवास को हिजरा या हिजरत कहते हैं और हिजरी सन तभी से शुरू होता है। मुसलमानों का विश्वास है कि ईश्वर एक है महम्मद साहब उसके दूत हैं। ईश्वर के सामने सब मुसलमान बराबर हैं और भाई भाई हैं। इसलाम में हिन्दुओं की सी जातिपात नहीं है।

४—जब अरब के सब रहनेवाले मुसलमान हो गये और एक

हाकिम के आधीन हो गये तो उनकी एक बड़ी प्रबल जाति बन गई। आपस में लड़ना कटना बन्द हो गया था तौभी बड़े वीर लड़ाके थे। इसलाम दीन से उनके मन में बड़ा उत्साह हो गया और यह समायो कि और देशों में अपने धर्म का प्रचार करें। जो लोग खुशी से मुसलमान हो जायें उनको भाई समझें और उनके साथ अच्छा बरताव करें। ईश्वर धर्म की लड़ाई (जिहाद) से खुश होता है और जो मुसलमान जिहाद में मारे जाते हैं वह सीधे बिहिश्त (वैकुण्ठ) जाते हैं। और जो लोग आधीन होने पर अपना धर्म न बदलें उन्हें एक महसूल देना पड़ता है जिसका नाम जिज़िया है।

५—अरबवाले पहिले उन देशों की ओर चले जो उनके उत्तर थे और उन्हें सहज ही जीत लिये। लट खसोट का बहुत सा धन उनके हाथ लगा तो उनको यह चाह हुई कि और देश जीतें। परिणाम यह हुआ कि देश पर देश जीत लिये गये और सौ बरस के भीतर फ़ारस, तुर्किस्तान, अफ़ग़ानिस्तान और आस पास के सारे देश जो दारा और अफ़रासियाब के आधीन थे उनके बस में आ गये और उनके रहनेवाले मुसलमान हो गये।

६—फ़ारस में कुछ लोग ऐसे भी थे जो अरबवालों के आधीन न हुए और न जिन्होंने इसलाम धर्म अङ्गीकार किया और फ़ारस से निकल कर भारतवर्ष में चले आये। यह लोग १२०० बरस से यहीं बसे हैं और पारसी कहलाते हैं और पुराने आर्यों की तरह आग को परमेश्वर की ज्योति समझते हैं। पारसी बम्बई हाते में समुद्र के तीर नगरों में रहते हैं; बड़े नेक शांति चाहनेवाले और चतुर व्यापारी हैं और धर्म और देशहित में बहुत सा धन खर्च करते हैं।

७—जो देश हिन्दुस्थान के उत्तर थे उनमें भी अरबवालों ने

लूट पाट शुरू की और फ़ारस और तातारवालों की इतना अवकाश न दिया कि हिन्दुस्थान पर धावा मारें। इस कारण कई सौ बरस तक हिन्दुस्थान इनकी चढ़ाईयों से बचा रहा।

२०—महमूद गज़नी ।

(८८७ ई० से १०३३ ई० तक)

१—अब से ८०० ई० पहिले अफ़ग़ानी और तुर्किस्तानी जातियां भारत में उसी तरह आ रही थीं जैसे पहिले कभी आर्य यूनानी या सिथियन आये थे। इस समय अरबवालों को पूर्व और उत्तर देशों के जीतने के लिये घर से निकले ३५० बरस बीत चुके थे। तुर्किस्तान, फ़ारस और अफ़ग़ानिस्तान के रहनेवाले सब मुसलमान हो गये थे। अरबवालों के बहुत कुल उनमें बस गये थे। इन लोगों के मन में भी वही उत्साह था जो अरबवालों में था।

२—इस समय अफ़ग़ानिस्तान का बड़ा शहर गज़नी था और एक तुर्क जिस का नाम महमूद था यहाँ का बादशाह था। इसका बाप पंजाब के राजा जयपाल से कई बार लड़ा और उसको जीत कर गज़नी और सिन्ध के बीच का राज्य अपने आधीन कर लिया। भारत की गिनती उस समय संसार में धनी और भरे पूरे देशों में होती थी। इस के व्यापार की ओर अपने पड़ोस के देशों से मिलती हुई यूरोप तक पहुँचती थी। बड़ा बड़ा मंहंगा सामान यहाँ से जंटों पर लदकर अफ़ग़ानिस्तान के दरों को राह दूर दूर देशों में जाता था। महमूद ने अपने लड़कपन ही से ऐसे व्यापारी अपने बाप के राज्य से होकर जाते देखे थे। व्यापारियों से बातें किया करता था, और वह इस से कहा करते थे कि हिन्दुस्थान में बड़े बड़े शहर हैं, और बड़े बड़े

मन्दिर हैं जिनके धन सम्पत्ति का वारापार नहीं। महम्मूद यह कहता था कि जब मैं बड़ा होकर बादशाह हो जाऊंगा तो हिन्दू राजाओं से लड़ूंगा।

३—तीस बरस की उमर में महम्मूद सिंहासन पर बैठा। और जो कुछ यह पहिले कहा करता था वह सब इसने करके दिखा दिया। जब तक बरसात रही और दर्रे बरफ से भरे ठके थे यह चुप चाप बैठा रहा। इस के पीछे दल बादल से भारत पर चढ़ आया और लूट का माल लाद कर ले जाने को बहुत से कंट और घोड़े अपने साथ लाया। भारत में आते ही उसने देखा कि जयपाल जो उसके बाप से लड़ चुका था उसका सामना करने को तैयार है। पर महम्मूद और उसके पठान साथियों ने जयपाल को भगा दिया और बहुत सा धन लूटकर गज़नी ले गया। जयपाल ग्लानि के भारे अपना राज अपने बेटे अनङ्गपाल को सौंप कर आप जीते जी चिता पर बैठ गया और जलकर मर गया।

४—अनङ्गपाल ने देखा कि हिन्दुस्थान को हर घड़ी बाहरी दुष्टों का डर है। उसने उज्जैन, गवालियर, कन्नौज, दिल्ली और अजमेर के राजाओं के पास यह सन्देश भेजा कि महम्मूद अगले बरस फिर भारत पर धावा मारेगा; सब लोग मिलकर उसका सामना करें। राजाओं ने मान लिया और राजपूत दलबादल समेत पंजाब में पहुँच गये। पर ठंढे देश के पठान गरम देश के रहनेवाले राजपूतों से अधिक बली थे। लड़ाई में राजपूतों के पैर उखड़ गये। महम्मूद ने आगे बढ़कर नगरकोट का मन्दिर लूटा; चांदी सोना हीरा मोती के ढेर जो बरसों से धार्मिक हिन्दुओं के चढ़ाये थे सब लूट खसोट कर गज़नी ले गया।

५—गज़नी पहुँच कर महम्मूद ने बड़े भारी भोज का सामान

किया। सारे अफ़ग़ानों को बुलाया; तीन दिन तक सब की दावत की और हिन्दुस्थान से जो हीरा मोती रेशम, कमखाब, सोना, चांदी लूट कर ले गया था चौकियों पर सजाकर सब को दिखाया। सरदारों और अमीरों का तो कहना ही क्या है उन को बड़े दाम की चीजें भेंट दी गईं पर ग़रीब अफ़ग़ान भी कोई ऐसा न था जो उस दावत से खाली हाथ गया हो और जिसने अच्छी भेंट न पाई हो।

६—महमूद ऐसी ही रीति से लालच दिखा कर फुसलाकर पठानों को हिन्दुस्थान पर चढ़ा कर लाया था। परिणाम यह हुआ कि उसके उल्हाह का समुद्र उमड़ा पड़ता था। जब जब आता उसके पांव आगे ही पड़ते थे। जहां कहीं किसी धनी, शहर या मन्दिर का पता पाता अपनी पल्लन लेकर चढ़ दौड़ता; मन्दिर ढहवा दिये, मूर्तियां तोड़ीं; पुजारियों का सैकड़ों बरस का जोड़ा बटोरा धन लूट लिया। राजपूत राजा आपस में लड़ते थे पर मन्दिरों के माल पर हाथ न डालते थे। इस कारण हज़ारों बरस से मन्दिरों में ढेर का ढेर धन इकट्ठा हो गया था। ईरानी और अफ़ग़ान इस धन को लूटने के लिये उधार खाये बैठे थे। जहां महमूद ने हिन्दुस्थान पर धावा मारने के लिये पल्लन इकट्ठी करने का हुकुम दिया यह लोग आंधी की तरह उठे और चले आये। फिर महमूद की चढ़ाइयों में पल्लन न बढ़ती तो क्या होता।

७—महमूद सब से पिछली बार १०२४ ई० में हिन्दुस्थान पर चढ़ आया और सोमनाथ के मन्दिर पर पहुंचा। यह गुजरात देश में बहुत पुराना और बड़ा मन्दिर था; और अपने असंख्य धन के लिये हिन्दुस्थान में प्रसिद्ध था। सिन्ध के रेतिले देश में साढ़े तीन सौ मील की यात्रा करके महमूद इस मन्दिर पर चढ़

दौड़ा और हिन्दुओं की एक बड़ी सेना को जो इस मन्दिर के बचाने के लिये उसके सामने आई थी मार कर भगा दिया। जब वह मन्दिर में घुसा तो पुजारियों ने डरते कांपते यह बिनती की कि आप हमारे देवता की मूर्ति को छोड़ दें तो हम आप को बहुतसा धन दें। महमूद ने न माना और बोला कि मैं मूर्ति तोड़ने आया हूँ मूर्ति बेचने नहीं और इतना कहकर उसने अपनी लोहे की गदा इतने जोर से मारी कि मूर्ति के टुकड़े टुकड़े हो गये।

८—यहां से अफ़ग़ानिस्तान लौट जाने के पीछे महमूद मर गया। यह आप भारत में न ठहरा पर एक सेनापति को पंजाब का हाकिम बना कर लाहौर में छोड़ गया। हिन्दू लोगों ने डेढ़ सौ बरस तक इस देश से मुसलमानों के निकालने का उपाय किया। पर महमूद के स्थानापन्न पठान लाहौर में जमे बैठे रहे और पंजाब से बढ़ते बढ़ते गङ्गा के मैदान में पहुंचे और वहां के बड़े बड़े नगर उन्होंने लूट लिये। इन बादशाहों की दो राजधानियां थीं। एक ग़ज़नी दूसरा लाहौर।

९—महमूद बड़ा वीर था और अपने समकालीन पठानों की तरह निर्दयी और दुष्ट न था, लड़ाई के बन्दियों की मारता न था। अफ़ग़ानिस्तान के राज्य का प्रबन्ध उसने बहुत अच्छा किया। हिन्दुस्थान के धन से उसने ग़ज़नी नगर में बड़ बड़े महल और मकान बनवाये और उसकी शोभा बढ़ाई। बहुत से कवि और गुणी लोग दूर देशों से ग़ज़नी में आकर बसे। पर वह लोभी और कंजूस था। फ़िर्दौसी कवि के साथ जो उसने चाल चली वह बड़ी ही अनुचित थी। महमूद ने फ़िर्दौसी से शाहनामा रचने को कहा और एक शेर पीछे एक अशर्फी देने की प्रतिज्ञा की। तीस बरस कड़ा परिश्रम कर फ़िर्दौसी साठ हजार शेर लिख लाया

महमूद एक पुस्तक के लिये साठ हजार अशर्फियां देने में आगा पीछा करने लगा और अशर्फियों के बदले साठ हजार चांदी के दोनार देने लगा। फिर्दौसी ने दीनार लेना स्वीकार न किया और निराश होकर अपने देश को चला गया। कुछ दिन पीछे महमूद अपनी चाल पर पछताया और साठ हजार अशर्फियां देकर एक दूत को फिर्दौसी के घर भेजा। कहते हैं कि जिस घड़ी महमूद का दूत अशर्फियां लेकर शहर में पहुंचा उसी घड़ी फिर्दौसी का अन्तकाल हो गया।

२१—महम्मद गोरी ।

(११८६ ई० से १२०६ ई० तक)



महम्मद गोरी ।

१—गजनवी में तुरकी वंश के बादशाहों को राज करते १५० बरस भी न बीते थे कि गोर के अफगानों ने उनको जीत लिया। गोर अफगानिस्तानके उत्तर-पश्चिम में एक छोटा सा देश था। इस समय यहां का बादशाह महम्मद शहाबुद्दीन था जो इतिहास में महम्मद गोरी के नाम से प्रसिद्ध है। महमूद गजनवी की तरह यह भी बड़ा वीर और लड़ाका था। यह भी जब तक जिया उत्तर हिन्दुस्थान पर धावा मारता रहा पर इसका मतलब यह न था कि नगरों मन्दिरों को लूटे। यह देश जीतकर राज करना चाहता था।

२—इस समय उत्तर हिन्दुस्थान में राजपूतों के चार बड़े बड़े

राज थे। तोमरों की राजधानी दिल्ली, चौहानों की अजमेर, राठौरों की कन्नौज और बघेलों की गुजरात। दिल्ली के तोमर राजा के कोई बेटा न था। उसने अपने नाती पृथ्वीराज को जो रूपवान, बीर और चौहानों का सिरताज था गोद ले लिया। जब दिल्ली का राजा मरा तो पृथ्वीराज दिल्ली और अजमेर का स्वामी हो गया। राजा जयचन्द भी दिल्ली के तोमर राजा का नाती था। पृथ्वीराज के गोद लिये जाने से उसने अपनी बड़ी हानि समझी और पृथ्वीराज से जलने लगा।

३—शहाबुद्दीन ने ११९१ ई० में भारत पर पहिले पहिल चढ़ाई की और सीधा दिल्ली की ओर चला। पृथ्वीराज बहुतसे राजपूत राजाओं के साथ एक बड़ी राजपूत सेना लेकर दिल्ली से अस्सी मील उत्तर शानेश्वर के स्थान पर शहाबुद्दीन से मिला। राजपूतों ने बड़ी बीरता दिखाई और अफगान हार गये। शहाबुद्दीन बड़ी कठिनाई से अपने



पृथ्वीराज ।

प्राण लेकर भागा राजपूतों ने ४० मील तक अफगानों का पीछा किया। जो अफगान जीते बचे सिन्धु के पार भाग गये।

४—शहाबुद्दीन के जाने के पीछे कन्नौज के राजा जयचन्द ने अपनी बेटी संयोगिता का स्वयंवर रचा। बड़े बड़े राजा और सरदार इकट्ठा हुए और संयोगिता को आज्ञा दी गई कि जिसे चाहे अपना बर चुने। इसी अवसर पर जयचन्द ने राजाधिराज होने का दावा किया और सारे राजपूत राजाओं को अपना आधीन मानकर सब के नाम न्योता भेजा। इस उत्सव में पृथ्वीराज

द्वारपाल बनाया गया। पृथ्वीराज जयचन्द की बेटी को चाहता था। पाहुने की तरह बुलाया जाता तो उसके आने में संदेह ही क्या था। पर यह बड़ा अभिमानी था। द्वारपाल बनकर जाना स्वीकार न किया। उत्सव के दिन जब पृथ्वीराज न आया तो जयचन्द ने उसकी मूर्ति बनवाकर महल के फाटक पर खड़ी कर दी। खयंवर होने लगा। जो राजा दूर देश से इस आसरे में आये थे कि संयोगिता हमको बरेगी एक पांति में खड़ हो गये और संयोगिता को आज्ञा दी गई कि उनके बीच से चले और जिसे चाहे बर ले। संयोगिता के हाथ में फूलों की माला थी। वह बर देखती भालती पांति के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चली गई और फाटक पर जाकर पृथ्वीराज की मूर्ति के गले में उसने माला डाल दी। पृथ्वीराज भेस बदले अपने कुछ सिपाही साथ में लिये वहीं उपस्थित था। तुरन्त मण्डप में घुस गया और संयोगिता को अपने घोड़े पर बैठाकर दिल्ली की ओर ले उड़ा।

५—जयचन्द पृथ्वीराज से लड़ा पर उसे जीत न सका। तब उसने क्रोध में आकर नीचपने से शहाबुद्दीन के पास सन्देश भेजा कि आप एक बार दिल्ली पर फिर चढ़ाई करें और मैं आपकी मदद करूंगा। शहाबुद्दीन पहलेही से बड़ी पलटन जमा किये बैठा था; और उसने गोरी सरदारों और सेनापतियों को बहुत ही भिड़का था जो थानेश्वर के मैदान से भाग निकले थे; तोबड़ों में जौ का दाना भरवा कर उनके मुंह बन्धवाया और गदहों की तरह उनको शहर से निकलवा दिया था। जयचन्द का सन्देश पाकर ११८३ ई० में फिर दिल्ली की तरफ चला। डेढ़ लाख सिपाही अच्छे अफगानी घोड़े पर सवार इसके साथ थे। अबकी बार जयचन्द और राठौर राजा पृथ्वीराज की सहायता को न आये। पृथ्वीराज अपने चौहानों को लेकर थानेश्वर के मैदान में फिर

शहाबुद्दीन से भिड़ा। चौहान अपने राजा और देश के नाम पर जी तोड़ कर लड़े पर महावीर और जानपर खेलनेवाले अफगानों ने उन्हें जीत लिया। राजपूत तितिर बितिर होकर भागे और पृथ्वीराज मारा गया। पृथ्वीराज की रानी जयचन्द की बेटी अपने पति के साथ चिता पर जलकर सती हो गई। महम्मद गोरी ने पहिले दिल्ली पर दखल किया पीछे अजमेर पहुंचा और बहुत सा लूट का माल लेकर गज़नी चला गया। कुतुबुद्दीन उसका नायब भारत के उन प्रान्तों पर राज करने के लिये जो महम्मद गोरी ने जीते थे यहीं रह गया।

६—शहाबुद्दीन ११८४ ई० में फिर भारत में आया और अबकी बार कन्नौज के राजा जयचन्द पर चढ़ दौड़ा। जयचन्द बड़ी वीरता से लड़ा पर बिना चौहानों की सहायता के वह पठानों को न हरा सका और पृथ्वीराज की तरह वह भी मारा गया। गोरियों ने कन्नौज और बनारस ले लिया। और नगरों की कौन गिनती है अकेले बनारस में मुसलमानों ने एक हजार मन्दिर नष्ट कर दिये और चार हजार जंटो पर लूट का माल लाद ले गये।

७—राठौर और उत्तरीय भारत की अनेक राजपूत जातियां गंगा यमुना के आस पास के देशों से जहां इनके पुरुषा डेढ़ सौ बरस से बसते थे इस समय अपना परिवार और माल असबाब लेकर दक्षिण और पश्चिम मारवाड़ और अरवली पहाड़ के पास के देश में जा बसीं। उन्हीं के कारण अब यह देश राजपूताना कहलाता है।

८—महम्मद गोरी और उसके सेनापतियों ने लग भग सारा उत्तरीय हिन्दुस्थान जीत लिया। उन में से एक ने जिसका नाम बख्तियार खिलजी था ११८८ ई० में अवध और बिहार को और १२०३ ई० में बङ्गाले को जीता। इस समय बङ्गाले को

राजधानी एक नगर लखनौती था। अफ़ग़ानोंने बदल कर अपने देश के नाम पर इसको गोर की पदवी दी और वह बिगड़ कर गौड़ बङ्गाला हो गया। बूढ़ा बङ्गाली राजा लक्ष्मणसेन बड़ी कठिनाई से गोरियोंके हाथ से बचा। वह खाना खा रहा था जब अफ़ग़ान महलों में घुस आये और उसे पकड़ ही लेते कि वह एक चोर दरवाज़े से निकल भागा और उड़ैसा पहुँचा। वहाँ उसने अपना जन्म जगन्नाथ की सेवा में बिता दिया। इसके पीछे गोरियों ने पहिले गुजरात के बघेले राजपूतों को परास्त किया फिर गवालियर ले लिया ; पर मालवा न जीत सके।

६—भारत की अन्तिम लड़ाई के पीछे महम्मद गोरी पञ्जाब की राह अपने देश को लौटा जा रहा था कि एक पहाड़ी जाति के लोग जिन्हें घखुर कहते हैं रातको इसके डेरे पर टूट पड़े और इसको मार डाला। गोरी के साथी इसकी लाश को ग़ज़नी ले गये और वहीं उसे गाड़ दी। उसके पीछे उसका नायब कुतुबुद्दीन भारत के जीते हुए प्रान्तों का स्वतंत्र अधिकारी होकर दिल्ली का सुलतान बन गया। महम्मद गोरी भारत का पहिला जीतनेवाला था। महम्मद ग़जनवी की नाईं इसका अभिप्राय यह न था कि लूट खसोट कर ग़ज़नी में जा बैठे। यह भारत पर शासन करने आया था और इसकी मनोकामना पूरी हुई।

२२—पठान बादशाह ।

(१२०६ ई० से १५२६ ई० तक)

१—१२०६ से १५२६ ई० तक ३२० बरस अफ़ग़ान बादशाहों ने दिल्ली में राज किया। इन में बहुतेरे पठान वंश के थे इस से हिन्दू सब को पठान कहते हैं। यह लोग अफ़ग़ानिस्तान

से आये थे। यह सब एक ही कबीले (कुल) के न थे। इन के पांच वंशों ने बादशाही की; (१) गुलाम (दास) (२) खिलजी (३) तुगलक (४) सैयद (५) लोधी।

२—मुसलमानों ने एक एक करके हिन्दुओं के सब राज खोन लिये। पठानों के समय में सदा कहीं न कहीं लड़ाई होती रही। हिन्दू भी कट कट कर लड़ते थे और मुसलमानों को सहज में राज न देते। इनमें कई राज ऐसे भी हैं जो कभी जीते न गये। तुर्कों तातारियों अफगानियों के झुंड के झुंड चले आते थे और देश दबाते जाते थे। यह नये आये विलायती कहीं हिन्दुओं से भिड़ जाते और कहीं उन भाइयों से लड़ते थे जो पहिले आकर हिन्दुस्थान में बसे थे।

३—जिस के पास रुपया पैसा गहना होता था वह उसे गड़हा खोद कर गाड़ देता था। यह डर लगा रहता था कि कदाचित् कोई बरी आये और खीन कर ले जाय। हम लोग जो आज कल सुख चैन से दिन व्यतीत कर रहे हैं अनुमान भी नहीं कर सकते कि पठानों के समय में भारत पर कैसी कैसी आपत्तियां आई थीं। हिन्दुओं के पुराने पुराने मन्दिर बहुधा तोड़ दिये गये थे। बहुतसी उपजाऊ भूमि बंखरी के पड़ी थी। इसका कारण यह था कि बेचारे निर्धनी किसान अपने प्राणों के भय से बनों में भाग गये थे। बहुत से हिन्दू मुसलमान हो गये। इनमें से कुछ तो इस आशा पर मुसलमान हुए थे कि बिजयी जाति की सेना और उनके दफतरो में उच्च पद को प्राप्त हों और बहुतेरे प्राणों के भय से। इसी कारण पठानों के समय में बहुत से सुप्रसिद्ध सरदार ऐसे थे जो वास्तव में हिन्दू थे पोछे मुसलमान हो गये थे।

४—जिस भांति प्राचीन काल में आर्य लोग पंजाब से यमुना

और गंगा के उत्तर में बढ़ते बढ़ते पूर्व की ओर गये थे उसी भांति तुर्कों अफ़ग़ानों और ईरानियों ने इस समय सिंधु नदी से चलकर पूर्व की ओर जाकर दिल्ली अवध बिहार और बंगाल के सूबों को आधीन किया। १२०६ ई० में कुतुबुद्दीन दिल्ली को राजगद्दी पर बैठा और उसी दिन से धीरे धीरे सारा भारत मुसलमानों के राज में आ गया। बहुत से मनचले ईरानी और तुर्किस्तानी यह सुनकर कि उनके मित्र, देशबन्धु जो भारत गये थे धन सम्पत्ति प्राप्त करके वहीं बस गये हैं अपने देशों को छोड़ भारत में चले आये और अपने भाग्य को परखने लगे। मुसलमान सम्राटों और प्रान्ताधिकारियों ने उनको भूमि आदि देकर बसा लिया। आजकल उत्तरीय भारत में जो बहुत से प्रसिद्ध मुसलमानी वंश हैं इसी प्रकार इस देश में आकर बसे थे। छोटे छोटे मुसलमान सरदार अपने अपने साथियों को लेकर भारत में चारों ओर से निकल पड़े और इसी प्रकार रियासतें बना बैठे। जब तक दिल्ली का सम्राट बौर और बलवान रहा यह लोग उसे कर देते और उसकी सेवकाई का दम भरते रहे। परन्तु जब वह दुर्बल हो गया तो जितने रईस थे सब स्वाधीन बन गये और कोई किसी का आधीन न रहा।

२३—गुलामी का वंश ।

(१२०६ ई० से १२८० ई० तक)

१—इस वंश में ८ बादशाह और एक मलका हुई है। इन सबों ने ८४ वर्ष राज किया। इन में से बहुतों ने बहुत थोड़े दिन राज किया। इन में से पांच अधिक प्रसिद्ध हैं।

२—इस वंश का पहिला बादशाह कुतुबुद्दीन था। यह

वास्तव में तुर्क था और बाल्यावस्था से ही दास बना दिया गया था। उस समय मुसलमानी देशों की यह रीति थी कि जो लोग युद्ध क्षेत्र में बंदी किये जाते थे वह दास बना लिये जाते थे और दूर देशों में जाकर बिकते थे ; और मुसलमान कर लिये जाते थे। वह अपने देश और साथियों से दूर होने के कारण अपने स्वामी के वंश को अपना ही समझते थे और उनकी भलाई मानते अपना जन्म काटते थे। दास कम उमर



कुतुबुद्दीन ।

होता और स्वामी के कोई सन्तान न होती तो वह कभी कभी गोद भी ले लिया जाता था। कुतुबुद्दीन इसी नाते से अपने स्वामी के कुटुम्ब में आया था और होते होते पहिले सेनापति हुआ फिर बादशाह बना। यह गुलामवंश का पहिला बादशाह था। इस वंश का यह नाम होने का मुख्य कारण यह है कि इस में से बहुधा कुतुबुद्दीन की भांति पहिले दास ही थे।

३—कुतुबुद्दीन एक वीर योद्धा और योग्य सेनापति था ; अपने आधीन अफसरों के साथ भलाई करने और उन को धन और सम्पत्ति देने पर ऐसा तत्पर रहता था कि लोग उसको चश्मये फेज़ (अर्थात् दान का सोता) कहते थे। दिल्ली के निकट उसने वह देखने योग्य मीनार बनाना आरम्भ कर दिया जो अब तक कुतुब मीनार के नाम से प्रसिद्ध है।

४—इस वंश का तीसरा बादशाह अलतमश था जो अपने

वंश के सब बादशाहों से विशेष प्रसिद्ध हुआ है। इस ने १५ बरस राज किया। कुतुबुद्दीन की तरह यह बाल्यावस्था ही से गुलाम बना परन्तु इसने अपनी भलमंसी और बुद्धिमानी से अपने स्वामी को इतना प्रसन्न कर लिया कि इसने उसको अपनी बेटी व्याह दे दी। कुतुबुद्दीन की मृत्यु के पीछे इसने उसके बेटे आरामशाह को मार डाला और राज का स्वामी बन बैठा। कुतुबुद्दीन का नायब बख्तियार खिलजी कुतुबुद्दीन की ओर से बिहार और बंगाले का स्वामी था। कुतुबुद्दीन की एक बेटी उस से भी व्याही थी। कुतुबुद्दीन के मरने पर उसने सोचा कि मैं क्यों अलतमश के आधीन रहूं और बंगाले का स्वाधीन स्वामी क्यों न बन जाऊं। अलतमश और बख्तियार खिलजी में लड़ाई हुई। अलतमश जीत गया और बख्तियार को मार कर उसने अपने बेटे को बंगाले का स्वामी बनाया।

५—सिंध के स्वामी ने भी अलतमश की आधीनता से मुक्त मोड़ा। इसी ने सिंध जीता था और मुहम्मद गोरी के समय से वहां का स्वामी चला आता था अब इसने भी सिंध देश का स्वाधीन बादशाह होना चाहा पर अलतमश से लड़ाई में हार गया। सिंधु नदी पार भागना चाहता था कि वह और उसका कुटुम्ब नदी में डूब गया।

६—इस के पीछे अलतमश ने मालवा और गुजरात के राजपूतों पर चढ़ाई की; ६ बरस तक उनके साथ लड़ा। अंत को उनको भी आधीन कर लिया और फिर दिल्ली को लाट आया और यहीं १२३२ ई० में मर गया। वह सुन्दर मीनार जिसे कुतुब साहेब को लाट कहते हैं कुतुबुद्दीन के समय में बनने लगा परन्तु अलतमश के समय में पूरा हुआ।

७—जिस समय में अलतमश दिल्ली का स्वामी था, तातार

का प्रसिद्ध सरदार चंगेज़ ख़ां जो बौद्ध था अपने भयानक और कुरूप सिपाहियों को लेकर मंगोलिया से आंधी की भांति उठा और बहुतसे मुसलमानी राज्यों को उसने परास्त कर लिया। यह सिंधु नद तक आ गया था और हिन्दुस्थान में भी उतर आता परन्तु अलतमश बुद्धिमान था और चंगेज़ ख़ां ऐसे बलवान बैरी को कब लड़ाई का अवसर देता। उसने एक तुरकिस्तानी सरदार को जो चंगेज़ ख़ां से हार कर उसके पास सहायता को खोज में आया था सहायता देने से इनकार किया, और आई हुई बला-भारत से टल गई; यानों चंगेज़ और तुर्क इसपार न आये।



रज़िया बेग़म।

८—रज़िया बेग़म अलतमश को बेटी थी। जब इसका बड़ा भाई रुकनुद्दीन सात महीने राज करने पर राज के योग्य न समझा गया तो रज़िया दिल्ली की मलका हुई। दिल्ली के सिंहासन पर रज़िया के सिवा और कोई रानी नहीं बैठी। अलतमश जब कहीं दूर किसी शत्रु से लड़ने जाता तो दिल्ली का प्रबन्ध रज़िया को सौंप जाता था। वह कहा करता था कि रज़िया का स्वभाव पुरुषों का सा है; यह बीस लड़कों से बढ़कर सुयोग्य है। रज़िया सुल्ताना ने साढ़े तीन वर्ष बड़ी सावधानी और प्रतिष्ठा से राज किया। मुसलमान बीवियों के भांति यह बुराया या नकाब कुछ न लगाती थी; मर्दाने वस्त्र पहिन कर नित्य राज-सिंहासन पर विराजती थी; और जो कोई उसके

पास नालिश करने आता था, उससे बोलती और उसकी बात पूँछती थी।

६—लोग अनुमान करते हैं कि यह अपने एक सभासद को बहुत मानती थी; और उसे अपने सेना का सेनापति बना दिया था। यह हवशी था इस कारण रज़िया के अफ़ग़ानी सभासद और सद्दार बहुत बुरा मानने लगे और बागी होकर दंगा करने पर उतारू हुए। रज़िया ने अपने प्राणों के डर से एक सद्दार से ब्याह कर लिया। वह रज़िया की ओर से बहुत लड़ा। परन्तु उसकी हार हो गई। वह और रज़िया दोनों मारे गये।

१०—रज़िया के मरने पर अलतमश का एक और बेटा उसकी जगह राज-गद्दी पर बैठा। इसने कोई दो बरस राज किया होगा कि दरबार के अफ़ग़ानी अमीरों ने उसे कैद कर लिया और अलतमश के पोते को सिंहासन पर बैठाया। पांच बरस राज करने पर यह भी कैद किया गया। इसके पीछे नासिरुद्दीन जो अलतमश का सब से छोटा बेटा था राज का अधिकारी हुआ। यह बड़ा बुद्धिमान था। इसने गयासुद्दीन को जो उसका बहनोई और एक बड़ा रईस था अपना वज़ीर बनाया और उसकी सहायता से बीस बरस राज किया। रज़िया के उन दोनों शक्तिहीन उत्तराधिकारियों के समय में कई राजपूत राजा लोग जो कुतुबुद्दीन और अलतमश से हार मान चुके थे अपना अपना देश फिर दबा बैठे और स्वतन्त्र हो गये। गयासुद्दीन ने इन देशों को जीत कर फिर दिल्ली के राज में मिला लिया। मोगलों ने भी कई बार भारत पर चढ़ाई की पर इसने उनको भी भगा दिया।

११—नासिरुद्दीन बादशाह था, फिर भी वह सूफ़ी फ़कीरों की तरह रहता था। उसकी एकही स्त्री थी, घर में न तो कोई दासी थी और न खाना पकानेवाली थी। बिचारी शुद्ध आचरणवाली

मलकाही अपने हाथ से खाना बनाती और खिलाती थी। बादशाह अपने हाथ से किताबें लिखता और उनके बेचने से जो धन पाता उससे अपनी जीविकानिर्वाह करता था। एक बार एक दरबारी बादशाह के पास गया।

बादशाह के पास उन्हीं की लिखी किताब रखी थी। दरबारी किताब उठाकर उसकी अशुद्धियां दिखाने लगा। आप भी लेखनी उठाकर जिस तरह वह कहता गया बनाते गये। परन्तु जब वह चला गया तब उसकी काटी हुई अशुद्धियां फिर ज्यों की त्यों कर दीं। किसी ने पूछा जहांपनाह यह क्या बात है।



नासिरुद्दीन।

आपने कहा कि वास्तव में अशुद्धियां नहीं थीं। परन्तु जो मनुष्य सुझपर इतनी कृपा करे कि मेरी अशुद्धियां मुझे चेता दे, उसका मान रखना उचित है। मैंने इसी विचार से उसके कहने पर किताब काट दी थी। और जब वह चला गया तो फिर ठीक कर दी।

१२—नासिरुद्दीन के मरने के पीछे उसका मन्त्री गयासुद्दीन बलबन राज का मालिक हुआ। लड़कपन में यह दास था। परन्तु उच्च कुल का था। अलतमश ने इसे मोल ले लिया था। अपनी बुद्धिमानी से इसकी प्रतिष्ठा बढ़ती रही और इसकी ऊंचे पद मिलते गये और अन्त को एक सूबे का हाकिम हो गया और अलतमश ने अपनी बेटी उसे ब्याह दी। इन पदवियों के पाने से पहिले यह उन चालीस दासों में से था जिन्होंने आपुस में यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि जन्मभर एक दूसरे के मित्र और सहायक

बने रहेंगे। इस प्रतिज्ञा पर वह लोग ऐसे स्थिर रहे कि चालीस के चालीसों बड़े बड़े ओहदों पर पहुँच गये। पर जब बलबन



ग्यासुद्दीन।

राज्याधिकारी हुआ तो उसे डर लगा कि ऐसा न हो कि कहीं मेरे मरने पर इन लोगों में से कोई राज का दावा करे और मेरे बेटों को राज न करने दे। इस डर से उसने सब को मरवा डाला।

१३—बलबन के राज में एशिया के कई प्रान्तों के रईस और सर्दारों ने मुगलों के अत्याचार से व्याकुल होकर अपने अपने देश छोड़ दिये और भारत में शरण ली और यहीं रहने सहने लगे। एक बार ऐसा

हुआ कि बलबन को सभा में इस प्रकार के पन्द्रह रईस इकट्ठा हो गये। बलबन ने दिल्ली के बाज़ारों और गलियों के नाम बदल दिये। किसी का नाम गोर की गली, किसी का नाम बगदाद का कूचा, और किसी का खेवा का कूचा आदि नाम रख दिया। मुगलों के दल के दल पंजाब पर चढ़ आये पर बलबन और उसके बेटों ने सब को मार पीट कर भगा दिया। अन्त में मुगलों और बलबन के बेटे महम्मद में घोर संग्राम हुआ और महम्मद मारा गया। बलबन की आयु इस समय अस्सी बरस की थी; सिंहासन पर बैठे हुए भी उसे बाईस बरस हो चुके थे। बेटे के मरने का समाचार सुनकर उसे इतना दुःख हुआ कि वह मरही गया।

१४—बङ्गाले का हाकिम तोगरल खां बागो हो गया था।

बलबन ने उसे पराजित करके मार डाला और अपने बेटे बुगरा खां को उसकी जगह बङ्गाले का हाकिम बनाया। बुगरा खां सुख से बङ्गाले में राज करता था और इसी पर सन्तुष्ट था। बाप के मरने के पीछे भी कभी उसने ऐसा विचार न किया कि मैं बलबन के सिंहासन का अधिकारी बनूं। फल यह हुआ कि उसका बेटा कैकबाद दिल्ली का बादशाह हुआ। कैकबाद के समय में बड़ी अनीति रही। बुगरा खां भी एक बार आया और बेटे को समझाया पर कैकबाद ने एक न सुनी। बुगरा खां की पीठ फिरते ही पहिले से भी अधिक उत्पात होने लगा। कैकबाद को राज मिले अभी तीन बरस भी न हुए थे कि उसके वज़ीर ने जो खिलजी जाति का था उसे मार डाला और आप बादशाह बन बैठा। बुगरा खां बङ्गाले ही में पड़ा रहा और ४४ बरस उस देश में राज करके इस संसार से सिधार गया। कैकबाद के पीछे बुगरा खां की मृत्यु तक दिल्ली के तख्त पर छः बादशाह बैठे।

२४—खिलजी वंश।

(१२६० ई० से १३२० ई० तक)

१—तीस बरस में खिलजीवंश के चार बादशाह हुए। यह वास्तव में अफ़ग़ानी थे पर तुर्किस्तान से आये थे और भाषा भी तुर्की ही बोलते थे। इनके समय में मुसलमान दखिन में भी पड़च गये।

२—इस वंश का पहिला बादशाह जलालुद्दीन खिलजी था। सिंहासन पर बठने के समय इसको आयु अस्सी बरस की थी। यह मित्र और शत्रु सब से सरल सुभाव से मिलता था। जलालुद्दीन अपने भतीजे अलाउद्दीन पर बड़ा भरोसा रखता था और उसे अपने

बेटों को भांति मानता था। अलाउद्दीन सेना लेकर दखिन पहुँचा जहाँ अभी तक कोई अफ़ग़ान नहीं गया था। यह विन्ध्याचल पर्वत में आठ सौ मील चल कर आठ हजार सेना के साथ देवगिरि में पहुँचा जिसे अब दौलताबाद कहते हैं और जो मरहटा देश के राजा रामदेव की राजधानी थी। अलाउद्दीन सब से कहता था कि मेरा चचा मुझे मारनेवाला है ; मैं उससे भाग कर आया हूँ। इस कारण किसी राजपूत राजा ने उससे छेड़ छाड़ न की और अचानक उसने देवगिरि को आ दबाया। राजा ने उसको बहुतसा धन दिया और कुछ भाग अपने देश का भी उसकी भेंट किया। अलाउद्दीन दिल्ली लौट गया। बूढ़े चचा ने जब यह सुना तो बहुत प्रसन्न हुआ और अकेला आप ही उसकी अगवानी को आया। चचा अलाउद्दीन को छाती से लगाता था कि भतीजे ने उसको छाती में तलवार भोंक दी फिर उसका सिर काट डाला और भाले में लगाकर सारी सेना में फिराया, जिसमें सब जान जायं कि जलालुद्दीन मर गया। इस करतूत के पीछे अलाउद्दीन दिल्ली आया ; यहाँ जलालुद्दीन के दो बेटों को मारा और आप राज का अधिकारी बना। जिस समय जलालुद्दीन अलाउद्दीन के हाथ से मारा गया, उस समय उसे राज करते हुए, सात बरस हुए थे।

३—अलाउद्दीन ने १२८५ ई० से १३१५ ई० तक राज किया। यह बड़ा निर्दयी और कठोर था और जो मन में ठान लेता था उसपर दृढ़ रहता था। खिलजी बादशाहों में सब से शक्तिमान यही था। इसने बीस बरस राज किया ; जितना धन दखिन से लाया था वह सब औरों को बांट दिया जिसमें वह लोग जलालुद्दीन के मरने की बात भूल जायं और यह अपना राज दृढ़ करे। गुजरात के लोगों ने जिनको किंगोरी बादशाहों ने आधीन कर लिया था अलाउद्दीन के समय से बहुत पहिले पठान हाकिमों को निकाल

बाहर किया और एक राजपूत को अपना राजा बना लिया। अलाउद्दीन ने अपने भाई अलफखां को बहुत सी सेना देकर गुजरात भेजा। अलफखां ने फिर से इस देश को सुसलमानी राज में मिला लिया। राजाकी रानी कमलादेवी बड़ी रूपवती थी। उसे कैद करके अलफखां ने दिल्ली को भेज दिया। यहां अलाउद्दीन ने उससे निकाह करके अपने हरममें रखा। इसके पीछे अलाउद्दीन को मुगलों का सामना करना पड़ा। पांच बार मुगल पञ्जाब में आये और एक बार दिल्ली तक भी जा पहुँचे पर अन्त में मुगलों की हार हुई और बहुत से मारे गये। इनमें से जो बच रहे वह सुसलमान हो गये और यहीं बस गये।



अलाउद्दीन खिलजी ।

४—इसके पीछे अलाउद्दीन ने उत्तरीय राजपूत राजाओं के जीतने का बीड़ा उठाया और उनके बहुत से गढ़ और क़िले ले लिये। इस समय भीमसिंह चित्तौड़ में राज करता था। उसकी रानी सुन्दरता में अद्वितीय थी। अलाउद्दीन ने जो उसकी सुन्दरता को बड़ाई चारों ओर सुनी तो तत्काल ही उससे निकाह करने को जी में ठान लिया। उसने बड़ी भारी सेना लेकर चित्तौड़ पर चढ़ाई की। कई महीने अलाउद्दीन क़िले के सामने पड़ा रहा किन्तु उसे न ले सका। तब उसने भीमसिंह से कहा कि मैं पद्मिनी को देखना चाहता हूँ। यदि एक बार तुम उसका मंह मुझे दिखा दो तो मैं सेना सहित लौट जाऊंगा। पहिले तो भीमसिंह ने यह बात स्वीकार न की पर अन्त में

यह ठहरी कि रानी अपने राजभवन में पर्दे के पीछे बैठ जाय और उसके सम्मुख एक दर्पण रख दिया जाय और बादशाह उसमें उसकी परछाई देख ले। निदान अलाउद्दीन चित्तौड़ गढ़ गया और दर्पण में रानी का प्रतिबिम्ब देख लिया। लौटती समय भीमसिंह उसे उसके डेरे तक पहुंचाने गया। उस समय अलाउद्दीन ने भीमसिंह को कैद कर लिया और कहा कि जब तक पद्मिनी मुझसे ब्याह न करेगी तब तक तुम न छोड़े जाओगे। रानी ने देखा कि राजा के कुटकारे का सिवाय इसके और कोई उपाय नहीं है कि कुछ चालाकी से काम ले। इस कारण बादशाह से कहला भेजा कि मुझे स्वीकार है, मैं आती हूं। एक डोले में आप सवार हुई और सात सौ डोले और साथ लिये और सब के सब सुसलमानी डेरों की ओर चले। कहा तो यह गया कि उन सात सौ डोलों में रानी की सात सौ सहेलियां हैं परन्तु हर डोले में एक एक राजपूत सूरमा हथियार बांधे बैठा था। केवल इतना ही नहीं बरन जो लोग कहारों की भांति डोलों को उठाये थे वह भी लड़तिये सिपाही थे। जब डोले सुसलमानी डेरों में पहुंचे तो अलाउद्दीन ने चाहा कि भीमसिंह और पद्मिनी को न जाने दे। इतने में राजपूत सूरमा तलवारें सूत कर डोलों से कूद पड़े और भीमसिंह और पद्मिनी को घोड़ों पर सवार करा कर लड़ते भिड़ते तलवारों की छाया में चित्तौड़गढ़ में पहुंचा दिया। अलाउद्दीन देखता ही रह गया। इसबार तो उसे चार मान कर भागना पड़ा किन्तु दो बरस पीछे पहिले से भी भारी सेना लेकर उसने चित्तौड़ पर चढ़ाई की। इस बार राजपूत इसके सामने ठहर न सके। जब बहुत से राजपूत कट कर मर गये और गढ़ के बचाव की कोई आशा न रही तो पद्मिनी तेरह हजार राजपूतनियों के साथ

अग्नि में प्रवेश करके भस्म हो गई। मर्द जो बचे सो तलवारें लेकर गढ़ के बाहर निकले और वीरता से लड़ते हुए शत्रु के हाथों संग्राम में कट मरे। यह घटना १३०३ ई० की है। इसके पीछे अलाउद्दीन जैसलमेर पहुंचा और आठ महीने घेरने के पीछे जैसलमेर का किला भी आधीन कर लिया। यहां भी वही हाल हुआ जो पहले चित्तौड़ में हो चुका था अर्थात् चार हजार राजपूतनियां अच्छे कपड़े और गहने पहिन कर आग में कूद पड़ीं और जलकर स्वाहा हो गईं और राजपूत लोग घोर संग्राम करते हुए एक एक करके कट मरे। इस भांति प्राण देने को राजपूत लोग अपनी बोली में जीहर कहते हैं। जब अलाउद्दीन ने राजपूतों को जीत लिया और गुजरात और राजपूताने के बड़े बड़े गढ़ छीन चुका तो दखिन के विजय को चला।

५—अलाउद्दीन का सब से बड़ा सर्दार मलिक काफूर था। यह असल में हिन्दू था पर पीछे मुसलमान हो गया था। अलाउद्दीन नहीं चाहता था कि आप उत्तरीय भारत छोड़ कर दखिन के विजय को जाय क्योंकि उसे डर था कि ऐसा न हो मुगल फिर चढ़ आयें अथवा कोई सर्दार बिगड़ बैठे और उसका राज छीन ले। इस कारण उसने एक बड़ी भारी सेना के साथ मलिक काफूर को दखिन की ओर भेजा। मलिक काफूर ने हर एक चढ़ाई में एक नया देश छीना और बहुत सा माल लूट कर दिल्ली को लौट आया।

६—१३०८ ई० में काफूर गोदावरी नदी के दक्षिण वारङ्गल जो तिलङ्गाना राज्य की राजधानी थी पहुंचा; फिर देवगिरि की ओर चला। देवगिरि का राज्य जलालुद्दीन के समय में अलाउद्दीन ने जीत लिया था परन्तु थोड़े दिनों से अलाउद्दीन को कर नहीं मिला था। अलाउद्दीन की हिन्दू रानी कमलादेवी ने मलिक काफूर से कह रक्खा था कि मेरी छोटी लड़की देवल

देवी को जो गुजरात के जीते जाने के समय मेरे पहिले पति अर्थात् गुजरात के राजा के साथ दखिन चली गई थी ला दो। मलिक काफूर ने उसके खोज में एक सेना भेजी। शङ्करदेव के साथ, जो देवगिरि के राजा रामदेव का पुत्र था, उस कन्या का विवाह होने ही वाला था कि इतने में मलिक काफूर की सेना ने उनको जा घेरा। मलिक काफूर उस लड़की को दिल्ली लाया और यहां बादशाह के पुत्र खिज्रखां के साथ उसका निकाह हो गया। मलिक काफूर रामदेव से लड़ा और उसको कैद करके दिल्ली ले आया। यहां अलाउद्दीन ने उसके साथ ऐसा अच्छा बर्ताव किया कि वह जन्म भर बादशाह का शुभचिन्तक बना रहा।

७—रामदेव का पुत्र शङ्करदेव अलाउद्दीन से जलता था। कारण यह था कि उसने उसकी स्त्री छीन ली थी। बाप की मृत्यु के पीछे शङ्करदेव बागी हो गया और मलिक काफूर सेना लेकर उसको दण्ड देने के लिये भेजा गया। शङ्करदेव लड़ाई में मारा गया और काफूर ने सारा मरहटा देश उजाड़ दिया। १३१० ई० में काफूर करनाटक देश के मैसूर के इलाके में होता हुआ धुर द्वारसमुद्र में जा पहुंचा जहां बल्लाल राजा की राजधानी थी। उसको पराजित करके काफूर और भी दक्षिण की ओर बढ़ा और रासकुमारी तक पहुंच गया। यहां से बहुत सा धन लेकर दिल्ली लौट आया। इसकी गैर हाजिरी में पन्द्रह हजार मुगल जो अलाउद्दीन के दरबार में नौकर थे बागो हो गये थे। वह सब मार डाले गये और उनकी स्त्रियां और बच्चे दास बनाकर बेच दिये गये।

८—अलाउद्दीन के राज में अफगान अमीरों को यह अधिकार न था कि जो कुछ जिसके जी में आयें करे। बादशाह की आज्ञा के बिना न वह किसी को भोज टे सकते थे न

ब्याह कर सकते थे। उसने कभी किसी बड़े अमीर को किसी दूसरे शक्तिमान अमीर की बेटी से ब्याह करने की आज्ञा नहीं दी। कारण यह कि वह डरता था कि दोनों मिलकर बहुत शक्तिमान न हो जायें। इन बातों का बादशाह स्वयं फैसला करता था कि किसान कितने खेत जोते, कितने नौकर चाकर रखे, और कितनी भेड़ बकरियाँ और गाय बैल पाले। कोई मनुष्य जो बहुत सा धन बटोरता तो बादशाह उसका धन छीन लेता था क्योंकि उसको यह खटका था कि लोग धनी और शक्तिमान हो जायेंगे तो कदाचित् बिद्रोही भी हो जायें। हर वस्तु का मोल भाव बादशाह ठीक करता था। दूकानों के खुलने और बन्द होने के समय भी वह ही नियत करता था। अन्तिम अवस्था में उसके राज का प्रबंध बिल्कुल ही बिगड़ गया था। वह शराब पीने लगा था और राजकार्य और सारे अधिकार मलिक काफूर के हाथ दे बैठा था।

६—मलिक काफूर चाहता था कि आप बादशाह बन जायें। इस कारण दिल्ली से हिलता न था। बादशाह बूढ़ा था उसकी बुद्धि भी ठिकाने न थी। मलिक काफूर ने उसी के हाथों से उसके बेटों को कैद करा दिया। जब चित्तौड़ और गवालियर के राजपूतों और दखिन के मरहठों ने देखा कि अलाउद्दीन के ज़बर्दस्त हाथों से राज निकल गया तो खुल्लम खुल्ला बिद्रोही होकर स्वतंत्र हो गये। अन्त में यह हाल हुआ कि काफूर ने बादशाह को विष दे दिया और उसके दोनों बेटों की आंखें निकलवा डालीं और सिंहासन पर भी हाथ मारा। परन्तु बादशाह के निज सिपाहियों ने, जो अफ़ग़ान थे, काफूर को मार डाला और अलाउद्दीन के तीसरे पुत्र सुबारक को गद्दी पर बिठा दिया।

१०—सुबारक का नाम तो सुबारक था किन्तु कर्मों के बिचार से वह खिलजी वंश के सब से मनहस बादशाहों में हुआ है। उसने अपने छोटे भाई की जो एक नन्हा सा बच्चा था आंखें निकलवा डालीं। जिन लोगों को सहायता से उसे राज मिला था उनको भी मरवा दिया और एक नीच जाति के हिन्दू दास को जो मुसलमान हो गया था खुसरो खां की पदवी देकर अपना मन्त्री बनाया। सुबारक दो बरस राज करने के पीछे उसी मन्त्री के हाथ से मारा गया। खुसरो खां बादशाह बना और अपना नाम नासिरुद्दीन रक्खा। उसने खिलजियों के वंश के बच्चे बच्चे तक को मरवा डाला परन्तु आप भी बहुत दिनों राज न कर सका। गयासुद्दीन तुगलक जो एक शक्तिमान सर्दार और पञ्जाब का हाकिम था दिल्ली पर चढ़ आया; नासिरुद्दीन को मार डाला और इस कारण से कि खिलजी वंश का कोई नाम लेना न बचा था आप बादशाह बनकर दिल्ली के सिंहासन पर बैठ गया।

२५—तुगलक वंश।

(१२२० ई० से १४१४ ई० तक ।)

१—इस वंश से आठ बादशाह हुए। इन में से दोही प्रसिद्ध हैं; एक अपने दुष्टपने के कारण और दूसरा अपनी भलाई और सुप्रबंध के निमित्त। बदनामी का टीका महम्मद तुगलक के माथे पर है जो इस वंश का दूसरा बादशाह था; और नेकनामी का छत्र फीरोज़ तुगलक के सिर पर है जो इसके पीछे तीसरा बादशाह हुआ।

२—इस वंश का पहिला बादशाह गयासुद्दीन था। यह बलबन के तुर्की गुलाम का एक बेटा था, जिसने एक हिन्दू स्त्री के साथ विवाह कर लिया था। उसने पांच बरस राज किया। इसके

पोछे उसका पुत्र जूनाखां गद्दी पर बठा जो महम्मद तुगलक के नाम से प्रसिद्ध है। इस ने २७ बरस राज किया। इसका समय देश के लिये राजरोग था। प्रजा उसको हत्यारा सुलतान कहा करती थी। इसने ऐसी ऐसी विचित्र बातें और दुराचार किये कि बहुत से हिन्दू इसे पागल कहा करते थे। इसके समय में जब मुगलोंने बड़ी सेना लेकर चढ़ाई की तो यह उन से लड़ा तो नहीं पर अपने खजाने का सारा धन देकर उनको लौटा दिया।

३—खजाना खाली हो गया ; तो इसने तांबे का सिक्का चलाया और प्रजा को आज्ञा दी कि चांदी के रुपये की जगह तांबे का सिक्का ले। प्रजा ने यह न माना। इसने कर बढ़ाना आरम्भ किया ; और बढ़ाते बढ़ाते पहिले से दूना कर दिया। प्रजा से जब कर न दिया गया तो खेती बारी से मुंह मोड़ कर खेतों को बे बोये जोते छोड़ कर भाग गई। अब बादशाह ने प्रजा के मारने के लिये सेना भेजी। सैनिकों ने जंगलों में जाकर प्रजा को घेर लिया और इस तरह मारडाला जैसे शिकारो शिकार में जंगलो जन्तुओं को मारते हैं।

४—महम्मद तुगलक ने दो बार दिल्ली के रहने वालों को आज्ञा दी कि देवगिरि चले जाओ जो दखिन में दिल्ली से ८०० मोल है। इस ने देवगिरि का नाम बदलकर दौलताबाद रक्खा मानो यह नाम रखते ही वह दौलत का घर हो जायगा। देवगिरि से दिल्ली तक कोई सड़क न थी। विन्ध्याचल पर्वत और बनों के बीच में होकर जाना पड़ता था। रास्ते में कोई खाने पीने का सुभौता भी न था। बहुत से लोग राह में मर गये और जो बचे खुचे देवगिरि पहुंचे उनके लिये रहने को वहां घर न थे। निदान बादशाह ने आज्ञा दी कि तुम लोग फिर दिल्ली लौट जाओ।

५—महम्मद तुगलक हिन्दुओं से बहुत जलता था ; जंगी और मुल्की ओहदे अफगानों को देता था, जो न हिन्दुओं को

बोली जानते थे न उन पर दया करते थे। अपने देश के बागियों को वह दबा नहीं सकता था; फिर भी एक लाख सिपाही उसने चीन को भेज दिये कि जाओ चीन को जीत लो। यह सेना योही नष्ट हुई। बहुत सी तो हिमालय पर्वत में ठिठुर कर मर गई, और रही सही जो लौट कर आई उसे बादशाह ने मरवा डाला।

६—सूबेदारों और ऊंचे पद के लोगों ने जब यह कुप्रबंध देखा तो विद्रोही होकर स्वाधीन बन बैठे। बंगाले और गुजरात में पठानों ने अपना राज स्वतंत्र बना लिया। तिलंगाने और करनाटक के हिन्दूराजा जो अलाउद्दीन खिलजी के समय में आधीन किये गये थे अब फिर स्वाधीन बन गये। सन् १३३६ ई० में एक हिन्दू राजा हरिहर ने तुंग नदी पर विजयनगर में अपना राज्य स्थापित किया। सन् १३४७ ई० में एक अफगान सरदार ने जिसका नाम हसन था दखिन में बादशाही की नौव डाली।

७—महम्मद तुगलक के पीछे उसका भतीजा फीरोज़ तुगलक गद्दी पर बैठा। यह पठान बादशाहों में सब से अच्छा था। इस ने ४० बरस तक राज किया, और देश को भलाई और प्रजा के सुख के लिये बहुत से उपाय किये; सड़कें बनवाईं, नहरें निकालीं, यात्रियों के लिये सरायें बनवाईं और फ़ारसी अरबी के मदरसे खुलवाये। इसने और पठान बादशाहों की अपेक्षा प्रजा के साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया। परन्तु धर्म के विषय में यह भी बड़ा कट्टर था; जो हिन्दू अपना धर्म नहीं छोड़ते थे उन पर बहुधा बड़ी निठुराई करता था; हिन्दुओं के मंदिर गिराकर उनके इंट मसाले से मसजिदें बनाना अपना मुख्यधर्म समझता था। इसने अपने जीवनचरित में जो उसने अपने हाथों लिखा था आपही इन सब बातों को स्वीकार किया है।

८—फीरोज़ तुगलक के पीछे चार बादशाह हुए जिन्होंने ने कुछ

थोड़े दिनों तक राज किया। इनके समय में सूवे पर सूवा बिद्रोही होता गया कुछ सूवे तो राजपूत दबा बैठे, और कुछ पठानों ने ले लिये। तुग़लक कुटुम्ब के अन्तिम दिल्ली के बादशाह का नाम महमूद था। दिल्ली और उसके आस पास सूवों ही पर यह बादशाहत करता था। इसके समय में तातारी मुग़लों ने अमीर तैमूर की सरदारी में हिन्दुस्थान पर फिर चढ़ाई की।

२६—तैमूर लंग।

१—जिस समय में तुग़लक वंश के अन्तिम बादशाह का दिल्ली में राज था, तुर्किस्तान में एक बड़ा शक्तिमान सद्दार जिसका नाम तिमर या तैमूर था राज करता था। तैमूर का शरीर लम्बा और रंग गोरा, उंचा माथा चमकीले नेत्र और कड़ी बोली थी। इसकी टांगें लम्बी और उंगलियां मोटी मोटी थीं। यह लंगड़ा था इसी कारण इसे तैमूर लंग कहते हैं। यह वास्तव में तुर्क था और शहर का रहनेवाला था। परन्तु इसकी सेना तातारियों से भरी थी। इस कारण इसको भी तैमूर तातारी कहते हैं।



तैमूर लंग।

२—सन् १३६८ ई० में तैमूर ने तुर्कों तातारियों और इरानियों की एक बड़ी भारी सेना के साथ उत्तर-पश्चिम की राह से आकर हिन्दुस्थान पर धावा मारा और मार

काट मचा दो। अब इसको पांच सौ बरस से अधिक हो चुके हैं परन्तु न इससे पहिले कभी ऐसी मार धाड़ हुई और न इससे पोछे। दिल्ली का पठान बादशाह आप मुसलमान था; इस कारण यह भी नहीं कहा जा सकता कि उसने इतनी मार काट मुसलमान दीन के बढ़ाने के लिये की थी। इसकी तो अभिलाषा यह थी कि हिन्दुस्थान को धड़ाधड़ लटे मारे और यही इसने कर दिखाया।

३—तैमूर अपने तातारी टोड़ोदल को साथ लेकर अफगानिस्तान से होता हुआ पंजाब में आया और कूच पर कूच करता हुआ धीरे धीरे दिल्ली पहुंचा; राह में जो स्थान पड़े सब को सफाचट करके छोड़ गया। जहां जहां आबादी थी वहां लाशों के और आग की प्रचण्ड ज्वाला के सिवा और कुछ नहीं दिखाई पड़ता था। जब दिल्ली के पास पहुंचा तब उसके साथ एक लाख कैदियों को भौड़भाड़ थी। उसने देखा कि कौन इनका बोझ सहाले और देख भाल करे, इस कारण १५ बरस से अधिक आयु-वाले कैदियों को मरवा डाला।

४—यह समाचार दिल्ली में जसे पहुंचा कि सब के उसी समय भय के मारे मुंह पीले हो गये। बादशाह छिपकर शहर के चार दिवारी के अन्दर जा बैठा; पर थोड़े दिनों के पोछे जब मन में तरङ्ग उठी तो सेना लेकर नगर के बाहर निकल आया।

५—तैमूर अवसर पाकर तुरन्त बादशाह पर चढ़ आया। महमूद तुगलक की हार हुई। पांच दिन बराबर तातारी शहर में घूमे; कहीं आदमियों को मारते थे; कहीं आग लगाते थे। निदान जब थक गये और लूट खसोट भी चुके तो बहुत से कैदी और लूट का धन लेकर हिमालय के नोचे पंजाब में पहुंचे और वहां से काबुल होते हुए तुर्किस्तान को लौट गये।

६—दिल्ली चौपट हो गई। तैमूर पांचही महीने हिन्दुस्थान में रहा था। पर जो जो अत्याचार और उपद्रव उसने और उसके नीचकर्मी तातारी सिपाहियों ने किये, आज तक हिन्दुस्थान के वासियों को नहीं भूले।

२७—हिन्दुस्थान की दशा तैमूर के जाने के पीछे।

(सन् १४०० ई० से सन् १५०० ई० तक)

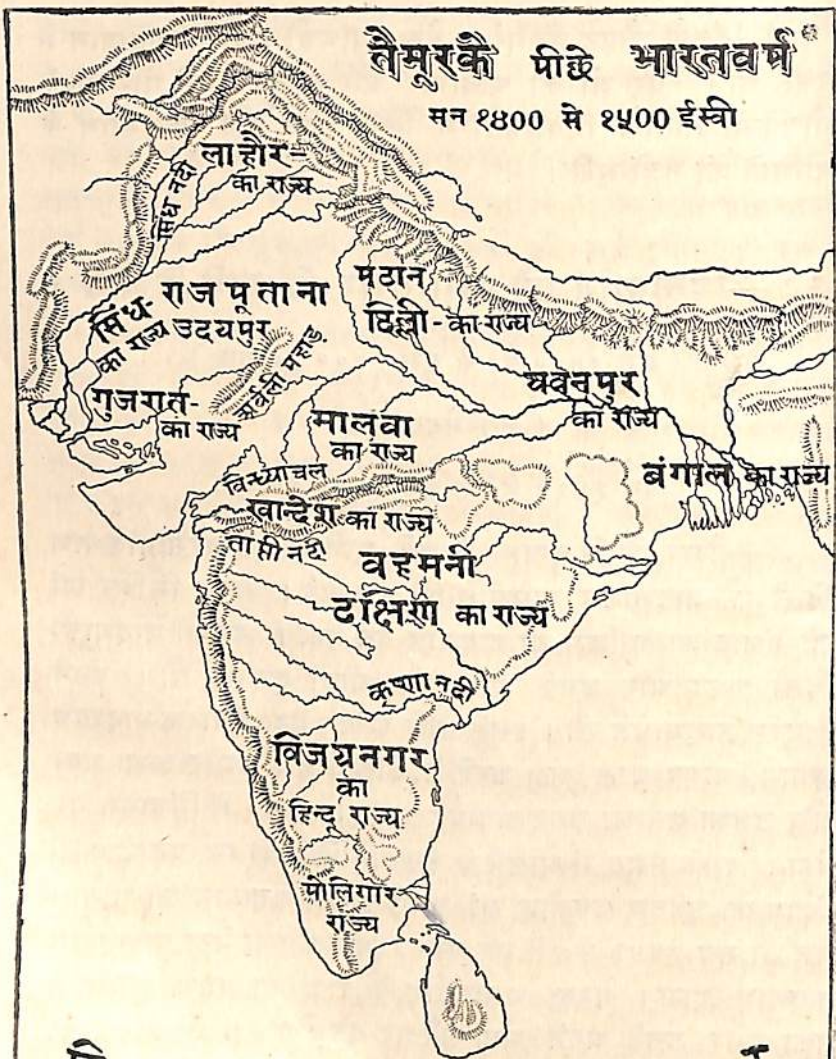
(१) सैयद वंश।

(सन् १४१४ ई० से सन् १४५० ई० तक)

१—तैमूर के हिन्दुस्थान से चले जाने के ३६ बरस पीछे तक दिल्ली की बादशाहत नाममात्र को रह गई। सयद खिजिर खां जो पंजाब का हाकिम था बादशाह बन बैठा। इसकी बादशाही दिल्ली शहर और उसके आस पास थोड़ी दूर तक थी। इसने ७ बरस बादशाहत की। इसके पीछे इसका बेटा सुबारक बादशाह हुआ। बारह बरस राज करने के पीछे यह भी मार डाला गया और उसका भतीजा सयद महम्मद सन् १४३३ ई० में सिंहासन पर बैठा। इसके समय में मालवे के सुलतान ने दिल्ली पर चढ़ाई की। पंजाब का सूबेदार बहलोल खां लोधी इसकी सहायता को आया। यह भी सन् १४४३ ई० में मर गया। और इसका बेटा अलाउद्दीन बादशाह हुआ। परन्तु अलाउद्दीन से राज का प्रबन्ध संभल न सका और उसने अपने आप सूबेदार बहलोल खां को बादशाही का अधिकार दे दिया और अपनी ज़मीन्दारी पर चला गया और वहां २८ बरस सुख से बिताकर परलोक सिधारा।

तैमूरकौ पीछे भारतवर्ष

सन १४०० से १५०० ईस्वी



वि द्य म हा सा ग र

(२) लोधी वंश ।

(सन् १४५० ई० से सन् १५२६ ई० तक)

१—बहलोल खां लोधी ने दिल्ली के बादशाह होने पर पंजाब के सूबे को भी दिल्ली में मिला लिया । यह सैयदों की अपेक्षा बड़ा शक्तिमान बादशाह था । उसने २६ बरस की लड़ाई के पीछे जौनपुर की बादशाहत को जो पूर्व में अवध और इलाहाबाद के सूबों से घिरी थी अपने अधिकार में कर लिया । इसके शासन में पंजाब से लेकर बिहार तक सारा देश था । मुसलमान ऐतिहासिक लिखते हैं कि उसने बहुत अच्छी बादशाही की । इसको ऊपरी दिखाव की इच्छा न थी । यह कहा करता था कि ऊपरों धूम धाम से कोई लाभ नहीं है । अच्छा और ठीक कर लेना, देश का अच्छा प्रबन्ध करना ही धम धाम और बड़ाई है । उसने सन् १४५० ई० से सन् १४८८ ई० तक अड़तीस बरस राज किया । बहलोल खां के मरने के पीछे उसका बेटा सिकन्दर लोधी बाप की राजगद्दी का स्वामी हुआ ।

२—सिकन्दर लोधी ने बाप के राज को और भी बढ़ाया और बिहार के प्रान्तों को जो जौनपुर से दूर बसे थे जीत कर अपने राज में मिला लिया । मुसलमान प्रजा के साथ उसका जियादः अच्छा बर्ताव था । उसने दिल्ली को छोड़ कर आगरे को राजधानी बनाया और सन् १४८८ ई० से सन् १५१७ ई० तक २९ बरस राज करके मर गया ।

३—इस वंश का तीसरा और अन्तिम बादशाह इब्राहीम लोधी था । उसने कुल नौ बरस राज किया । इसका प्रबन्ध अच्छा न था । उसने अपने एक भाई को जो जौनपुर का सूबेदार था मरवा डाला ; और दूसरे को बन्दी कर दिया । पुरखों के जीते हुए

देश भी उसके हाथ से निकल गये। अफ़ग़ानों के बहुत से बड़े बड़े अमीर दिल्ली के शाह को अपना शिरोमणि समझने लगे थे।



इब्राहीम लोधी ।

यह छोटी छोटी रियासतों के अधिकारी थे और सम्राट उनका मान करता था और इन्हीं उमरावों और जंचे पदवालों की सहायता पर राज थमा था। इब्राहीम ने यह रीति भी बदल दी। जब यह राजसभा में आते तो उनको नौकरों की तरह हाथ जोड़े खड़ा रखता। उनको अधिकार न था कि बिना बुलाये बादशाह के सामने जीभ तक डुला सकें। अफ़ग़ानी लोग जो अपने मान और रखरखाव

पर बड़ा ध्यान रखते थे इस चालसे बहुत बिगड़ गये। बहुतों जिन्होंने अपनी मानहानि न सही गई मरदा डाले गये और बहुत से विद्रोही हो गये, जैसे चित्तौड़ का राजा संग्राम सिंह और पंजाब का सूबेदार दौलत खां। इन्हीं ने काबुल के मुग़ल बादशाह को सन्देश भेजा कि आप आयां और इब्राहीम से राज छीन लें। उसने प्रसन्नता पूर्वक इस बात को खीकार किया। इब्राहीम की हार हुई और हिन्दुस्थान मुग़ल बादशाहों के हाथ आ गया।

४—इस समय उत्तरीय और मध्य भारत में मुसलमानों की कुछ रियासतें थीं। इन सब के अफ़ग़ान मालिक किसी समय दिल्ली के बादशाह के सूबेदार थे। पञ्जाब, बङ्गाला, जौनपूर, गुजरात, मालवा, मुलतान, सिन्ध सब पठानों की रियासतें थीं। अरवली पर्वत के दक्षिण की ओर राजपूताने में कई राजा राज करते थे। उनमें सब से शक्तिमान उदयपूर या चित्तौड़ का राजा था।

५—दखिन में दो बड़े राज थे, मध्य में पठानों का वह बड़ा राज्य जिसे बहमनी कहते थे और दक्षिण में हिन्दुओं का विजयनगर का राज्य जिसमें दखिन का सारा भाग मिला हुआ था। पगले अध्याय में यह सब बातें कही जायंगी कि पठान दखिन में कब और किस भांति फैले; बहमनी और विजयनगर के राज कब और किस भांति बने; और इनके पीछे दक्षिण में मुसलमानों ने कैसे छोटे छोटे राज स्थापन किये।

२८—दखिन में पठानों की चढ़ाइयां।

(सन् १२८४ ई० से सन् १३१२ ई० तक)

१—पहिले पहिल खिलजियों के समय में दखिन पर मुसलमानों के आक्रमण हुए। उस समय पूर्व का तिलगू देश जहां प्राचीन काल में अंध्र का राज था तिलंगाने के नाम से प्रसिद्ध था और वारंगल उसकी राजधानी थी। पश्चिमीय भाग जहां मरहठी भाषा बोली जाती है महाराष्ट्र कहलाता था और देवगिरि उसकी राजधानी थी। दक्षिणीय देश जहां कनाड़ी भाषा बोली जाती है कारनाटक कहलाता था। यहां राजपूतों के प्रसिद्ध वंश बल्लाल ने तीन सौ बरस अर्थात् १००० ई० से १३०० ई० तक राज किया और द्वारसमुद्र जो मैसूर में है उसकी राजधानी था। राजपूत का एक और वंश चालुक्य कई सौ बरस पहिले हैदराबाद के दक्षिण पश्चिमीय भाग में जहां कनाड़ी मरहठी दोनों भाषाएँ बोली जाती हैं राज करता था। उसकी राजधानी कल्याण था जो हैदराबाद से सौ मील पश्चिम की ओर है। उड़ैसे में छः सौ बरस से केसरी वंश के राजपूत राज करते थे; उनकी राजधानी कटक थी। दक्षिण भारत में और भी कई हिन्दू राज्य थे।

२—ऊपर कह चुके हैं कि जलालुद्दीन खिलजी के समय में अर्थात् १२८४ ई० में अलाउद्दीन ने कुछ सवार लेकर देवगिरि पर चढ़ाई की थी। देवराजा को बिबस होकर उसको बहुत सा धन भेंट करना पड़ा था, जिसको लेकर अलाउद्दीन दिल्ली लौट आया। जब अलाउद्दीन आप बादशाह हुआ तो उसने दखिन जीतने का



हली वेद का मन्दिर।

बिचार किया और कई बार अपने सेनापति काफूर को इस काम के लिये भेजा। काफूर ने कुल दक्षिणीय भारत को १३२०—२१ ई० में रौंद डाला और वहां के हिन्दू राजा का सर्वनाश किया। कहते हैं कि यह रासकुमारी के पास रामेश्वर के मन्दिर तक पहुँचा था। अब दूसरी बार यह बात सिद्ध हुई कि उत्तर के ठंढे देशों के अफगान दक्षिण के गरम देशों के हिन्दुओं से अधिक बली थे।

हिन्दू लड़े परन्तु सब जगह हारे। अफ़ग़ानों ने रत्ती रत्ती मन्दिरों को लूट लिया। उनकी मूर्तियाँ बाहर फेंक दीं और तोड़ डाली। जिन लोगों ने उनको मारने की चेष्टा की उनको मारा। हलीबेद जो मैसूर में है उस में ८० बरस से बल्लाल राजा धीरे धीरे एक अत्यन्त सुन्दर और विशाल मन्दिर बनवा रहे थे जोकि इस देश में अद्वितीय था। मुसलमानों ने उसका बनना बन्द करा दिया। आज तक वह मन्दिर उसी भांति अधबना पड़ा है।

३—गोरी और खिलजी बादशाहों के अफ़ग़ान और पठान सैनिक अनेक जातियों और भुंडों के थे। हर एक का अलग अलग देश अफ़ग़ानिस्तान की पहाड़ी घाटियों में था। इनके सिवा तुर्किस्तान और मध्य एशिया के मुल्कों के लोग लूट खसोट की आशा पर गोरी बादशाहों की सेना के साथ भारत में आये थे। जो आदमी इस भांति कुछ दल इकट्ठा कर लेता या धनी बन बैठता था। जब अलाउद्दीन और काफ़ूर और खिलजी और तुग़लक वंश के बादशाहों ने दखिन की रौंद डाला तो वह आधीन देश की रक्षा और प्रबंध के लिये ठाँव ठाँव अफ़ग़ान सरदारों को छोड़ आये जिस में यह हिन्दू राजाओं से सदा कर लेते रहें और उसको बढ़ने न दें। समय के बीत जाने पर जब दिल्ली के अफ़ग़ान बादशाह दुर्बल हो गये और इन अमीरों को अपने बस करने के योग्य न रहे तो यह स्वाधीन बादशाह बन गये।

२६—बहमनी और विजयनगर के राज्य।

१—मुहम्मद तुग़लक के राज में ऐसा गड़बड़ मचा कि दखिन के सारे मुसलमान बागी हो गये और हसन गंगू जो सब से जबरदस्त था सन् १३४७ ई० में गुलबर्गे की अपनी राजधानी बनाकर

स्वतन्त्र बादशाह बन गया। हसन गंगू की बादशाही बहमनी बादशाही के नाम प्रसिद्ध है। यह सन् १५२६ ई० तक १६० बरस रही। वह सारा देश जो अब हैदराबाद के नाम से प्रसिद्ध है इसी का भाग था। जिस समय लोधी, तुग़लक, सैयद दिल्ली के बादशाह थे बहमनी कुल के बादशाह गुलबर्ग में राज करते थे।

२—हसन एक दरिद्र अफ़ग़ान था जो तीस बरस तक गंगा नामी एक ब्राह्मण के खेतों में काम करता था। एक दिन हसन को खेतों में कुछ गड़ा हुआ धन मिला। यह उसने अपने मालिक को दे दिया। ब्राह्मण उसकी इमान्दारी से इतना प्रसन्न हुआ कि दिल्ली के बादशाह की सरकार में जहाँ इसकी बहुत कुछ प्रतिष्ठा थी, उसने कह सुनकर हसन को सौ सवारों का सर्दार बनवा दिया। जिस समय मुहम्मद तुग़लक देवगिरि अर्थात् दौलताबाद को अपनी राजधानी बनाने के विचार में था, हसन अपने सौ तिलङ्गों को संग लिये दखिन पहुँचा और दूसरे अफ़ग़ानी सरदारों की भांति एक छोटे से इलाके का हाकिम बनकर वहीं बस गया। जब यह बादशाह हुआ इसने अपने पुराने स्वामी गंगा मिश्र को मन्त्री के पद पर रक्खा और आप सुलतान हसन गंगू बहमनी की पदवी धारण की। बहमन अथवा बहमनी ब्राह्मण शब्द का अपभ्रंश है। उसके उत्तराधिकारियों ने भी ब्राह्मणों को अपना मन्त्री बनाया और अपनी हिन्दू प्रजा के साथ भी अच्छा बर्ताव किया।

३—इसी समय के लगभग जब बहमनी राज का जन्म हुआ तो तुंगभद्रा नदी के तट पर विजयनगर का एक हिन्दू राज स्थापित हुआ। इस राज की नींव डालनेवाले हरिहर और बुक्काराय नामी दो भाई थे जिन्होंने मलिक काफ़ूर के आक्रमण के समय वारङ्गल से भाग कर यहाँ शरण ली थी। उस समय विजयनगर का राज्य सब हिन्दू राज्यों से ज़बर्दस्त था। सन् १३३६ ई० में

इसकी नींव पड़ी थी और २३० बरस के लगभग अर्थात् १५८५ ई० तक यह राज्य बना रहा। कृष्णा नदी से लेकर रासकुमारी तक सारा देश इसके आधीन था। बहुत से छोटे छोटे रईस और झाकिम इसके आधीन थे जो नायक कहलाते थे और विजयनगर को कर देते थे। इनमें से मैसूर का नायक सब से बड़ा था।



विजयनगर के राजा का हथसार।

गढ़ों और राजमन्दिरों में के टूटे फूटे खंडहर जो अब तक वर्तमान हैं इस राज्य की पूर्व अवस्था को भली भांति प्रगट करते हैं। इस अन्तिम समय में हिन्दुओं को विद्या और कला की जो कुछ बढ़ती हुई विजयनगर ही में हुई। विजयनगर के राजा वैष्णव थे। इनके राज में दखिन में प्रत्येक स्थान पर बुद्ध और जैन मत की जगह हिन्दू धर्म का प्रचार हुआ। विजयनगर के

पहिले दो राजाओं के मन्त्री प्रसिद्ध ब्राह्मण माधवाचार्य थे। दखिन में हिन्दू देवताओं की आराधना का फिर से प्रचार होना इन्हीं के परिश्रम का फल समझना चाहिये।

४—पहिले तो बहमनी सुलतान और विजयनगर के राजा एक दूसरे के मित्र और शुभचिन्तक थे। हिन्दू सैनिक विशेष करके मरहठे बहमनी सेना में भरती होकर लड़ते थे। मुसलमान सिपाही विजयनगर की सेना में भरती होते थे पर जब दोनों रियासतें जोर पकड़ गईं और दिल्ली के बादशाह का डर जाता रहा तो आपस में भगड़े होने लगे और बड़ी बड़ी लड़ाइयां हुईं।

५—विजयनगर में १५० बरस बीतने पर बुक्का वंश का अन्त हुआ और एक दूसरा वंश गद्दी पर बैठा। इस परिवार के पहिले राजा का नाम नृसिंह था और इसीके नाम पर इस वंश का नाम पड़ा। इस वंश के कृष्ण राजा और बहमनी सुलतान में घोर युद्ध हुआ। एक समय सुलतान के यहां नाच रङ्ग का जलसा था, सुलतान शराब के नशे में चूर था। गवैयों के गाने बजाने से बहुत प्रसन्न हुआ और तरङ्ग में आकर कृष्ण राजा के कोषाध्यक्ष को गवैयों को इनाम देने का पत्र दिया। इसका अभिप्राय यह था कि कृष्ण राजा मेरे आधोन है और अवश्य मेरी आज्ञा का पालन करेगा। कृष्ण राजा को यह पत्र पढ़ कर बड़ा क्रोध आया। वह सेना लेकर तुङ्गभद्रा के पार गया और एक बहमनी किला जीत कर उसके कुल मनुष्य मार डाले। उधर सुलतान को इसका समाचार मिला। उसने प्रतिज्ञा की कि जबतक एक लाख हिन्दू न मार डालूंगा अपनी तलवार म्यान में न करूंगा। यह भी सेना लेकर नदी के पार गया और मर्द औरत बच्चा जो कोई उसके सामने पड़ा तलवार से साफ करके उसने एक लाख की सौगन्ध पूरी की। अब कृष्ण राजा के ब्राह्मण मन्त्री ने राजा को

समझाया कि देवता आपसे अप्रसन्न हैं और उनके क्रोध से बचने का यही उपाय है कि आप सुलतान की आज्ञानुसार अपने कोष से रूपया दे दें। राजा ने यह सोच समझ कर रूपया दे दिया और लड़ाई समाप्त हुई।

६—बहमनी बादशाहों ने गुलबर्गे में राज किया। इनके पीछे अहमद शाह ने १४३१ ई० में गुलबर्गा छोड़ कर बीदर को अपनी राजधानी बनाया। यह बहमनी वंश का सब से बड़ा बादशाह था। इसने विजयनगर के राजा देव राजा को परास्त किया। राजा ने उसे अपनी बेटी ब्याह दी और बड़ा भारी कर देना स्वीकार किया। तीन दिन तक ब्याह का जलसा रहा इसके पीछे जब सुलतान अपने डेरों को चला तो राजा उसके साथ उसके डेरे तक न गया किन्तु आधी ही दूर से लौट आया। यह बात बादशाह को बुरी लगी। वह इसको न भूला और कुछ बरस बीतने पर फिर राजा से लड़ना निश्चय किया पर इस बार राजा ने उसके ऐसे दांत खट्टे किये और युद्ध में परास्त किया कि वह लज्जा और शोक से मरही गया।

७—सन् १५०० ई० में बहमनी राज्य का ढांचा टूटने लगा। चार अफ़गान रईस जो सुलतान की ओर से भिन्न भिन्न इलाकों के हाकिम थे सुलतान की आधीनता से अलग होकर स्वतंत्र हो गये। अन्त में यह हुआ कि बीदर और उसके आस पास का देश तो सुलतान के अधिकार में रहा और सब उसके हाथ से निकल गया। यह भी उसके मंत्री ने दबा लिया और आप बीदर का सुलतान बन बैठा।

३०—दखिन की मुसलमानी रियासतें ।

(सन् १५०० ई० से सन् १६५७ ई० तक)

१—बहमनी रियासत के बिगड़ने पर पांच रियासतें स्थापित हुईं । बीच में बीदर, उत्तर में बरार और अहमदनगर, और दक्षिण में बीजापुर और गोलकुण्डा । बीजापुर, अहमदनगर और बरार तीनों मिलकर देवगिरि अथवा महाराष्ट्र की प्राचीन रियासत की स्थानापन्न थीं ।

२—सन् १४८८ ई० में यूसुफ़ आदिलशाह ने दखिन के पश्चिमीय भाग महाराष्ट्र देश में बीजापुर की रियासत स्थापित की । यूसुफ़ सुराद सुलतान रुम का बेटा था । बाप की मृत्यु के पीछे यूसुफ़ के भाई ने उसको मरवा डालना चाहा किन्तु मांने उसके प्राण बचाने के लिये उसे फ़ारस भेज दिया । यूसुफ़ दासों की भांति बिका और बहमनी सुलतान के दरबार में पहुँचा । यहां पर वह होते होते एक ऊँचे पद से दूसरे ऊँचे पद पर नियुक्त होगया यहां तक कि बीजापुर का हाकिम बना दिया गया । जब उसने देखा कि बीजापुर का बादशाह शक्तिहीन हो चला है तो वह स्वयं बीजापुर का बादशाह बन बैठा । अली आदिल शाह जिसने प्रसिद्ध मलका चांद बीबी से ब्याह किया था इसी वंश का था । चांद बीबी अहमदनगर के बादशाह निज़ाम शाह की बेटा थी । इसने राज काज में अपने पति की बड़ी सहायता की और घोड़े पर सवार होकर उसके साथ लड़ाई के मैदान में जाती थी । यह स्त्री खुले दरबार में बठ कर राज का काम देखती थी । औरङ्गजेब के राज के शिवाजी महाराष्ट्र देश के राजा हुए और बहुत सा इलाका बीजापुर का उन्होंने अपने राज्य में मिला लिया ।

सन् १६८६ ई० में औरङ्गजेब ने आप बीजापुर पर चढ़ाई की और उसे जीत कर आदिलशाही वंश का नाश कर दिया ।

३—अहमदनगर की रियासत का आरम्भ भी बीजापुर के साथ ही साथ १४८८ ई० में हुआ । इस रियासत की नींव निज़ाम शाह ने डाली थी । इसका बाप वास्तव में एक ब्राह्मण था और यह बचपन ही में दास होकर मुसलमान हो गया था । इसने अहमदनगर बसाया और सात बरस घेरे रहने के पीछे दौलताबाद को जीत लिया । १५८५ ई० में बादशाह अकबर के बेटे मुराद ने अहमदनगर को घेरा । उस समय अहमदनगर का कोई बादशाह न था । इस कारण अहमदनगर के लोगों ने चांद बीबी से जिसकी आयु अब पचास बरस की थी, प्रार्थना की कि आप इस राज्य का शासन अपने हाथों में लें । चांद बीबी अहमदनगर में आई और बीजापुर के बादशाह को उसने सहायता के लिये लिखा ; अहमदनगर के कोट की मरम्मत की और सेना लेकर स्वयं शत्रु से लड़ने को तयार हुई । मुगलों ने सुरंग लगाकर किले की दीवार उड़ा दी और चाहा कि इस राह से अन्दर घुस जायें और किला ले लें परन्तु चांद बीबी सिर से पैर तक कवच पहिने, हाथ में तलवार लिये, द्वार पर उपस्थित थी और बैरों के जो सैनिक निकट आते थे उन्हें पीछे हटाती थी । अहमदनगर के लोगों को एक स्त्री का यह साहस और वीरता देखकर ऐसा जोश आया और मुगलों की सेना पर ऐसे टूटे कि उसे पीछे हटना पड़ा । चांद बीबी ने रातों रात वह सुरङ्ग भरवा दी । सबेरेही समाचार मिला कि बीजापुर का बादशाह सेना लिये उसकी सहायता को आता है । मुराद ने चांद बीबी से सन्धि कर ली और पास का इलाका लेकर अहमदनगर से हाथ खींच लिया ! कुछ दिन पीछे एक नीच विद्रोही ने मरुका चांद बीबी को मार डाला । फिर अकबर बादशाह स्वयं

दखिन गया और अहमदनगर का क़िला जीता पर उसकी पीठ फिरते ही मलिक अम्बर ने सारा देश मुग़लों के पंजे से कुड़ा कर अपने आधीन कर लिया। अन्त में शाहजहाँ के राज्य में मलिक अम्बर के बेटों ने यह देश मुग़लों के हवाले कर दिया।

४—गोलकुंडा रियासत की नीव कुतुबशाह नामी एक ईरानी ने सन् १५१० ई० में डाली थी। इसके उत्तराधिकारी महम्मद ने हैदराबाद नगर बसाया। सन् १६८५ ई० में औरङ्गजेब ने गोलकुंडा को ब्रैर लिया। नगर निवासियों ने बड़ी वीरता के साथ उसका सामना किया पर अन्त में हार गये और यह कुल देश मुग़ल राज में मिल गया।

५—बीदर की रियासत कासिम बरीद की स्थापित की हुई थी। यह पहिले एक दास था फिर बढ़ते बढ़ते बहमनी सुलतान महमूद का मन्त्री हो गया था। इसने अपने स्वामी को क़द किया और स्वतन्त्र हो गया। इस वंश के सातवें बादशाह के समय में बीजापुर के सुलतान ने इसे जीत लिया। इसके पीछे १६८८ ई० में औरङ्गजेब ने बीदर का क़िला ले लिया।

६—बरार की रियासत सब से छोटी थी। इसकी नीव १४८४ ई० में इमादुल्लुल्क ने डाली थी। यह कनाड़ा का ब्राह्मण था और बहमनी सुलतान और विजयनगर के राजा की लड़ाई में कैद हो गया था। यह मुसलमान हो गया और बहुत ऊँचे पदों पर रहकर अन्त में बरार का हाकिम बनाया गया। फिर वहाँ का बादशाह बन गया। इसकी राजधानी एलिचपुर थी। बरार देश की सन् १५७२ ई० में अहमदनगर के बादशाह ने जीत लिया और फिर बुढ़ापे में बादशाह अकबर ने इसे जीता।

७—सन् १५६५ ई० में दखिन के चार मुसलमान बादशाहों ने विजयनगर के राजा राजाराम पर जो बड़ा अत्याचारों और

अभिमानी था चढ़ाई की। कृष्णा नदी के तट पर तालीकोट स्थान में बड़ा भारी युद्ध हुआ। लाखों मारे गये अन्त में मुसलमानों की जीत हुई। विजयनगर का सत्तनाश हो गया। कृष्णा नदी के दक्षिण जितने हिन्दू नायक और पालेकार विजयनगर की ओर से नियुक्त थे सब अपने अपने इलाकों के राजा हो गये।

३१—मुगल वंश।

१—मुगल और मंगोल एक ही शब्द है। मुगल उस देश से आये थे जिसे मंगोलिया कहते हैं और जो मध्य एशिया में चीन और तुर्किस्तान के बीच में है। उस देश को तातार भी कहते हैं। जो लोग उस देश में बसे थे वह समय समय पर अनेक नामों से पुकारे जाते रहे; जैसे सिथियावाले, तूरानी, तातारी। पुराने यूनानी ऐतिहासिक इन को सिथियन लिखते हैं। ईरानी इस देश को तूरान कहते थे। इस कारण यहां के रहनेवालों को तूरानी भी कहते हैं।

२—तुर्किस्तान आर्यों का पुराना निवासस्थान था। समय बीतने पर कुछ मुगल या तातारी पहाड़ पार करके तुर्किस्तान में उतर आये और जो आर्य वहां रहते थे उन के साथ रहने सहने लगे। उन्होंने ने आर्य स्त्रियों से व्याह कर लिया। इन्हीं की बोली बोलने लगे और इन के सजातीय बन गये। उस समय में यह लोग तुर्क कहलाते थे; बन बन फिरनेवाले असभ्य तातारियों से भिन्न थे और उन को नीच जानते थे। तुर्क लम्बे और सुन्दर होते थे। कोई कोई लम्बी दाढ़ी रखते थे। तातारियों का डील छोटा नाक चिपटी रंग पीला और मुंह फैला होता था; मुंह पर बाल न होते थे। तातारी मैले थे और बनमानुसों से कुछ ही अच्छे हों तो

हों। तुर्कों की भांति यह भी मुसलमान थे पर बहुतेरे तो नाम ही को। भारतवासी तातारी और तुर्क में भेद न जानते थे। मुगल वंश के बादशाहों को मुगल कहने का कारण यही है। यह लोग मंगोलिया के मुगल न थे। यह तुर्किस्तान के तुर्क थे और इन को तुर्की बादशाह कहना चाहिये।

३—भारत के मुसलमान बादशाहों में मुगल सब से ज़बरदस्त हुए। इस वंश के १५ बादशाह हुए। इन में आदि के ६ बहुत प्रसिद्ध हैं। पिछले ८ न ऐसे प्रसिद्ध थे और न उनके ऐसी शक्ति थी। पहिले ६ बादशाहों के नाम यह हैं; बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहांगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब।

३२—बाबर।

(सन् १५२६ ई० से सन् १५३० ई० तक)

१—तैमूर के मरने पर उसका राज बहुत सी छोटी छोटी रियासतों में बँट गया। एक रियासत कोकन्द की थी जो तुर्किस्तान का एक भाग है। बहुत दिन पीछे यह रियासत बाबर के हाथ लगी। बाबर तैमूर के नाती का बेटा था। बाप के मरने पर बाबर इस रियासत का मालिक हुआ। इस समय वह तेरह बरस का था।

२—राजसिंहासन पर बठाही था कि चाचा ने चढ़ाई की और जान के डर से बाबर को उस से लड़ना पड़ा। रियासत उसके हाथ से निकल गई। पर तुर्किस्तान के बहुत से बिना घरवार के सरदार और उनकी प्रजा बाबर को बराबर अपना बादशाह मानती रही और कभी उसका साथ न छोड़ा। बीस बरस तक बाबर इधर उधर फिरता रहा, आज यहाँ कल वहाँ।

नित किसी न किसी के साथ भगड़ा बखेड़ा होता रहा। आज जीता तो कल हारा और भाग कर जान छिपाता फिरा। पर इसके तुरक सिपाही सदा इसके साथ रहे। कभी कभी सारे दिन काठी उतार कर बैठना न मिलता और रात को कभी धरतो का बिछौना और आकाश का चँदवा छोड़ और कोई सुख से सोने की सामग्री न जुड़ी।

३—अंत को बाबर ने दक्षिण की ओर बढ़ना निश्चय किया। तुर्किस्तान में बाबर ऐसे सरदार बहुत थे; वहां राज्यस्थापन करना सुगम न देख पड़ा। लड़ते भिड़ते कई बरस बीत गये, शहर पर शहर जीते और खो दिये। जब देखो वही जंजाल दिखाई दिया। इसके सजातीय जो इसी की नाईं बेघरवार के थे इसके साथ आगे बढ़ने को राजी हो गये और पहाड़ के दरों में होकर अफ़ग़ानिस्तान में पड़े।



बाबर ।

४—अफ़ग़ान बड़े बीर और लड़ाके थे पर तुर्की सिपाही जो उत्तर से आये इनसे बढ़कर बलवान और बीर थे। बाबर ने काबुल और ग़ज़नी अपने बस में कर लिये। कई बरस यहां राज किया। पठानों का बल देखने चार बार पंजाब पर चढ़ा और जब आया पठानों के राज का कुछ न कुछ भाग छीन कर अपने किसी सरदार को उसका हाकिम बनाकर छोड़ गया। इसके पीछे जब उसे इस बात का भरोसा हो गया तो उसने अपने सरदारों से पूछा, कहो क्या कहते हो। सब ने एक मत होकर कहा कि, उद्योग करना चाहिये अगि भाग्य में जो कुछ हो।

५—बाबर इस समय ४० बरस का हो चुका था। कुल १३००० सिपाही उसके साथ थे पर उन में से एक एक सौ सौ लड़ाइयां लड़ चुका था और अपने स्वामी के लिये लड़ने मरने को तैयार था। बाबर ऐसे वीर और उसके लिये प्राणसमर्पण करने-वाले सिपाहियों को लेकर पंजाब में घुसा और सीधा दिल्ली की ओर चला गया।

६—पठान बादशाह इब्राहीम लोधी एक लाख पल्लन लेकर उसका सामना करने को बढ़ा पर उसके अफ़ग़ान सिपाही भारतवर्ष के गरम देश में रहकर अपने बाप दादों का बल और साहस खो बैठे थे। आर्यों के भारतवर्ष में आने के दिन से जब कभी उत्तरवालों का सामना पड़ा है सदा दक्षिणवालों को पीछे ही हटना पड़ा है। तुर्क ताज़ा विलायत के आये थे और उनका तन तेज बढ़ा चढ़ा था। वह आग बवण्डल की नाईं भारतवर्ष के पठानों पर टूट पड़े। बाबर अपने भिलमटोपवाले सवारों को लेकर पठानों के टिड्डीदल पल्लन में घुस गया और मुड़कर पिछाड़ी से उनका बध करने लगा। इब्राहीम की पांतियां टूट गईं और उसकी पल्लन में भागड़ पड़ गईं। इब्राहीम और उसके २०००० सवार खेत रहे। यह पानीपत की पहिली लड़ाई कही जाती है और १५२६ ई० में हुई थी।

७—इस लड़ाई से दिल्ली का सिंहासन बाबर को मिल गया। राजपूताने के राजाओं को छोड़ इस समय हिन्दुस्थान में मुसलमानों की पांच बादशाहतें थीं। पहिले बाबर ने उन देशों के लेने का उद्योग किया जो सय्यद और लोधी वंश के बादशाहों के हाथ से निकल गये थे। आप दिल्ली में रहा और अपने बेटे हुमायूँ को एक बड़ी पल्लन देकर पूर्व की ओर भेजा; अपने और विश्वास पात्र सेनापतियों को थोड़ी थोड़ी सेना देकर इधर उधर भेज दिया।

हुमायूँ ने थोड़े ही दिनों में जौनपूर का इलाका ले लिया और छः महीने के भीतर ही वह सारा देश दिल्ली राज्य में मिलगया जो कुछ काल तक लोधियों के अधिकार में था। दिल्ली और आगरे में लोधियों का बटोरा धन ढेर का ढेर बाबर के हाथ लगा। इस में से कुछ थोड़ा सा बाबर ने रहने दिया और सब अपने सिपाहियों और साथियों में बांट दिया। सिपाहियों को तो जो मिलना था सो मिलगया पर अफ़ग़ानिस्तान, तुर्किस्तान और ईरान में भी स्त्री पुरुष और बच्चों को घर बैठे बाबर ने भेंट पहुँचाई।

८—अब बाबर को राजपूतों से लड़ना रहगया। राजपूतों में इस समय चित्तौड़ (उदयपुर) का राजा संग्रामसिंह था जो राना सांगा के नाम से प्रसिद्ध है। इस ने मालवे के पठान बादशाह को परास्त किया था और सारे राजपूत राजा इसे अपना सरदार और सिरताज मानते थे। बाबर आप लिखता है कि राना अद्वितीय वीर था। एक लड़ाई में राना की एक आंख जाती रही थी दूसरी में एक हाथ कट गया था उसकी टांग टूटी हुई थी देह में नीचे से ऊपर तक नेज़े और तलवार के ८० घाव थे। सात राजा और दस सामंत लड़ाई के मैदान में उसके साथ आये। एक दिन वह था कि राना सांगा ने बाबर से कहला भेजा था कि आप आयेँ और दुष्ट पठान के पंजे से भारत को कुड़ियें। पर वह कब जानता था कि इब्राहीम को जीत कर बाबर भारतवर्ष में मुग़लराज्य स्थापित करेगा। वह यही समझा था कि तैमूर की तरह बाबर भी दिल्ली को 'लूट पाट कर काबुल चला जायगा और पठानों के नष्ट हो जाने पर राजपूत सारे देश में राज करने लगेंगे।

९—राना सांगा के साथ एक तो इब्राहीम का भाई महम्मद लोधी था जो अपने को भाई का उत्तराधिकारी मान कर बादशाही का दावा करता था, दूसरा हसनखाँ जो अफ़ग़ान सरदारों का

मुखिया था। इनके सिवाय बहुत से सरदार, सेनापति और सामंत थे जो लोभियों या पठानों की बादशाही फिर से स्थापन करना चाहते थे। यह सरदार और सामंत यह समझते थे कि जो बाबर भारत में रह गया तो हमारी रियासतें छिन जायंगी और हमारा कोई पुच्छन्तर न रहेगा। उन्होंने हिन्दुओं से भी यही कहा कि तैमूर की तरह बाबर भी तुम्हें वेदरदी से मारेगा और जो कुछ तुम्हारे पास है सब नोच खसोट लेगा। परिणाम यह हुआ कि सब के सब मिल कर एक बड़ी सेना लेकर बाबर का सामना करने आये। आगरे से २० मील पर सीकरी के मैदान में बड़ी भारी लड़ाई हुई। बाबर को मदिरा बहुत प्यारी थी पर इस लड़ाई से पहिले उसने यह मन्त्रत की कि हे अल्लाह इस अवसर पर मुझे जितादे तो मैं कभी शराब न पिऊंगा। सोने चांदी के जितने बरतन डेरे में थे सब तोड़ कर गरीबों को बांट दिये गये। जितनी मदिरा थी सब लुंढा दौ गई। जो ताजी शराब ग़जनी से बादशाह के पीने के लिये आई थी उसमें नमक प्रीसकर मिला दिया जिसमें वह पीने के काम को न रहै। बाबर ने जो देखा कि उसके कुछ साथी ढीले देख पड़ते हैं तो उसने सब को इकट्ठा करके यह व्याख्यान दिया, “जो पैदा हुआ है वह एक दिन ज़रूर मरेगा। केवल ईश्वर मौत से बचा है। फिर जब दो दिन आगे या दो दिन पीछे मरना सिद्ध है और हमारे मरने का दिन आगया है तो ऐसे अवसर पर अपने दीन (धर्म) और अपनी जाति के लिये मर्दों की तरह प्राण समर्पण करके क्यों न मर। नेकनामी से मरना मुंहकाला करके जीने से अच्छा है। तुम मेरे साथ कुरान उठाओ और कसम खाओ कि बैरी को पीठ न दिखायेंगे। जो हम बीरता से लड़ेंगे तो ईश्वर हमारा सहायक होगा और हम ज़रूर जीतेंगे”। बाबर के साथियों ने कुरान की कसम खाई कि बैरी को जीतेंगे या लड़ मरेंगे। परिणाम यह हुआ

कि राना सांगा की चार हुई और वह खेत से भाग खड़ा हुआ और थोड़े ही दिन पीछे मर गया। हसनखां भी मारा गया। बाबर को जीत की यादगारी में सिकरी को फतेहपुर सिकरी का नाम मिल गया। इसके पीछे राजपूतों ने दिल्ली लेने और भारत पर राज करने का उद्योग न किया। अब यह लोग राजपूताने में रहे और इसी को बाबर की चढ़ाइयों से बचाने में लगे रहे।

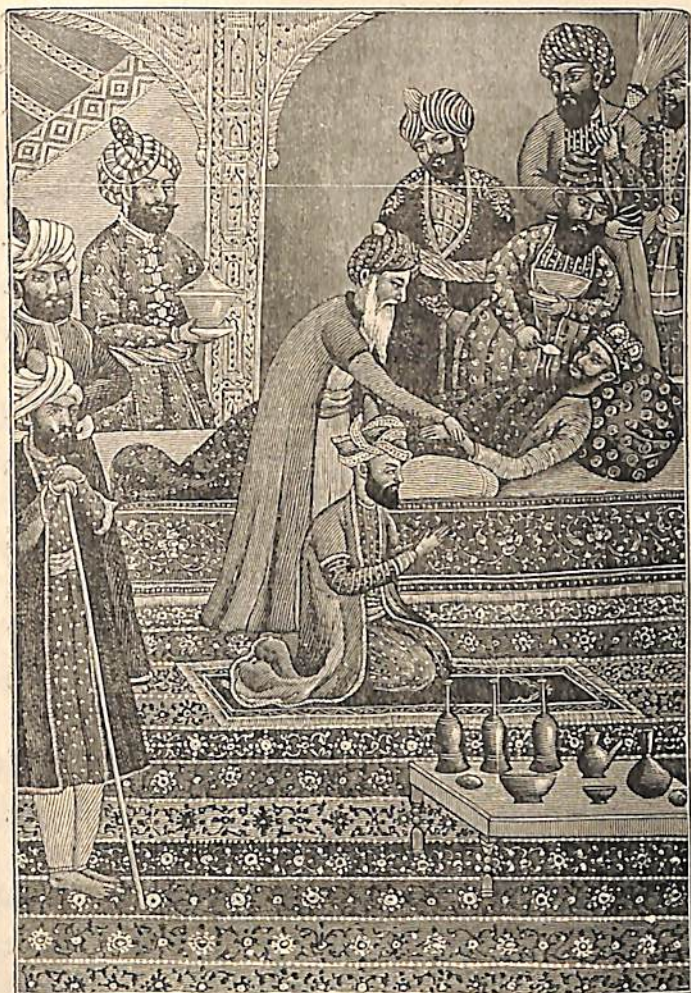
१०—दूसरे बरस बाबर ने चंदेरी पर चढ़ाई की। यह मालवे की सरहद पर राजपूतों का एक गढ़ था। राजपूत वीरता से लड़े पर गढ़ टूट गया। राजपूतों का यह नियम है कि न खुशी से आधीनता स्वीकार करते हैं न बरी से दया और क्षमा मांगते हैं। पहिले उन्होंने अपनी स्त्रियों का बध किया फिर नंगी तलवारें हाथ में लेकर गढ़ से बाहर निकले और मर्दों की तरह लड़ लड़ कर बैरी के हाथों से कट कट कर मर गये।

११—बाबर का असली नाम ज़हीरुद्दीन था। तुर्किस्तान के सर्दारों ने इसकी प्रशंसा में इसको बाबर का पदवी दी थी और अब वह इसी नाम से प्रसिद्ध है। बाबर उस भाषा में सिंह को कहते हैं और यह नाम इस बहादुर बादशाह को फवता है। यह इतना बलवान था कि दोनों कांख में पूरे डील के एक एक जवान को दबा कर कोट पर दौड़ सकता था; तैरने वाला ऐसा था कि जो नदी उसके सामने पड़ती थी उसको तर ही के पार करता था; सवार ऐसा था कि दिन दिन भर में सौ सौ मील के धावे मारता था।

१२—बाबर योद्धा तो था पर निर्दयी नहीं था। उसने कभी किसी ऐसे मनुष्य को नहीं मारा जो लड़ने के योग्य न हो अथवा लड़ाई से भागता हो। भारतवर्ष में आने से उसकी कभी यह इच्छा नहीं थी कि वह हिन्दुओं को मारे या उनके मन्दिर

तोड़े और देश को लूटे। वह यह चाहता था कि भले बादशाहों की तरह देश का शासन करे। बाबर अपने वचन पर दृढ़ रहता था। नीच कर्मों से उसको घृणा थी; वह सदा प्रसन्न वदन और हँसमुख रहा करता। अपने जीवन-चरित में जो उसने अपने हाथ से लिखा है वह कहता है कि जब कभी मैं लड़ाई से हार गया या मुझे किसी कार्य में सफलता न हुई तब भी मैं निराश न हुआ और न हाथ पर हाथ धरके बैठा ही रहा। एक और जगह लिखता है कि मनुष्य कैसे वह कर्म कर सकता है जिसमें मरने के पीछे उसके नाम पर धब्बा लगे।

१३—हिन्दुस्थान में आने पर बाबर बहुत काल तक न जिया। वह दिल्ली के सिंहासन पर चार ही बरस बैठा था कि निर्वल हो गया और बीमारी उसे सताने लगी। उसका प्यारा बेटा हुमायं भी ऐसा बीमार पड़ गया कि बिस्तर से उठने के योग्य न रहा और ऐसा जान पड़ने लगा कि अब यह न बचेगा। बाबर के सामने एक धार्मिक सद्दार के मुंह से निकला कि, बादशाह सलामत आप के पास जो सब से महँगे दाम की चीज़ हो वह आप ईश्वर को भेंट करें और उसे प्रार्थना करें तो क्या आश्चर्य है जो आप के पुत्र को जिला दे। आगे में जो सब से बड़ा हीरा हुजूर को मिला था वह दे डालिये। बाबर ने कहा कि उस बड़े हीरे से तो मुझे अपनी जान ही बहुत प्यारी है, मैं अपनी जान ही क्यों न दे दूं? यह कह कर उसने अपने बेटे के पलङ्ग की तीन परिक्रमा की और बोला, हे ईश्वर मेरी जान ले और मेरे बेटे को जिला दे और यह कह कर चिल्ला उठा, बस अब रोग मेरे ऊपर आगया। यह जान पड़ता था कि मानों ईश्वरने उसकी बात सुन ली, क्योंकि उसी समय से हुमायं अच्छा होने लगा और बाबर गिरता चला गया और उसी रोग में मर गया।



हुमायूँ की बीमारी ।

१४—इस समय बाबर की उमर अड़तालीस बरस की थी ।
इसने पैंतीस बरस राज किया । चार बरस अपने देश में ।

कुब्बीस बरस काबुल में और पांच बरस हिन्दुस्थान में। इसकी लाश काबुल पहुंचाई गई और एक सुन्दर बाग में एक टीले के कोने पर, जिसे बहुत दिन पहिले बाबरने इस काम के लिये आपही चुना था, गाड़ी गई। काबुल के लोग अब तक उसकी कब्र पर दर्शन को जाते हैं। इसने अपना जीवनचरित्र आप लिखा था जो अब तक मिलता है। तुर्की और फ़ारसी में कबिता करता था। गानेका इसको बड़ा शौक था। अच्छर बड़े सुन्दर लिखता था। हुमायूँ को पत्र लिखते हुए देख कर कहने लगा कि तुम्हारा लिखना अच्छा नहीं है और अच्छी तरह पढ़ा नहीं जाता। बाबर को फल फल बहुत भाते थे। इसी कारण उसने दिल्ली और आगरा में कई सुन्दर बाग लगाये। अपने देशके बाग इसे कुछ ऐसे सुहावने लगते थे कि सोते में भी उनका सपना देखा करता था।

३३—हुमायूँ ।

(१५३० ई० से १५५६ ई० तक)

१—मरने से कुछ दिन पहिले बाबर ने अपने सब से बड़े बेटे हुमायूँ को बुलाया और कहा कि बेटा, जो परमेश्वर तुम्हें मेरा सिंहासन दे तो अपने भाइयों पर दयालु रहना। हुमायूँ ने भी अन्तिम काल तक अपने बाप की आज्ञा का पालन किया और क्योकर न करता, जब यह स्वयं भी अपने भाइयों को प्यार करता था और उनको किसी तरह का दुःख देना नहीं चाहता था। बाप भी उसपर भरोसा करता और जान देता था। बाबर कहा करता था कि संसार में हुमायूँ ऐसा सच्चा और विश्वासपात्र दूसरा न होगा।

२—सिंहासन पर बैठने के समय हुमायूँ को आयु तेईस बरस की थी। इसके तीन भाई थे, कामरां, हन्दाल और अस्करो। राज के आरम्भ ही में इसने अपने राज्य का एक एक भाग उनको दे दिया। अफ़ग़ानिस्तान और पञ्जाब, कामरां के हिस्से में आया। हुमायूँ ने तो इसके साथ बड़ी दयालुता की पर अपने लिये कांटे बो दिये क्योंकि यह वह वीर देश थे जहां से बाबर अपनी सेना के सिपाही और अफ़सर भरती किया करता था। भाई हुमायूँ की सहायता तो क्या करते उलटे उसके साथ लड़ाई भिड़ाई करने लगे। कारण यह कि हर एक बादशाह बनना चाहता था। उन्होंने ने हुमायूँ को जोते जो कभा चैन नहीं लेने दिया।



हुमायूँ ।

३—बाबर को इतना अवकाश न मिला था कि अपने राज को दृढ़ करे। जब अफ़ग़ान सर्दारों ने सुना कि बाबर मरगया तो उन्होंने ने हुमायूँ से लड़ाई करने के सामान कर दिये। हुमायूँ को पहिले गुजरात के सुलतान बहादुर शाह से लड़ना पड़ा; उसने बहादुर शाह को हरा कर खम्भात के निकट समुद्रतट तक पीछा किया; जहां से वह एक नाव में सवार होकर दक्षिण की दिशा में बन्दरदेव को चला। यहां उस समय पुर्तगी लोग बसे हुए थे। बहादुर शाह ने उनके यहां शरण ली परन्तु थोड़े ही दिनों पीछे पुर्तगियों ने उसे मार डाला।

४—इसके पीछे हुमायूँ ने गुजरात में चम्पानेर के पहाड़ी कोट

पर धावा मारा। चार महीने तक उसे घेरे पड़ा रहा। एक रात को पहाड़ में जो दीवार की भांति सोधा खड़ा था खंटियां गाड़ीं और तीन सौ बहादुरों के साथ आप उस खूंटियों के जीने पर चढ़ कर कोट के भीतर घुसा। सुना जाता था कि उस गढ़ में किसी स्थान पर बहुत सा धन गड़ा हुआ है। किलेदार से बहुतेरा पूछा पड़े उसने कुछ पता न दिया। हुमायूँ के कुछ सर्दार बोले कि इसको कष्ट दिया जाय तो कदाचित्त बता दे। हुमायूँ को यह बात अच्छी न लगी। उसने किलेदार को अपने यहाँ बुलाया और उसकी बड़ी आव भगत को और शराब पिला दी। शराब के नशे में किलेदार ने बतला दिया कि अमुक तालाब के नीचे एक बड़ा तहखाना है और उस तहखाने में खजाना है। निदान तालाब का पानी खींच कर निकाल दिया गया और खोदा तो जो धन गुजरात के बादशाहों ने जोड़ा था सब ज्यों का त्यों मिल गया। हुमायूँ ने आज्ञा दी कि प्रत्येक सर्दार अपनी ढाल ले आये और जितना सोना चांदी अपनी ढाल पर उठा सके ले जाय। इस अवसर पर हुमायूँ से यह नादानी हुई कि उसने इस असंख्य धन के उठाने और लुटाने और खान पान में बहुत सा समय खो दिया और उन अफगान सर्दारों से लड़ने का ध्यान उसको न रहा जो बागी हो रहे थे।

५—गुजरात में अपने भाई अस्करों को छोड़ कर हुमायूँ मालवे में पहुंचा और वहां के अफगान हाकिम को भगाकर फिर सुख चैन में पड़ गया। इस बीच में दिल्ली से समाचार मिला कि पूर्व का सब देश बागी हो गया और अफगान अमीर बङ्गाले, जौनपूर और बिहार के बादशाह बन गये और आगरे के आस पास के छोटे छोटे पठान रईस लड़ने पर उतारू हैं।

६—सब से शक्तिमान बागी पूर्व का एक अफगान सूबेदार शेरखां था। बाबर के मरने के दिन से हुमायूँ तो दक्षिण दिशा में

गुजरात और मालवे में लड़ता था और शेरखां पूर्व में ज़ोर पकड़ता जाता था। उसने एक एक करके बिहार के सब किले ले लिये थे और पांच बरस के लगातार परिश्रम के पीछे अपने आप को बिहार और बङ्गाले का मालिक बना लिया था।

७—अब तक हुमायूँ उसकी ओर से निश्चिन्त था। गुजरात से आगरे जाने के एक बरस तक वह आराम और चैन में पड़ा रहता और उसके हराने का कोई उपाय न किया। गुजरात का हाल यह हुआ कि हुमायूँ के हटते ही वहाँ के अफ़ग़ानी ने फिर सिर उठाया और अस्करी को जो उनका सामना न कर सकता था देश से निकाल दिया। मालवा भी इसी भांति शीघ्रही हाथ से निकल गया। अब हुमायूँ को यह चिन्ता हुई कि जो कुछ देश हाथ से निकले जा रहे हैं उनको फिर ले लेना चाहिए। बाबर के समय के बहादुर सिपाही कुछ तो लड़ाई भिड़ाई में मर खप चुके थे और कुछ अपनी आयु पूरी करके इस संसार से चल बसे थे। हुमायूँ ने अपने भाई कामरां को जो काबुल और पंजाब का हाकिम था लिखा कि कुछ सेना भेजो किन्तु कामरां ने उत्तर में लिख दिया कि मैं कुछ नहीं कर सकता। इस कारण हुमायूँ की सेना में बड़ी गड़बड़ी थी और उसमें बहुत से अनाड़ी जवान भरे थे।

८—अब हन्दाल और अस्करी को संग लेकर हुमायूँ पूर्व की ओर चला; पहिले बनारस के निकट चुनार गढ़ पर धावा मारा परन्तु उस गढ़ के विजय करने में छः महीने लग गये। शेरखां उस समय बङ्गाले में था। इतना अवकाश मिलने पर वह अपनी सेना और धन लेकर बङ्गाले के रोहतासगढ़ के मज़बूत पहाड़ी किले में जा बैठा जहाँ उसे किसी प्रकार का भय न था। शेरखां चाहता था कि किसी भांति हुमायूँ मेरे पीछे पीछे दूर तक बङ्गाले में चला आये और फिर मैं उसके पीछे एक सेना डाल दूँ कि उसे लौट जाने

का अवकाश न मिले। इस कारण बङ्गाले की राह खुली छोड़ दी। हुमायूँ का सामना करनेवाला तो कोई था ही नहीं वह बङ्गाले के मैदानों को पार करता हुआ सीधा गौड़ तक चला गया जो उस समय बङ्गाले की राजधानी था और वहाँ ठहर कर अपने भाई हन्दाल को लौटा दिया कि आगरे से कुछ और सेना ले आये।

८—अपने स्वभाव के अनुसार हुमायूँ ने यहाँ भी एक बरस जलसे तमाशे में बिताया। मालिक की देखा देखी सद्दार और सेनापति भी सुख चैन में पड़ गए और इस बात को सब भूल गए कि हमारे पीछे शेरखा अपनी सेना लिये बैठा है। शेरखा नित्य चौकन्ना और तैयार बैठा रहता था। ज्यों ही जासूसों से समाचार मिला कि हुमायूँ और उसके साथी सुस्ती में अपने दिन काट रहे हैं वह रोहतास गढ़ से निकला और बङ्गाल और बिहार के नाके बन्द कर दिये। उधर हन्दाल ने विश्वासघात किया। भाई की सहायता करनी तो दूर रही स्वयम् दिल्ली के सिंहासन पर बैठ कर राज का मालिक बन गया।

१०—अन्त में हुमायूँ अपनी सेना के साथ बङ्गाले से चला। वर्षा ऋतु आरम्भ हो गई थी। जिधर देखो पानी ही पानी दिखाई देता था। सड़कें कीचड़ के मारे दल दल हो रह्यो थीं और उनपर चलना असम्भव था। हुमायूँ के बहुत से साथियों को ज्वर आने लगा, बहुत से घोड़े मर गये। बहुत सा खाने पीने का सामान खराब हो गया। हुमायूँ लौट कर धीरे धीरे उस तंग दर्रे पर पहुँचा जहाँ बङ्गाले से बिहार का रास्ता है। यह वह दर्रा है जो राजमहल की पहाड़ियों और गङ्गाजी के बीच में पड़ता है। शेरखा पहिले ही से यहाँ उपस्थित था। उसने दर्रे के सम्मुख गहरी गहरी खाइयाँ खोद रक्खी थीं, ऊँची ऊँची दीवारें खड़ी कर रक्खी थीं और अफ़ग़ान सिपाहियों की एक अच्छी भीड़ साथ



दिल्ली के तख्त पर इन्दा।

लिये दर्रे को बंद किये बैठा था। शेरखां जानता था कि दिल्ली से हुमायूँ को सहायता को कोई सेना नहीं आ सकती और उसकी निज की सेना दिन दिन निर्बल होती जाती है। वह मैदान में

आकर हुमायूँ से लड़ना नहीं चाहता था। हुमायूँ अपने भाई कामरां और हन्दाल को चिट्ठी पर चिट्ठी भेजता था कि सेना भेजो। दो महीने हुमायूँ और उसकी थकी थकाई सेना इसी आसरे में बैठी रही पर कोई सहायता को न आया। उसके कपटी भाइयों ने अपना एक आदमी भी बङ्गाले को न आने दिया और वह चाल चले जिस से हुमायूँ हारै और नष्ट हो जाय।

११—हुमायूँ ने देखा कि आगे जाना असम्भव है और यहीं पड़े रहे तो एक आदमी भी जीता न बचेगा। यह विचार कर उसने शेरखां के पास संधि का सन्देश भेजा। शेरखां ने उत्तर दिया कि मुझि बङ्गाले और बिहार के देश देदिये जाय और मुझको वहां का बादशाह बना दिया जाय तो मैं शाह दिल्ली को अपना स्वामी मानूंगा और उसे कर देता रहूंगा। हुमायूँ ने यह बात मान ली और संधि कर ली। इसके सिपाहियों ने अपने कवच उतारे और चलने की तय्यारियां करने लगे। गङ्गा जी पर पुल बांधना आरम्भ किया कि उसपर से उतर कर दूसरे दिन घर की ओर चलेंगे।

१२—शेरखां ने जो देखा कि अब हुमायूँ के सिपाही निश्चिन्त हो कर बैठे हैं तो यह सोच कर प्रसन्न होगया कि अब वह अवसर आगया है जिसको कि वह बहुत दिनों से ढूँढ़ता था। हुमायूँ के थके माँदे सिपाही इस ध्यान में थे कि कल घर की ओर कूच करेंगे और रात होते ही लखी तान कर सो गये पर आधौरात को दो बजे अफगान इन पर टूट पड़े और बेचारों को काट डाला। हुमायूँ घबरा कर नींद से उठा और घोड़े पर सवार होकर भागा और लड़ता भिड़ता नदी के किनारे जा पहुँचा। यह बहुत घायल हो रहा था और निर्बलता के कारण गिर पड़ता डूब जाता पर उस समय एक भिखी अपनी मशक फुलाकर नदी के पार जाना चाहता

था उसने मशक बादशाह को दे दी कि उसकी सहायता से नदी के पार पहुँच जाय । हुमायूँ ने इसके बदले में उस भिखी को जिसका नाम निज़ाम सुहम्मद था यह आज्ञा दी कि तुम तीन घण्टे शाही सिंहासन पर बैठ कर हुक्ममत करो और अपने नाम से आज्ञापत्र जारी करो । भिखी ने इस अवसर पर अपने हित मित्रों को बहुत कुछ सम्पत्ति भेंट की और अपनी मशक के छोटे छोटे टुकड़े काट कर और उनपर अपनी शाही सुहर लगा कर चमड़े का सिका जारी किया ।

१३—हुमायूँ कुछ विश्वासी साथियों को संग लेकर आगरे की ओर भागा । शेरखाँ ने बङ्गाले और बिहार को अपने आधीन किया ; मुगल सेना को जो बङ्गाले में नियत थी निकाल बाहर किया और जब देखा कि यहाँ शान्ति हो गई तो हुमायूँ का पीछा करता हुआ आगरे पहुँचा ।

१४—इधर हन्दाल बादशाह बनकर दिल्ली में शासन कर रहा था । वह समझा कि मेरी करतूत ने हुमायूँ और सुभे दोनों को नष्ट कर दिया पर अब क्या हो सकता था ? हन्दाल थोड़ी सी सेना लेकर हुमायूँ के निकट क्षमा मांगने गया । कामरां भी पञ्जाब से आ गया और उसने भी दया की प्रार्थना की । हुमायूँ ने सच्चे जी से दोनों को क्षमा कर दिया और कहा कि जो कुछ होना था हो चुका अब हमको चाहिये कि बहादुरों की तरह एक दूसरे की सहायता करें और शत्रु को देश से निकाल दें । कामरां दो महीने आगरे में रहा फिर लाहौर लौट गया ; जो सेना हुमायूँ की सहायता को लाया था उसको भी संग लेता गया और हुमायूँ के भी कुछ सदर्ारों और सेनापतियों को यह जताकर कि यहाँ ठहरना जान जोखिम है और पञ्जाब में अच्छे अच्छे पद देने का लालच देकर साथ ले गया ।

१५—इस बीच में शेरखां सेना सहित आ पहुँचा और एक और लड़ाई हुई पर पहिले ही धावे में हुमायूँ की सेना तितर बितर हो गई। दस ही बरस राज करने पर हुमायूँ लाहौर की ओर भागा। यह आशा करता था कि कामरां कुछ मेरी सहायता करेगा पर वह आप इतना बोदा निकला कि पञ्जाब को शेरखां के हवाले करके आप काबुल जा बैठा और वहाँ की बादशाहत पर सन्तुष्ट हो के बैठ रहा। हन्दाल भी हुमायूँ को छोड़ कर

चलता बना। यह बेचारा बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ झेलता सिन्ध के रेतीले मैदानों में मारा मारा फिरा किया और अन्त में फारस पहुँचा।



हमीदा बेगम ।

१६—हुमायूँ जब सिन्ध में भटकता फिरता था तो उसने एक ईरानी महिला हमीदा बेगम से निकाह किया। अमर कोट के उजाड़ किले में १५४२ ई० में इसके बेटे अकबर का जन्म हुआ तूकों

का दस्तूर था कि जब किसी राजकुमार का जन्म होता था तो बादशाह इसकी खुशी में अपने अमीरों और सर्दारों को बहुत कुछ धन दौलत देता था। गरीब हुमायूँ के पास अमर-कोट में धन दौलत कहां थी, खाने तक को भी भली भाँति न मिलता था। उसकी जेब में एक कस्तूरी का नाफा पड़ा था। उसको निकालकर चीरा और थोड़ी थोड़ी सी कस्तूरी अपने साथियों को दी। सुशक की गंध से हवा महक उठी। हुमायूँ ने सगुन अच्छा समझा और कहा कि जैसे यह कस्तूरी हवा को सुगन्धित कर रही है उसी तरह मेरा बेटा बादशाह

होकर संसार में अपना यश फैलायेगा ! मैं इसका नाम अकबर रखता हूँ क्योंकि मुझे आशा है कि यह बड़ा ही ज़बर्दस्त बादशाह होगा ।

१७—सिन्ध से ईरान जाते हुए हुमायूँ को कन्दहार होकर जाना पड़ा । यहाँ उसका भाई अस्करी हुकूमत करता था । अपने भाई की आवभगत और सहायता करनी तो दूर रही उसने उसे कैद करना चाहा । बड़ी कठिनाई से घोड़े को पोया चला के हुमायूँ हमीदा बेगम के साथ भागा पर अकबर जो अभी दो ही बरस का था चचा के हाथ लगा और कुछ दिन कैद रहा । जब हुमायूँ फ़ारस पहुँचा तो वहाँ के बादशाह तहमास ने उसका बड़ा सत्कार किया और उसकी शिया मत का कर लिया क्योंकि ईरानी सब शिया हैं । तहमास ने कुछ दिनों हुमायूँ को अपने दरबार में रक्खा फिर बारह हज़ार ईरानी उसके साथ भेजे । हुमायूँ यह सेना लेकर अफ़ग़ानिस्तान गया और वहाँ से अपने बेटे अकबर को कुड़ा लाया ; दस बरस तक अपने भाइयों से लड़ता रहा । कई बार वह इसके पंजे में आये और हुमायूँ के सद्गुरु ने सलाह दी कि इनको मार डालना चाहिये । पर हुमायूँ ने उनकी न सुनी । इसने नित उनके साथ भला बर्ताव किया और उनके अपराध क्षमा किये । उसकी बाप की सलाह और अपना बचन सदा स्मरण रहा । कई बार हुमायूँ ने कामरां से कहा कि भाइयों की तरह मेरा सहायक बन, पर उसने एक न मानी ।

१८—अकबर कामरां के हाथ लगा । हुमायूँ उस समय काबुल घेरे पड़ा था । निर्दयो चचा ने अपने नन्हें से भतीजे की तीरों की बौछार में काबुलकी कोट पर बिठा दिया पर परमेश्वर की दया से कोई तीर उसके न लगा । हुमायूँ ने देखा कि जो कामरां बिलकुल निर्बल न कर दिया जायगा वह अकबर को मार डालेगा ।

इस कारण काबुल के सर होने पर हुमायूँ ने आज्ञा दी कि कामरां की आंग्रैं निकाल ली जायं । अन्धा कामरां हुमायूँ के सामने दर्बार में लाया गया तो उसने सारे दर्बारियों के आगे यह कहा कि मेरे भाई ने कुछ अत्याचार नहीं किया और मैं सचमुच इसी दण्ड के योग्य था । हन्दाल लड़ाई में मारा गया । हुमायूँ ने उसको भी अपने हाथ से नहीं मारा । अस्करी मिर्जा मक्के की हज को चला पर रास्ते ही में मौत ने उसे आ घेरा ।

१८—अब शेर खां भी मर चुका था । उसके पीछे उसके वंश के तीन बादशाह सिंहासन पर बैठे उनमें से अन्तिम बादशाह राज करने के योग्य न था । हुमायूँ एक सेना लेकर दिल्ली पहुंचा । इस बार इसके साथ बहादुर सिपाही थे । पन्द्रह बरसके बिछुड़ने के पीछे अब फिर इसने दिल्ली और आगरा ले लिया । पर बहुत समय तक राज करना उसके भाग्य में न था । एक दिन तीसरे पहर जीने से चढ़ कर महल की छत पर जा रहा था कि पास की एक मसजिद से मुअज्जिन की बांग सुन पड़ी । हुमायूँ जीने की ही एक सौढ़ी पर नमाज़ पढ़ने ठहर गया । पर संगमरमर की सौढ़ी पर से उसकी लाठी फिसली और यह लुढ़कता जीने के नीचे जा पड़ा और इतनी चोट आई कि मर गया । इस समय उसकी आयु पचास बरस की थी ।

२०—हुमायूँ बहादुर आदमी था । उसने बीरता के बहुत से काम किये पर बाप के समान न फुर्तीला था, न चालाक, और न उसकी भांति अपनी प्रतिज्ञा का टूट था ; जवानों आराम और चैन में काटी और बड़ी उम्र में अफीम खाने लगा था जिसके कारण आलसी और बेसमझ हो गया था ; भाइयों को प्यार करता था और उनके साथ अच्छा बर्ताव करता था । उनपर इतना दयालु न होता तो कदाचित् हिन्दुस्थान की बादशाहत भी

न खोता। उसके एक नौकर ने जिसका नाम जौहर था बादशाह का जीवन चरित लिखा है और अभीतक वह इतिहास पढ़ने-वाले के लिये मौजूद है।

३४—सूर वंश।

(१५४० ई० से १५५५ ई० तक)

१—शेरशाह अफगान जो असल में पेशावर से आया था सूर जाति का था। यह और इसके पीछे के तीन बादशाह सूर वंश के बादशाह कहलाते हैं। इसका असली नाम फ़रीद खां था। इसका दादा बहलोल लोधी के समय में जङ्गी नौकरी की खोज में हिन्दुस्थान आया था। इसका बाप सुलतान जौनपुर की सरकार में सवारों का जमादार हुआ और उसको बिहार में कुछ थोड़ी सी जागीर भी मिल गई। फ़रीद खां एक दिन सुलतान के साथ शिकार खेल रहा था। उसने शेर को तलवार का एक हाथ ऐसा मारा कि वहीं वह गिर कर मर गया। बस सुलतान ने वहीं उसको शेर खां को पदवी दे दी।



शेर शाह।

२—जब शेर खां दिल्ली के तख्त पर बैठा तो उसने अपना नाम शेरशाह रख लिया। यह शेर के समान बली और चतुर था। शत्रु पर दया करना तो जानता ही न था और जो देखता कि अपनी बात के तोड़ने में कोई नाम है तो उसमें भी नहीं चुकता था।

३—जब बाबर बादशाहत करता था तो यह भी उसके दरबार में पहुंचा और एक पद पर नियत किया गया। एक दिन दस्तरखान पर कुछ खाना आया जिसे चमचे से खाना चाहिये था। शेरखां चमचे से खाना नहीं जानता था। और सभासद उसे देख कर हँस रहे थे। उसने तलवार म्यान से निकाली और उस वस्तु के छोटे छोटे टुकड़े किये और उन्हें खाता गया ; इसबात का कुछ विचार न किया कि कोई मुझ पर हँस रहा है। बाबर ने जो देखा कि शेरखां दरबार के आचार नहीं जानता और दस्तरखान पर भी तलवार से काम लेता है तो अमीरों से बोला कि यह सद्दार् अपनी तलवार के बल से किसी ऊंचे पद पर पहुंचेगा।

४—जब हुमायूँ ने उस पर चढ़ाई की और चुनार गढ़ ले लिया तो शेरखां ने बिहार के रोहतास गढ़ को छीन कर अपने आधीन कर लिया जो चुनार गढ़ से भी मज़बूत था। रोहतास गढ़ उसने बड़ी चतुराई से लिया। वहां के राजा से कहा कि मैं अपने परिवार और धन को किसी सुरक्षित स्थान में रखना चाहता हूँ। जो मैं हुमायूँ से लड़ाई में मारा जाऊँ तो तुम मेरा धन ले लेना। राजा ने यह बात स्वीकार की ; इसपर एक हज़ार डोले तय्यार हुए। शेरखां ने आगे के दो तीन डोलों में तो औरतों को बिठा दिया और सब में हथियार बंद सिपाही बिठा दिये। जब डोले किले में पहुंचे तो राजा ने अगले दो तीन डोलों के पर्दे उठा उठा कर देखे। उनमें स्त्रियाँ थीं। शेरखां का चौबदार बोला कि यदि कोई बाहरी मनुष्य हमारों वगमों को देखेगा तो हमारे मालिक का बड़ा अपमान होगा। राजा ने समझा कि ठीक कहता है और बचे हुए डोलों को बिना देखे जाने दिया। जब सब डोले किले के भीतर आगये तो अफ़ग़ान

सिपाहियों ने डोलों से निकल कर किले के फाटक खोल दिये और शेर खां की सेना भीतर घुस आई और किले पर अपना अधिकार जमा लिया ।

५—बादशाह बनने के पीछे शेरशाह ने बड़ी बुद्धिमानी से राज किया । इसने देखा कि अगले बादशाह अपनी बड़ाई और सजधज के अभिमान में छोटी छोटी बातों पर ध्यान ही नहीं देते थे । यह लोग अपने वज़ीरों और सलाहकारों पर इतना भरोसा रखते थे कि आंख मूंद कर राज के प्रायः कुल काम काज उन्हीं के ऊपर छोड़ देते थे । पहिले तो वज़ीर और सलाहकार मेहनती और बहादुर होते थे । फिर यह भी सुख चैन में पड़ जाते थे और खाने पीने सोने ही को अपना कर्तव्य जानते थे । राजकाज सब नौकरों के हाथ में छोड़ देते थे ।

६—शेरशाह ऐसा नहीं करता था । यह हर एक बात को आप देखता भालता था । एक बड़े भारी राज का मालिक होने पर भी वह कभी सुस्त नहीं बैठता था और राज के कारबार में ऐसा लगा रहता था जैसे कोई दरिद्री मज़दूर अपनी जीविका की चिन्ता में अपने हाथ पांव से अड़ा रहता है । और जैसे आप काम करता था वैसे ही अपने मातहतों से भी काम लेता था । इस से पहिले किसी अफ़ग़ान बादशाह ने इस योग्यता के साथ राज नहीं किया । यह जानता था कि प्रजा की रक्षा और उनका पालन करना बादशाह का सब से बड़ा धर्म है । इसने हिन्दुओं को नहीं सताया और बहुत से हिन्दुओं को ऊंचे पद पर नियत करके राजकर्मचारियों में मिला लिया । इन में से एक टोडरमल थे जो माल के मुहकमे के मंत्री थे ।

७—शेरशाह सिपाहियों की तनखाह बहुधा अपने आगे

बटवाया करता था, इस बिचार से कि ऐसा न हो किसी की ननखाह मारी जाय ; बङ्गाले से पञ्जाब तक और आगरा से मालवे तक सड़क के किनारे बराबर सरायें बनवा दी थीं जहां यात्रियों को बिना दाम भोजन मिलता था ; चिट्ठियों के पहुंचाने के लिये सड़कों पर घोड़ों को डाक बिठा दी थी । सड़कों पर दोनों ओर मेवेदार पेड़ लगवा दिये थे और थोड़ी थोड़ी दूर पर यात्रियों की सुगमता के लिये कूपें बनवा दिये थे ।

८—शेरशाह ने मालवा और मारवाड़ देश जीत लिये, मारवाड़ में रायसेन के राजपूतों को बहुत सताया । यहां के राजा पूरनमल से वादा करलिया था कि जो तुम मेरी आधीनता स्वीकार करो तो किले से अपना माल अस्बाब, बाल बच्चे और नौकर चाकर लेकर निकल जाओ मैं किसी को न रोकूंगा न किसी तरह का कष्ट दूंगा । राजपूत इस भरोसे पर किले से निकल आये कि बच जायेंगे पर शेरशाह ने उन्हें मार डाला । यह कहा करता था कि शत्रु के साथ अपने वचन के पूरा करने की क्या आवश्यकता है ? इस घटना के दूसरे बरस शेरशाह बुन्देलखंड में कालोंजर के किले का घेरा कर रहा था कि मारा गया ।

सुलतान असलम शाह या सलीम शाह ।

९—शेरशाह के मरने पर उसका बड़ा बेटा तो कहीं दूर था इस कारण उसके छोटे बेटे ने तख्त पर अधिकार जमा लिया । पहिले पहल तो यह कहता था कि मैं अपने भाई के आने तक बादशाह हूं पर भाई इस से डरता था । वह एक रियासत लेकर तख्त और ताज का ध्यान छोड़ बैठा । सलीम ने उसको मारना चाहा पर वह बिहार की ओर भागा और फिर न जाने उसपर क्या बीती और वह कहां गया । बहुत से अफगान

अमीर बागों हो गये पर सलीम शाह ने उनको दवा दिया और फिर कोई दंगा फ़साद न हुआ। शान्ति हो जाने पर उसने भी अपने बाप के समान बड़ी योग्यता से राज किया। यह लम्बे डोल का सुन्दर और बुद्धिमान जवान था; विद्या और विद्वानों का प्रेमी भी था। इसने नौ बरस तक राज किया।



सलीम शाह ।

१०—सलीम के मरने पर उसका छोटा बेटा फ़ीरोज़ सिंहासन पर बैठा। पर तीन ही दिन राज करने पर अपने चचा सुबारज़ खां के हाथ से मारा गया। सुबारज़ खां आदिल-शाह के नाम से बादशाह हुआ। थोड़े ही दिनों राज करने पर इसके व्यवहारों से प्रगट हो गया कि यह राजकार्य करने का सामर्थ्य नहीं रखता। इसने कुल खज़ाना नाच रङ्ग में उड़ा दिया और एक नीच जाति के हिन्दू को जिसका नाम हीमू था अपना मित्र और सलाहकार बनाया। अफ़ग़ान अमीर बड़े अभिमानी थे। उन्होंने चारों ओर बिगड़ना और फ़साद मचाना आरम्भ किया। हुमायूँ को जब यह समाचार मिला तो उसने बिचारा कि राज के फिर ले लेने का अवसर यही है। वह काबुल से चला और दिल्ली और आगरे जा बादशाह हो गया। पर मौत ने उसे अधिक राज करने न दिया और जैसा पहिले लिखा जा चुका है वह शीघ्र ही मर गया।

३५—अकबर ।

(सन् १५५६ ई० से सन् १६०६ ई० तक)

१—भारत में जितने मुसलमान बादशाह हो गये हैं अकबर सब से अच्छा था। उसका पूरा नाम जलालुद्दीन महम्मद



अकबर ।

था। उसके पिता हुमायूँ ने उसके जन्म के समय उसे अकबर की पदवी दी थी। अकबर का अर्थ है, सब से बड़ा, और वास्तव में यह बादशाह और सब बादशाहों से ज़बर्दस्त हुआ है। उसने पचास बरस राज किया। जिस समय महारानी इलीजबेथ इंगलिस्तान की मलका थी अकबर उसी समय भारत में राज करता था। तीन सौ बरस बीते कि यह दोनों एक ही समय में इस लोक से परलोक को सिधारे थे।

२—पिता की मृत्यु के समय अकबर की आयु कुल तेरह बरस की थी। चारों ओर बैरी ही बैरी दिखाई देते थे परन्तु उसका सेनापति बैरम खाँ बड़ा राज-भक्त था। वह एक तुर्की सरदार था और सोलह बरस की अवस्था से उसके बाप के दरबार में नौकर था और उसकी बुआ के साथ ब्याहा था। पहिले पहिल उसको हेमू से युद्ध करना पड़ा था। हेमू अपने को महाराजा विक्रमादित्य कहने लगा था। उसने जो सुना कि बैरम खाँ अकबर के साथ लाहौर में है तो सेना लेकर दिल्ली को आधीन करने के लिये

बिहार से चला और आगरा और दिल्ली जौतता हुआ लाहौर की ओर बढ़ा। बैरम खां उसके सम्मुख आया। पानीपत पर घमसान युद्ध हुआ, हेमू बीरता के साथ लड़ा परन्तु उसकी सेना हार गई। हेमू घायल हुआ और कैद करके अकबर के सम्मुख लाया गया। बैरम खां ने अकबर से कहा कि इसका सिर अपनी तलवार से आप अलग कर दीजिये परन्तु अकबर ने उस दुर्बल और घायल बैरी पर हाथ चलाना ठीक न समझा तब बैरम खां ने उसको अपने हाथ से मारा। इसके पीछे पांच बरस तक बैरम खां ने बड़ी सावधानी और रोब दाव के साथ राज काज किया।

३—इस समय मोगल राज में केवल दिल्ली और पंजाब के देश थे। बंगाल, बिहार, जौनपूर, सिन्ध, गुजरात, मालवा और खानदेश में पठानों की जबरदस्त रियासतें थीं; राजपूताने में राजपूत राज करते थे।

४—अब अकबर की आयु अठारह बरस की थी। बैरम खां के कठोर व्यवहार से वह, उसकी मां, और सारे कम उमर दरबारी चिढ़े हुए थे। सब ने अकबर को यही सम्मति दी कि अब आप राज काज अपने हाथ में ले लें। बैरम खां इस बात पर राजी न था परन्तु बादशाह विचार का पक्का था और अन्त में बैरम को आधीनता स्वीकार करनी पड़ी। बैरम खां मन में जल रहा था। इस कारण कुछ दिनों में उसने कुछ सेना इकट्ठी कर ली और पंजाब पर चढ़ाई कर दी। अकबर की आयु कम थी परन्तु बैरम खां के सम्मुख आपही पहुंचा। बैरम खां पराजित हुआ और



बैरम खां।

पहाड़ की ओर भागा। अन्त को गले में पगड़ी डाले अभय प्रार्थना करने के लिये राज-सभा में उपस्थित हुआ। अकबर को उसके जन्म भर की स्वामि-भक्ति और नौकरी का ध्यान था। अपने हाथों से उसे उठाया और राज-सभा के सब सभासदों से ऊपर बिठाकर पूछा कि क्या तुम किसी प्रान्त की सूवेदारों पसंद करते हो अथवा राज-सभा में किसी ऊंचे पद पर नियत होना चाहते हो? जो हज करने का बिचार हो तो अच्छा वेतन नियत कर दिया जाय और साथ जानेवालों का प्रबंध किया जाय। बैरम खां ने मक्के जाना पसन्द किया परन्तु राह में एक अफ़ग़ान ने जिसके बाप को उसने कुछ बरस पहिले मार डाला था उसको परलीक पहुंचा दिया।

५—अब अकबर स्वतन्त्र हो गया; जो चाहता कर सकता था। बाल्यावस्था में काबुल में रहने के कारण वह हृष्ट पुष्ट हो गया था। वह बुद्धिमान था और बहुत सोच बिचार कर काम करता था। उसने देखा कि जब तक हिन्दुओं को राज-भक्त न बनाऊंगा मेरा राज दृढ़ न होगा, और जी में ठान ली कि जातिपात के भेद को दूर करके कुल भारतवासियों को अपना बनाना है। परन्तु इस बिचार के पूरा होने से पहिले इस बात की आवश्यकता थी कि अपने सूवेदारों को आधीन करके दिल्ली के राज को पुष्ट कर ले।

६—बैरम खां के छूटते ही तीन सूवेदारों के जी में यह बात समाई कि अकबर केवल अठारह बरस का बालक है। उसकी जीत लेना सहज है। ऐसा बिचार कर तीनों अपने अपने प्रान्तों के पूरे अख्तियार के मालिक बन बैठे। इनमें से एक जिसका नाम खानज़मा था जौनपूर का सूवेदार था, दूसरा आदम खां मालवे का, और तीसरा आसफ़ खां कड़े का हाकिम था। परन्तु अकबर ने दिग्वा दिया कि उसकी अवस्था तो कम थी पर उसमें युद्ध

और राज करने को योग्यता जन्मही से थी। चलते चलते जब अकबर ने देखा कि अब खानज़मा दूर नहीं है तो सारी सेना पोछे छोड़ दी और एक हजार सवार लेकर आधी रात के समय गंगा के पार होगया और रातों रात तीस मील का कूच कर सबेरे बैरौ पर टूट पड़ा। किसी को यह बात न मालूम थी कि अकबर पास है। दो बरस में अपनी वीरता के कारण अकबर ने अपने तीनों सूबेदारों को दबालिया और इक्कीस बरस को अवस्था में दिल्ली सम्राज्य का बेखटके सम्राट हो गया।

७—इसके पीछे राजपूतों से युद्ध आरम्भ हुआ। इस समय भारत में कम से कम सौ राजपूत राजा थे। अकबर यह चाहता था कि उनको अपना मित्र बनाकर उनकी सहायता से उत्तरीय भारत के पठान बादशाहों को आधीन करे। इस कारण एक भारी सेना लेकर राजपूताने में घुस गया और सब से बली राजाओं से लड़ना आरम्भ किया। उन्होंने ने देखा कि अकबर धीर वीर और शक्तिमान बादशाह है। उसकी शक्ति से वह डरे और उसकी वीरता से प्रसन्न हुए क्योंकि वह आप भी वीर होते हैं और वीरों का मान करते हैं। अकबर की जीत हुई। उसने उनके साथ मेहरबानी का वर्ताव किया। उनके देश उन्हीं को दे दिये; केवल इतना बचन ले लिया कि उसको अपना सम्राट मानते रहेंगे।

८—परन्तु राना सांगा का बेटा उदयसिंह जो मेवाड़ का राजा था अकबर को डोला देकर सन्धि करने पर राजी न हुआ। अकबर ने उसकी राजधानी चित्तौड़ पर चढ़ाई की। उदय सिंह अरवली पहाड़ में चला गया और एक वीर और जवान क्षत्रिय को जिसका नाम जयमल था चित्तौड़ की रक्षा के लिये छोड़ गया। चित्तौड़ गढ़ सारे राजपूताने की नाक थी और

सब से बलिष्ठ गढ़ था। इसमें जाने की एक ही राह है। यह राह पहाड़ की काट कर बनाई गई है इसमें एक के ऊपर एक चार फाटक हैं। पहले पहल १३०३ ई० में अलाउद्दीन खिलजी ने इसको पराजित किया था, और फिर १५३३ ई० में बहादुर शाह गुजरात के सुलतान ने। अकबर कई महीने इसको घेरे पड़ा रहा; कोई उपाय विजय करने का न दिखाई दिया। अन्त में एक रात अकबर की दृष्टि गढ़ की दीवार पर पड़ी तो उसने देखा कि जयमल उसपर खड़ा हुआ अपने सैनिकों से एक संध बन्द करा रहा है जो उसमें



उदय सिंह ।

हो गई थी। अकबर ने तत्काल अपनी सब से अच्छी बन्दूक मंगाई और एक ऐसा निशाना लगाया कि गोली जयमल के माथे पर बैठी। जयमल गिरतेही परलोक सिधारा। राजपूत निराश हो गये। उन्हीं ने प्राचीन नीति के अनुसार जीहर करके स्त्रियों और बालकों को अपने हाथ से मार दिया और फिर केसरिया बस्त्र धारण कर हाथों

में तलवार ले गढ़ से निकल पड़े और ऐसे कट कट कर मरे कि आठ हजार में एक भी न बचा।

६—उदय सिंह ने अकबर की आधीनता स्वीकार न की। उसके पुत्र प्रताप ने भी जीते जी उसके आगे सिर न नवाया। राना प्रताप ने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक चित्तौड़ न ले लूंगा चांदी सोने के बरतनों में भोजन न करूंगा न फूस के बिछौने के सिवा किसी और बिछौने पर सोऊंगा, न दाढ़ी को बल देकर चढ़ाऊंगा। यह लड़ता लड़ता मर गया पर चित्तौर न ले सका।

इस कारण इसने एक और नगर बसाया और उसका नाम बाप के नाम पर उदयपुर रखा। उदयपुर के राना आज तक न दाढ़ी चढ़ाते हैं न चांदी सोने के बरतनों में बिना पत्ता बिछाये भोजन करते हैं न सेज पर बिना फूस बिछाये सोते हैं। ऐसा अनुमान किया जाता है कि इस वंश में सोलहों आने राजपूती अंश भरा है। राजपूतों का एक यह वंश है जो यह अभिमान करता है कि हमने मुसलमान सम्राटों की आधीनता नहीं की न उनको डोले दिये।

१०—मेवाड़ के राज्य में उदय सिंह का एक और बड़ा दृढ़ गढ़ था। इसका नाम रत्नभोर था। राजा सुर्जन यहां का अधिकारी था। उसकी चढ़ाई में भी अकबर को बहुत समय लग गया और अब भी गढ़ के टूटने की कोई आशा न दिखाई दी। राजपूतों की यह रीति थी कि चढ़ाई के दिनों में रात्रि के समय कभी कभी



राना प्रताप ।

युद्ध बन्द करके दोनों ओर के लोग आपस में मिलते और बातचीत किया करते थे। एक राति को अकबर के सेनापति मानसिंह सुर्जन से भेंट करने को गढ़ में गया और अकबर असावर्दार का भेस बदल कर उसके साथ गया। सुर्जन ताड़ गया उसने अकबर के हाथ से असा ली और उसको अपनी जगह पर बैठाया। अकबर ने मुस्कारा कर कहा कि राजा सुर्जन अब क्या किया जाय। मानसिंह ने तुरंत कहा कि मेवाड़ के राना का साथ छोड़ दो, गढ़ सम्राट को सौंप दो और उनकी

आधीनता स्वीकार कर लो। अकबर ने कहा कि जो तुम सुभक्तों अपना सम्राट मानकर मेरी आधीनता स्वीकार करो तो एक क्या पचास रजवाड़ों का अधिकारी बना दूंगा और तुम उनमें राज करना। मानसिंह ने यह भी कहा कि बादशाह ने तुम्हारे साथ कैसा अच्छा व्यवहार किया है और राजपूत राजाओं का कैसा आदर करता है। सुर्जन मान गया और गढ़ की कुंजियां सम्राट को सौंप दीं।

११—अकबर ने राजपूत राजाओं की कन्याओं से विवाह कर लिया और उनके बाप भाइयों को अपनी सेना का अफसर बना



जोधबाई।

दिया। अब वह उसके मित्र और नातेदार हो गये। अकबर की एक मलका जयपुर के राजा बिहारीमल की बेटी थी। बिहारीमल का बेटा भगवानदास अकबर के बड़े सेनापतियों में था। भगवानदास का गोद लिया हुआ बेटा मानसिंह एक और बड़ा सुप्रसिद्ध सेनापति हुआ है। अकबर का बड़ा बेटा सलीम इसी स्त्री से था। जब सलीम बड़ा हुआ तो अकबर ने

उसका विवाह जोधपुर के राजा की कन्या जोधबाई से कर दिया। सात वर्ष के समय में अकबर राजपूताने का मालिक और राना उदयपुर को छोड़कर सब राजपूत राजाओं का सम्राट बन गया।

१२—जब हिन्दू इसके सहायक और आज्ञाकारी बने तो राजपूतों की सहायता से अकबर ने भारत के पठानी राज एक एक करके सब ले लिये। बिहार, बंगाल, उड़ीसा, काश्मीर, सिंध,

मालवा, गुजरात, खानदेश, काबुल और कंदहार सब जीत लिये । अपने राज के अंत में अकबर विन्ध्याचल के उत्तर में सारे भारत का, और दखिन में खानदेश, अहमदनगर और बरार का सम्राट था । एक समय उसने दखिन जीतने का विचार किया । अहमदनगर के निज़ामशाही बादशाहों में से एक की मृत्यु पर चार मनुष्य राज के दावादार खड़े हुए । उनमें से एक ने अकबर से सहायता मांगी । अकबर ने अपने बेटे मुराद को उसकी सहायता के लिये भेजा । अहमदनगर के हाल में पहिले कहा जा चुका है कि चांद बीबी ने कैसी वीरता के साथ उसका सामना किया था । अंत को बरार का राज अकबर को मिल गया । सन् १५६६ ई० में अकबर आप दखिन गया और खानदेश को अपने राज में मिला लिया । अहमदनगर और असीरगढ़ के गढ़ों को जीतने से उसको खानदेश मिला । बीजापुर और गोलकुंडे के बादशाहों ने भेटें दे कर दूत भेजे और अकबर के चौथे पुत्र दानियाल का विवाह बीजापुर के सुलतान की कन्या से हुआ ।

१३—सन् १६०० ई० के लगभग बाप के ४५ बरस के लखे राज से घबड़ा कर सलीम ने राज सिंहासन पर अधिकार जमाने का विचार किया । उसकी आयु तीस बरस की थी । यह अजमेर का हाकिम था ; बंगाले का सूबेदार मानसिंह उसका सहायक था । मानसिंह को बंगाले के एक अफ़ग़ान उमराव के विद्रोही हो जाने के कारण वहां जाना पड़ा था । राजा मानसिंह के जाते ही सलीम के सिरपर भूत चढ़ा । उसने सोचा कि पिता दक्षिण में हैं । उसके सेनापति दूर दूर प्रान्तों में अलग अलग पड़े हैं । इस विचार से इलाहाबाद पहुंचा, अवध और बिहार पर अधिकार जमा लिया, जो कुछ धन सम्पत्ति वहां मिली सब ले लिया और अपने सम्राट होने का ढंढोरा पिटा दिया । यह कहता

फिरता था कि अकबर मुसलमानों के पैगम्बर का बैरी है वह अबुलफज़ल से मिल कर मुसलमानों से कुरान को शिर्का कुड़ाना चाहता है। अब उसको सम्राट होने का कोई अधिकार नहीं है। धार्मिक मुसलमानों को चाहिये कि मेरा साथ दें। अकबर ने जब पुत्र के विद्रोह का हाल सुना तो स्नेह और करुणा से भरा हुआ एक पत्र लिखा और समझाया कि पुत्र, तुम अनजान हो और जो ठीक रास्ते पर आ जाओ तो मैं तुम्हारे अपराध क्षमा करूंगा। पत्र लिखने के पीछे ही वह कूच करता हुआ दिल्ली में आ उपस्थित हुआ। सलीम का कोई सहायक न हुआ और उसने जान लिया कि अभी उसके राज का समय नहीं आया है। सलीम ने अपना अपराध स्वीकार किया, अभय मांगी, और बंगाले और उड़ीसे का हाकिम नियत किया गया।

१४—सलीम ने देखाने को अभय प्रार्थना करली परन्तु जी में लज्जित न हुआ था। अब उसने ऐसा काम किया जिसके करने से वह जानता था कि पिता को अत्यंत शोक होगा। अबुलफज़ल कुछ थोड़ा से सैनिकों के साथ किसी सरकारी काम पर गवालियर की ओर जा रहा था। सलीम ने बीरसिंह देव को जो बुन्देलखण्ड के एक छोटे से राज का अधिकारी था बहकाया कि अबुलफज़ल को रास्ते में मार डालो। अबुलफज़ल अच्छे स्वभाव का मनुष्य, विद्वान और राजभक्त था; अकबर अपने सब नौकरों से अधिक उसपर भरोसा करता था; और भाइयों की भांति उससे स्नेह करता था। अकबर ने जब उसके मरने का समाचार सुना तो बड़ा सोच किया और दो दिन तक न खाया न सोया। अभी तक वह यह न जानता था कि अबुलफज़ल को किसने मारा। सलीम ने जो अपना जीवनचरित्र लिखा है उसमें आपहो कहता है कि मैंने अबुलफज़ल को मरवाया। केवल

इतना ही नहीं, वह साफ़ साफ़ कहता है कि मैंने यह एक पुण्य किया है। जब अकबर ने यह समाचार सुना तो कहा कि सलीम को राज की अभिलाषा थी तो मुझे क्यों न मारा अबुलफ़जल को क्यों मारा ?

३६—अकबर (उत्तरार्द्ध) ।

१—अकबर का रूप कैसा था ? वह कौनसी भाषा बोलता था ? अकबर लम्बे डील डील का था रूपवान पुरुष था उसकी छाती चौड़ी और हाथ लम्बे थे ; आंखें और बाल काले और मुंह गोरा और लाल था परन्तु अवस्था बढ़ने पर सांवला पड़ गया था। यह आधा ईरानी और आधा तुर्क होने के कारण फ़ारसी और तुर्की दोनों भाषाएं बोल सकता था ; शरीर का पुष्ट था, घोड़े की सवारी बहुत पसन्द करता था, पैदल चलता था दिन भर में बहुधा तीस चालीस मील की यात्रा करता था, बन्दूक का निशाना लगाने में बड़ा चतुर था। उसके पास बहुत सी बन्दूकें थीं जिनमें से सबके अलग अलग नाम थे। दुरुस्त अन्दाज़ अर्थात् ठीक निशाना लगानेवाली बन्दूक के बारे में पहिले ही कहा जा चुका है। यह वही बन्दूक है जिससे अकबर ने चित्तौड़ में जयमल को मारा था। इस बन्दूक से अकबर १८०० जन्तु मारे थे। यह आप दाढ़ी नहीं रखता था और औरों के दाढ़ी देखकर प्रसन्न नहीं होता था। यह गौ मांस और प्याज़ नहीं खाता था। कारण यह था कि उन वस्तुओं से वह घृणा करता था जिनसे उसकी हिन्दू स्त्रियां और हिन्दू मित्र घृणा करते थे। इसी कारण उसने आज्ञा दी थी कि कोई गोहत्या न करे।

२—ज्यों ज्यों आयु बढ़ती जाती थी अकबर का हृदय कोमल होता जाता था। उसे बहुत से युद्ध करने पड़े परन्तु

उसने कभी कोई देश नहीं उजाड़ा और न कहीं प्रजा ही को लटा मारा। छोटी अवस्था में सलीम बड़ा निर्दयी था। एक बार अकबर ने सुना कि सलीम ने जीते जी किसी की खाल खिंचवा ली। अकबर कहने लगा, आश्चर्य है कि जो मनुष्य मरी बकरी की खाल खींचते देखकर अत्यन्त दुखी होता है उसका पुत्र क्योंकर किसी जीते मनुष्य पर ऐसा अत्याचार करता है ?

३—अकबर की शिक्षा मुसलमानी रीति के अनुसार हुई थी परन्तु हिन्दुओं के लिये बड़ा कोमल और दयालु था। यह कहा करता था कि हर मत में भलाई और सत्य पाया जाता है। उसका वचन था कि जो ईश्वर से प्रेम रखता है वह हर जगह उसका दर्शन कर सकता है, मुसलमान मसजिद में हिन्दू अपने मन्दिर में और ईसाई गिरजे में। अकबर के राज में हर मनुष्य को अधिकार था कि जो मत पसन्द करे उस पर चले। उसके सिक्के पर फ़ारसी में एक शेर लिखा था जिसका अर्थ यह है कि, “सच बोलना ईश्वर को प्रसन्न करने का उपाय है। मैंने किसी को सचाई की राह में भटकते नहीं देखा।” उसकी अभिलाषा थी कि अपनी राजसभा में हर मत के विद्वानों को बुलाये। बहुधा गुरुवार को सन्ध्या को वह उन विद्वानों को आज्ञा देता कि अपने धर्म के पुष्ट करने के लिये व्याख्यान दें। सुन्नी, शिया, ब्राह्मण, पारसी, ईसाई और यहूदी बारो बारो अपने अपने धर्म का मण्डन करते थे। इन सब शास्त्रार्थों के पीछे अकबर ने एक नया मत निकाला ; इसका नाम दीन इलाही (ईश्वरीय धर्म) रक्खा। जिस धर्म की जो बात पसन्द आई वही अकबर ने अपने मत में रखली। इस धर्म की शिक्षा यह थी कि ईश्वर एक है और अकबर उसका खलीफ़ा या दूत है। अकबर कहता था कि कोई मनुष्य ईश्वर का कर्तव्य देखना चाहे तो सूर्य, अग्नि और तारे मौजद हैं।

जिस भांति प्राचीन आर्यलोग उनका पूजन करते थे तुम भी कर सकते हो। पर अकबर ने कभी किसी पर दबाव नहीं डाला कि वह इस नये मत को माने। कुछ लोगों ने केवल यह विचार कर कि अकबर प्रसन्न होगा इस दोन को स्वीकार कर लिया था पर उसकी मृत्यु के पीछे कभी ऐसा नहीं सुना गया। अकबर के शान्त स्वभाव होने का एक कारण यह भी था कि उसके महल में बहुत स्त्रियां ऐसी थीं जो मुसलमान न थीं। हर हिन्दू स्त्री के लिये एक अलग मन्दिर था और हर मन्दिर का अलग पुजारी था। उसको अधिकार था कि जिस भांति चाहे अपने देवता की पूजा करे। आप भी कभी कभी माथे पर तिलक लगा लेता और गले में जनेऊ धारण कर लेता था।

४—अन्तिम अवस्था में अकबर कुछ बुद्धिहीन सा हो गया था और अपने आप को और मनुष्यों से बढ़ कर समझता था। एक मुल्ला ने उसकी बुराई में एक शेर लिखा था जिसका अर्थ यह था कि इस बरस सम्राट पैगम्बर होने का दावा करता है दूसरे बरस अपने को ईश्वर ही कहेगा। अब जो सिक्का उसने जारी किया उसपर अल्लाह अकबर के शब्द लिखे थे। उनका अर्थ यह हो सक्ता है कि ईश्वर बड़ा है और यह भी हो सक्ता है कि अकबर ईश्वर है। फौजी पहिले ही अपनी कविता में कह चुका था



अकबर हिन्दू के रूप में।

कि “तुमने अकबर को देख लिया तो स्वयं ईश्वर को देख लिया”। फिर कष्टर मुसलमान, जैसे विद्वान और मुझे, क्यों कर अकबर से

अप्रसन्न न होते ? उनमें से बहुतेरों ने सलीम को भड़का कर, जैसा पहिले कहा जा चुका है, अकबर का विद्रोही कर दिया।



मानसिंह।

५—अकबर आप विद्वान न था। एक समय तो ऐसा था कि वह लिख पढ़ भी न सकता था। कारण यह था कि बाल्यावस्था में जिस निर्दयी चचा के यहां वह बन्दी था उसने उसको शिक्षा पर ध्यान ही नहीं दिया। हां अकबर की यह चाह थी कि किसी पढ़े लिखे को पास बैठा कर उससे पुस्तकें पढ़वाता जाता और आप सुनता था। उसने एक बड़ा पुस्तकालय बनवाया था जिसमें लगभग पांच हजार पुस्तकें थीं। उसको चित्रकारों से बड़ा प्रेम था। बहुत से चित्र उसके यहां मौजूद थे।

कविता और गाना सुन कर भी बहुत प्रसन्न होता था।

६—अकबर की राजसभा में उस समय के सुप्रसिद्ध विद्वानों का जमघट रहता था और उन्हीं की सहायता से वह हिन्दू और मुसलमान दोनों को मिलाये रहता था। हम पहिले ही कह चुके हैं कि राजा भगवान दास और जयपूर नरेश मानसिंह दोनों अकबर की सेना के सेनापति थे। मानसिंह पहिले बङ्गाले का सूबेदार हुआ, फिर बिहार का, फिर दखिन का, और अन्त में काबुल का। उसने उड़ीसा को जीत कर अकबर के राज में मिला लिया। अकबर का अपने सैनिक अफसरों में सब से अधिक विश्वास मानसिंह ही पर था। मुसलमान अफसरों में अकबर के

सब से बड़े विश्वास पात्र दोनों भाई शेख अबुलफैज़ी और शेख अबुलफज़ल थे। फैज़ी अकबर की राजगद्दी के बारहवें बरस उसकी सेवा में आया उसके छः बरस पीछे अबुलफज़ल जो केवल अठारह बरस का था सम्राट के सम्मुख लाया गया और तत्काल राज सभासदों में भरती हो गया। दोनों भाई **तनमन से अकबर को चाहते थे**, और उसी के धर्म में भी थे। अकबर भी उनका बड़ा सम्मान करता था। इस स्नेह और विश्वास के कारण अबुलफज़ल तो जीताही बलिदान हो गया। सलीम इस बात को न देख सकता था कि मेरा पिता किसी दूसरे पर मुझ से अधिक विश्वास करे। जैसे जैसे दिन बीतते गये, डाह की अग्नि उसके हृदय में और अधिक भड़कती गई। अन्त में सलीम ने उसे मरवा ही कर छोड़ा।



राजा भगवान दास ।

७—फैज़ी बड़ा विद्वान था। संस्कृत और फ़ारसी भाषायें भली भाँति जानता था। उसने संस्कृत की बहुत सी पुस्तकों का फ़ारसी में अनुवाद किया है। उसने कविता भी फ़ारसी में बहुत की है और अपने भाई के कार्य में भी बहुत सहायता दी। आधी रात का समय था कि अकबर को सूचना मिली कि फैज़ी परलोक सिधारनेवाला है। तत्काल उसके समीप गया और सेज के निकट दोनों घुटनों के बल बैठकर धीरे धीरे फैज़ी के सिर को अपने हाथ से उभारा और कहने लगा कि, हे शेख जी, हे मेरे मित्र, आप को

दिखाने के लिये मैं हकीम साहब को लाया हूँ। परन्तु फ़ैज़ी संसार में हो तो बोले। उसकी आत्मा तो परलोक पहुँच चुकी थी अकबर ने पगड़ो सिर से उतार कर फेंक दो और धाड़ मार मार कर रोने लगा।

८—अबुलफ़जल अकबर का जन्म का मित्त और बड़ा भारी विद्वान था। वह बड़ा सूर वीर योद्धा और दांव घात का पक्का



अबुलफ़जल।

सेनापति भी था। यह सब से बड़ी सैनिक पदवी को पहुँचा और धीरे धीरे प्रधान मंत्री हो गया। अकबरनामा जिसे अकबर के राज का इतिहास कहना चाहिये इसी का लिखा है। उसका एक भाग आईने अकबरी के नाम से प्रसिद्ध है। उसमें केवल व्यवहार ही का वर्णन नहीं है परन्तु उसमें अकबर की राज सभा का पूरा हाल

दिया हुआ है। आधीन देशोंका विस्तार के साथ वर्णन किया है। राजके प्रबन्ध की रीति भी दी हुई है। सारांश यह है कि अकबर के राज का वर्णन पूरा पूरा दिया है। अबुलफ़जल अकबर में कोई अवगुण न देखता था इस कारण आरम्भ से अन्त तक सम्राट की प्रशंसा ही प्रशंसा सुनाई देती है।

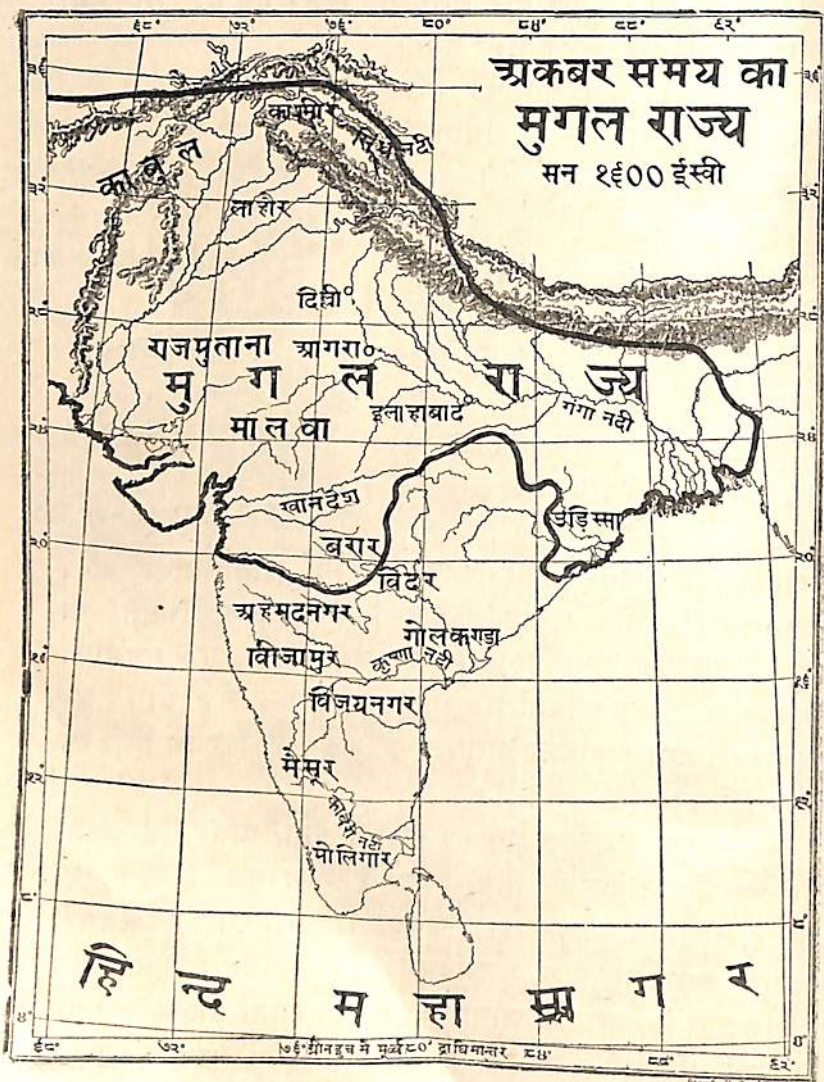
९—राजा टोडरमल पंजाब प्रान्त का हिन्दू था; इससे पहले बहुत दिनों तक शेरशाह के यहां नौकर रह चुका था; गणितविद्या में बड़ा चतुर था। भूमि के बन्दोबस्त और लगान लेने के नियमों में, राजसभा में कोई भी ऐसा चतुर न था जैसा कि यह था। न केवल वह लगान ही के मामले में निपुण था परन्तु सैनिक विद्या

में भौ कम न था। कई बार सेना साथ लेकर युद्ध पर, या किसी प्रान्त का सूवेदार करके भेजा गया। उसी की सम्मति और बुद्धि का परिणाम था कि अकबर ने लगान के नियम बनाये। सारा देश नापा गया और उपज के विचार से सारी भूमि आठ भांति पर बांटी गई। घटिया पर थोड़ा लगान लगाया गया। इससे पहले बटाई के नियमानुसार लगान लिया जाता था। अर्थात् उपज का कुछ भाग सरकार ले लेती थी, कुछ किसान के पास रह जाता था। टोडरमल ने यह रीत निकाली कि अनाज की जगह किसान रुपया दिया करें। तहसीलदारों और लगान लेनेवालों का वेतन नियत हो गया। इससे यह हुआ कि प्रजा केवल लगान देती थी। तहसीली अफसरों और कर्मचारियों की भेंट पूजा से कूट गई थी। हर दसवें बरस नया बन्दोबस्त होता था। कुछ और कर जो प्रजा को अखरते थे छोड़ दिये जाते थे।



राजा टोडरमल।

१०—सारा बशीभूत देश १५ सूबों में बँटा था। हिन्दुस्थान के बारह और दखिन के तीन। उनके नाम यह हैं,—काबुल, लाहौर, मुलतान, इलाहाबाद, अवध, बिहार, बंगाला, अजमेर, गुजरात, बरार, खानदेश, अहमदनगर। अहमदनगर सम्पूर्ण रूप से शाहजहाँ के समय में जीता गया। हर प्रान्त में एक सेनापति होता था जो पीछे सूवेदार कहा जाता था। उसके आधीन एक दीवान होता था जिसके हाथ माल का काम रहता था।



एक फौज़दार, एक कोतवाल, एक मीरेअदल अर्थात् न्यायाधीश और एक काज़ी भी होता था ।

११—अकबर के राज में प्रजा का क्या हाल था ? प्रजा ऐसी सुखी और निश्चिन्त रहती थी कि पहिले कभी न थी । पठान बादशाहों के राज्य की अपेक्षा अब कर बहुत कम लगता था । जो महसूल मुसलमानों को देने पड़ते थे वही हिन्दुओं को भी । पहिले जज़िया मुसलमानों के सिवाय और सब से लिया जाता था । अकबर ने जज़िया लेना बंद कर दिया । तीर्थयात्रा करनेवालों से जो महसूल लिया जाता था वह भी छोड़ दिया गया ।

१२—हर मनुष्य को अधिकार था कि जिस धर्म पर चाहे चले और जिस भांति उसको इच्छा हो रहे । कोई किसी को दुख देनेवाला न था । किसी को किसी का भय न था । हां हिन्दुओं के यहां जो सती की रसम थी उसको अकबर ने जहां तक हो सका रोका ।

१३—अकबर और दूसरे मुगल सम्राटों के समय में प्रजा और देशके प्रबन्ध का कोई ठीक क्रम न था । सम्राट को अधिकार था जो चाहे सो करे । जो सम्राट अकबर को नाईं अच्छा होता तो राज का प्रबन्ध अच्छा होता और जो अच्छा न होता तो देश की दशा शोचनीय हो जाती । अकबर सारा राजकाज अपने हाथों में रखता था ; जो चाहता सो करता था ; उसकी आज्ञा की अपील न थी । अङ्गरेज़ों राज में चाहै हिन्दू हो चाहै अङ्गरेज़ सब के लिये न्याय का राज है । हर मनुष्य व्यवहार से परिचित है और उसपर चलता है । चाहै वह इङ्गलिस्तान का राजाही क्यों न हो उसे कानून के अनुसार उतनाही चलना पड़ता है जितना किसी दीन मंगते को ।

१४—मृत्यु के समय अकबर को आयु ६३ वरस की थी ।

उसने ५१ बरस राज किया । उसके पीछे उसका जेष्ठ पुत्र सलीम राज-सिंहासन पर बैठा ।

३७—जहांगीर ।

(१६०५ ई० से १६२७ ई० तक)

१—सलीम जहांगीर को पदवी धारण करके सिंहासन पर



जहांगीर ।

बठा । इसकी मां राजपूत राज-कुमारी थी । इस कारण यह भी आधा राजपूत ही था । इसके दो भाई सुराद और दानियाल अकबर के आगे ही मर चुके थे परन्तु उसी के बेटे खुसरो ने, जो जोधाबाई के पेट से था, अपने मामा राजा मान-सिंह और अपने ससुरे खानज़मान की सहायता से जो अकबर का सब से सिरचढ़ा सेनापति था, राज लेने के लिये बड़ा जोर मारा । मरते समय अकबर ने अपने दरबारी और अफसरों को बुलाकर घोषणा कर दी थी कि मेरे पीछे सलीम मेरे मुकुट का अधिकारी होगा ।

२—जहांगीर खुसरो से रुष्ट था ; इससे खुसरो के साथ अच्छा बर्ताव भी न करता था । सिंहासन पर बठने के चार महीने पीछे आधी रात को सोते से जगाकर चर ने जहांगीर को यह

समाचार दिया कि खुसरौ दिल्ली भाग गया। वहां उसने कुछ सेना भी इकट्ठी कर ली है और लाहोर पहुंच गया है। जहांगीर उसके पीछे चला। लाहोर पहुंचकर उसने देखा कि किला घिरा पड़ा है। खुसरौ को सेना को हार हुई और वह भागा। सिन्धु नदी पार जाने का उपाय कर रहा था कि पकड़ा गया और पांवों में बेड़ी पहिने बाप के सामने लाया गया। उसके ७०० साथी बड़ी निठुराई से बंध किये गये और वह सोलह बरस तक कंद में रहा; इसके पीछे अपने सगे भाई खुर्रम (शाहजहां) के हवाले किया गया और खुर्रम ने उसे मरवा डाला।

३—अकबर की नाईं जहांगीर ने भी कई राजपूत राजकुमारियों के साथ विवाह किया। उनमें एक से खुर्रम था जो पीछे शाहजहां के नाम से सिंहासन पर बठा। पर बादशाह होने के छठे साल जहांगीर ने एक ईरानी स्त्री से ब्याह किया। यह नूरजहां थी जो भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध मलका हो गई है।

४—नूरजहां का बाप तुर्किस्तान का रहनेवाला था; अपनी जन्मभूमि में दरिद्रता से घबराकर भारत में चला आया था। लाहोर में उसके एक पुराने मित्र से भेंट हुई। उसकी सहायता से दरबार में एक ऊंचे पद पर नियुक्त हो गया। वह बुद्धिमान मनुष्य था; जल्दी जल्दी बढ़ता गया और अन्त में खजाने का हाकिम बना दिया गया। उसकी इकलौती बेटी मेहरुन्निसा बड़ी सुन्दर और बुद्धिमती थी। उसके पिता ने उसकी मंगनी एक नवयुवक ईरानी सर्दार शेर अफगन से, जो बङ्गाले का हाकिम था, कर दी थी।

५—अभी ब्याह न होने पाया था कि सलीम की दृष्टि उसपर पड़ी। शाहजादा उसके प्रेम में फँस गया और उससे निकाह

करना चाहा। नूरजहां का पिता शेर अफगन के साथ मंगनी कर चुका था और अपने वचन से फिरना नहीं चाहता था। सलीम ने अकबर से फर्याद की पर अकबर ने बड़ी रुखाई से उसकी सहायता करने से इनकार किया। फिर मेहरुनिसा का ब्याह शेर अफगन के साथ हो गया और वह उसके साथ बङ्गाले चली गई।



नूरजहां।

सिंहासन पर बैठते ही सलीम को कोई रोक टोक न रही। उसने शेर अफगन को मरवा डाला और उसकी स्त्री को राज-

महल में लेकर उसका नाम नूरमहल रक्खा। स्वामी के मारे जाने पर नूरजहां बड़ी दुःखित थी। क्रोध और दुःख के कारण उसने छः बरस तक जहांगीर की सूरत न देखी। अन्त में उसका क्रोध शान्त हुआ। मातम के भी कई बरस हो चुके थे इस कारण उसने बादशाह से ब्याह करना स्वीकार कर लिया।

६—अब फिर उसका नाम बदला गया और इसबार उसको नूरजहां की पदवी मिली। अब राज का पूरा अधिकार नूरजहां के हाथ में चला गया। जहांगीर ने सब काम उसी पर छोड़ दिये। सरकारी कागज़ों और आज्ञापत्रों पर जहांगीर के बदले नूरजहां के हस्ताक्षर होने लगे। नूरजहां का बाप बड़े वज़ीर के पद पर नियत किया गया। उसका भाई सभासदी में पहिले नम्बर पर था। बीस बरस तक नाम को जहांगीर बादशाह था पर वास्तव में नूरजहां बादशाही करती थी। जहांगीर कहा करता था कि मुझको तो पेट भर खादिष्ट भोजन और पीने को उत्तम शराब मिल जाया करे इसके सिवाय मुझे और कुछ न चाहिये। वह यह जानता था कि राज का प्रबंध मलका मुझसे अच्छा कर सकती है;

इस कारण उसको कोई रोक टोक न करता था। लोग अनुमान करते हैं कि गुलाब का इतना नूरजहाँ ही ने निकाला। हमाम के हौजों में गुलाब के फूल भरे रहा करते थे। मलका ने एक दिन पानी के ऊपर कुछ तेल सा तरता हुआ देखा। बस मलका को इतना बनाने की रीति सूझ गई और तब से गुलाब का इतना तैयार होने लगा।

७—यह भी जहांगीर और भारतवर्ष के अच्छे कर्मों का फल था कि मलका राज्य के प्रबंध में ऐसी चतुर थी, नहीं तो जहांगीर में न तो अकबर के समान बुद्धि थी और न उसका सा स्वभाव था। इसको सिवाय आराम और खुशी के और किसी बात का ध्यान ही न था। मुगल बादशाहों में इसके समान शराबी और आराम तलब कोई और नहीं हुआ।

८—भारतवर्ष के मुगल बादशाहों को चर्चा इङ्ग्लैंड में भी पहुंच गई थी। जहांगीर को वहां “बड़ा मोगल” कहते थे। १६१५ ई० में इङ्ग्लैंड के बादशाह पहिले जेम्स ने जहांगीर के पास एक राजदूत भेजा जिसका नाम सर टामस रो था। उसकी इच्छा यह थी कि अङ्गरेजी सौदागरों को भारतवर्ष में व्यापार करने की आज्ञा मिल जाय। उस समय सूरत बन्दर में अङ्गरेजी सौदागरों की एक कोठी थी। सर टामस रो जहांगीर के दरबार में तीन बरस रहा। उसने जो कुछ वृत्तान्त भारतवर्ष का सुना या देखा था लिख डाला। सर टामस रो का कथन है कि राज्य का प्रबंध ऐसा अच्छा न था जैसा अकबर के समय में था। सूबेदार प्रजा को सताते थे। देश में डाकुओं और लुटेरों ने बड़ा गड़बड़ मचा रक्खा था। जब तक बचाव के निमित्त पूरा जङ्गी सामान न रहता यात्रा करना बड़े जोखिम का काम था। सर टामस रो बादशाह के मुजरे के निमित्त दरबार में जाया करता था। बादशाह एक

नीचे तख़्म पर इजलास करता था जिसमें हीरे और लाल जड़े हुए



सर टामस रो ।

थे । कभी कभी बादशाह सर टामस रो को खाने के लिये संग बिठालता था और इतनी शराब पीता था कि नशे में मतवाला हो जाता था ।

तुजुक जहांगीरी में बादशाह स्वयं लिखता है कि जब मैं जवान था तो दिन भर में बीस प्याली 'मै' (मदिरा) की पिया करता था पर तख़्म पर बैठने के दिन से पांच ही सात प्यालियां पीकर संतुष्ट हो जाता हूं । खाने पर बैठने के समय किसी

को क्या मजाल थी कि जबतक बादशाह को नींद न आजाय उठ खड़ा हो । जब सर टामस रो ने भारतवर्ष में व्यापार करने की आज्ञा मांगी तो बादशाह ने उत्तर दिया कि मलका से कहो, वही देश का प्रबंध करती है । इस कारण इस बात की आवश्यकता हुई कि नूरजहां के भाई आसफ़जाह को एक बहुमूल्य जड़ाऊ आभूषण भेंट किया जाय । भेंट देने पर सर टामस का कार्य सिद्ध हो गया, अर्थात् भारतवर्ष में व्यापार करने की आज्ञा मिल गई ।

६—जहांगीर के राज में स्थान स्थान पर लड़ाइयां और बगावतें होती रहीं विशेष कर दखिन में । जहांगीर अपने जीवन चरित में लिखता है कि एक बार कन्नौज में विद्रोह हुआ और तीस हजार विद्रोही मारे गये ; दस हजार के सिर काट कर दिल्ली भेज दिये गये और दस हजार पेड़ों पर उल्टे टांगे गये । बादशाह लिखता है कि कोई भी सूबा ऐसा न था जिसमें लगभग पांच लाख बागी मारे न गये हों ।

१०—जहांगीर के चार बेटे थे—खुसरो, पर्वेज़, खुर्रम अथवा शाहजहां, और शहजहार। इनमें सब से प्यारा शाहजहां था। उसका निकाह नूरजहां की भतीजी के साथ हुआ था। जहां कहीं लड़ाई भिड़ाई होती थी सेना के साथ शाहजहां ही भेजा जाता था। पर नूरजहां की एक बेटੀ शेर अफगन से थी वह शहरयार से ब्याही थी और नूरजहां ने बहुत चाहा कि जहांगीर का शहरयार ही उत्तराधिकारी हो।

११—जहांगीर के अन्तिम समय में खुर्रम ने उसे बहुत दिक किया। यह बादशाह बनने का आसरा करते करते थक गया था। इसने शाहजहां की एदवी धारण की और इस बात के उद्योग में लगा कि ज़बर्दस्ती राज का मालिक बन जाय। नूरजहां ने एक शक्तिमान और बहादुर सद्दार् महाबत खां को बुलाया कि जहांगीर की रक्षा और सहायता करे। उसने शोघ्न ही शाहजहां को दखिन की ओर भगा दिया पर नूरजहां को चिन्ता हुई कि कदाचित महाबत खां आप बादशाह बनना चाहे इस कारण उसने उसे दरबार में बुलाया। उसकी इच्छा यह थी कि वह आ जाय तो उसको मरवा डाले पर महाबत खां राज-पूतों की एक ज़बर्दस्त सेना अपने संग लाया था। महाबत खां ने देखा कि जहांगीर डेरों में है, वहीं उसको घेर लिया। यह जहांगीर को किसी प्रकार की हानि पहुंचाना नहीं चाहता था। उसको तो अपने प्राण बचाने थे; इस कारण उसने जहांगीर को जाने न दिया और उसका आदर किया।

१२—कुछ दिन पीछे जहांगीर कैद से निकला और नूरजहां से जा मिला। अब महाबत खां को अपने प्राण बचाने की पड़ी और वह भाग कर दखिन में शाहजहां से जा मिला। शाहजहां उसकी आने से बहुत प्रसन्न हुआ।

१३—इसके थोड़े दिनों पीछे जहांगीर मर गया। शाहजहां सिंहासन पर बैठा। नूरजहां के निमित्त एक अच्छा वेतन नियत कर दिया गया। पीछे नूरजहां तीस बरस तक जीती रही पर राज से इसका कुछ सम्बन्ध न था।

३८—शाहजहां।

(सन् १६२७ ई० से १६५८ ई० तक)

१—शाहजहां में तुर्क पठान की अपेक्षा राजपूत अंश बहुत था। उसकी मां राजपूत गजकुमारी थी और उसका बाप भी राजपूत मां का बेटा था। मुगल बादशाहों में उससे बढ़कर राजमौ ठाटवाला सम्राट दूसरा न हुआ। तीस बरस के राज्य में उसने ऐसे शहर बसाये और महल मकबरे और मसजिदें बनवाईं जिन से बढ़कर दूसरे इस देश में नहीं हैं।

२—सिंहासन पर बैठतेही उसने अपने सब भाइयों और उनकी अनाथ सन्तान को बड़ी निठुराई से मरवा डाला जिससे कोई राजका दावादार न रह जाय।



शाहजहां।

३—पहिले तो उसने ऐसी निठुराई की पर पीछे अपने राज्य का प्रबंध बहुतही अच्छा किया; और जहांगीर से बहुत बढ़कर निकला। वह न जहांगीर ऐसा आलसी न उतना शराबी था; अपने दादा अकबर की तरह हिन्दू मुसलमान सब को बराबर मानता था। उसकी प्रजा उससे बहुत प्रसन्न थी। राजपूत उसे राजपूत ही मानते थे और इसके बैरियों से लड़ाई में उसका साथ देते थे।

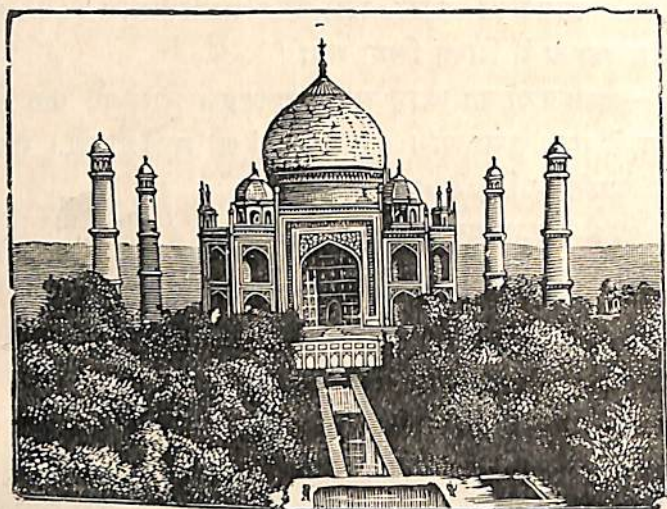
४—शाहजहां को सिंहासन पर बैठते थोड़ेही दिन बीते थे जब दखिन का सूवेदार खानजहां लोधी बिगड़ गया। अहमदनगर के सुलतान ने इसकी सहायता की। शाहजहां ने अपने सबसे बलवान सेनापति म्हाबत खां को दक्षिण भेजकर आप भी दल बादल समेत वहीं पहुंचा। दस बरस लगातार लड़ाई होती रही। अन्त को खानजहां मारा गया और अहमदनगर १६३७ ई० में मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।

५—शाहजहां का ब्याह सुमताज़ महल नाम की एक ईरानी महिला के साथ हुआ था। यह नूरजहां की भतीजी थी। सुमताज़ महल अपने पति से बड़ा प्रेम रखती थी। चौदह बरस के सुहाग के पीछे जब उसकी मृत्यु का समय आया तो अपने पति से बोली कि तुम और ब्याह न करना और मेरी समाधि ऐसी बनवाना कि जिससे संसार में मेरा नाम रहे। शाहजहां रो रहा था पर उसने यह दोनों बातें स्वीकार कीं और अपने वचन पर अटल रहा। उसने दूसरा ब्याह न किया और सुमताज़ महल की कब्र पर ताज महल बनवाया जो संसार की समस्त समाधियों से बहुमूल्य और सुन्दर है। यह आगरा में यमुना जी के किनारे बना है। और देखने में ऐसा जान पड़ता है मानों कल ही बन कर तैयार हुआ है। इसके बनवाने में तीस बरस लगे थे और लगभग तीस लाख रुपये का खर्च बैठा था।



सुमताज़ महल।

६—शाहजहां ने एक बड़ी मसजिद दिल्ली में बनवाई जिसको जामा-मसजिद कहते हैं; एक मसजिद आगरे में भी बनवाई जो मोती मसजिद के नाम से प्रसिद्ध है। संसार में कोई पूजागृह इसकी सुन्दरता को नहीं पहुँचता। शाहजहां का सिंहासन भी ऐसा भड़कीला था कि किसी और राजा को सुयस्सर न हुआ



(रौज़ा) तजमहल, आगरा ।

होगा। इस सिंहासन को “तख्त ताऊस” कहते थे। एशिया भर में इसको धम थी। यह नाचते हुए मोर के आकार का बनाया गया था। मोर के पंख जो उठते हुए बनाये गये थे उनमें हीरा माणिक पन्ना और नीलम जड़े हुए थे। इस पर साढ़े छः करोड़ रुपये की लागत लगी थी।

३—शाहजहां के शासन काल में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पूर्वीय समुद्रतट पर मदरास का स्थान मोल लेकर सेण्ट जार्ज का किला

बनवाया। बङ्गाल में भी कम्पनी ने एक छोटी सी कोठी बनवाली। यह कलकत्ते से लगभग २५ मील उत्तर हुगली स्थान में थी।

८—शाहजहां ने दखिन के जीतने के निमित्त बड़ा परिश्रम किया। हम ऊपर लिख चुके हैं कि दस बरस के घोर युद्ध के पीछे अहमदनगर हाथ लगा था। लगभग इतना ही समय बीजापुर के भी पराजित करने में बीता। बीजापुर का सुलतान बड़ी बीरता से लड़ा किन्तु उसे हार माननी पड़ी और उसने एक बड़ा वार्षिक कर देना स्वीकार किया। १६५३ ई० में शाहजहां ने अपने तीसरे पुत्र औरङ्गजेब को एक बड़ी सेना के साथ सारे दखिन को जीतने के लिये भेजा। वह अकस्मात् गोलकुण्डा की रियासत पर चढ़ गया। वहां के सुलतान को एक बड़ा कर देना पड़ा और उसने अपनी बेटी भी औरङ्गजेब के पुत्र शाहज़ादा मुहम्मद को ब्याह दी। इसके पीछे बीदर का क़िला जीता गया। इस समय बीदर का पहिला बादशाह जिसके साथ संधि की गई थी मर चुका था और दो शाहज़ादियां पृथक् पृथक् राज्य की अधिकारिणी होना चाहती थीं। इस कारण औरङ्गजेब फिर बीजापुर पहुंचा। बीजापुर को घेरनेहीवाला था कि उसे बाप की बीमारी का समाचार मिला और वह हिन्दुस्थान लौट चला आया।

९—इस समय दखिन के लोग बड़ी बुरी दशा में थे। दखिन के बादशाहों ने अपने अपने देश उजाड़ दिये थे कि बेरी की सेना को खाने पीने का भी कष्ट भुगतना पड़े। जो कुछ बचा बचाया था वह मुगल सैनिकों ने लूट खसोट लिया। पानों न बरसने के कारण कई बरस तक बड़ा विषम काल पड़ा। इसपर एक बला यह ओर पड़ी कि सारे देश में महामारी फैल गई और बहुतेरे अभागों को समेट कर ले गई।

१०—शाहजहां के चार पुत्र थे। सबसे बड़े का नाम दारा था। वह बड़ा वीर सुन्दर और शुद्ध प्रकृति का था ; पर अभिमानी और अदूरदर्शी भी था। यह भी अकबर की भांति हिन्दू जाति का पक्षपाती था इसी कारण मुसलमान अमीर इस से अप्रसन्न थे। दूसरे का नाम शुजा था। यह भी बड़ा वीर और चतुर था पर अपने दादा की भांति सुरापान और भोगविलास में दिन काटा करता था। तीसरा औरङ्गजेब था, यह ऊंच हौसले वाला परन्तु कष्टर मुसलमान था। इसने अपने छोटे भाई मुराद से कहा कि मुझे बादशाहत करने की अभिलाषा नहीं है ; मैं तो फ़कीर बन कर एकान्त में बठने और परमात्मा का ध्यान करने में अपने दिन काटना चाहता हूं पर मैं इस बात का उद्योग करूंगा कि तुमही राज्य के अधिकारी हो। सब से छोटा बेटा मुराद सुरा और शिकार में मस्त रहता था। जो कुछ औरङ्गजेब ने उससे कहा था आंखें मीच कर उसी को वह सच समझ बठा। चारों भाइयों के पास अलग अलग बड़ी सेना थी। चारों अलग अलग सूबों के सूबेदार थे। दारा दिल्ली में था, औरङ्गजेब दखिन में, शुजा बङ्गाले में और मुराद गुजरात में।

११—१६५८ ई० में शाहजहां बीमार पड़ा। इस समय इसकी आयु ७० बरस की थी और ३० बरस राज्य करते हो गये थे। लोगों ने अनुमान किया कि अब यह मर जायगा। इसके चारों बेटों में राज्य के निमित्त युद्ध होने लगा। पांच बरस तक इनमें युद्ध होता रहा। अन्त में औरङ्गजेब ने सब को परास्त किया और बादशाह बन बैठा। इसने दारा और मुराद को मरवा डाला ; शुजा आसाम को भागा यहां के हाकिम ने उसको और उसके बच्चों को मरवा डाला। शाहजहां बीमारी से बच गया उसको औरङ्गजेब ने आगरे के किले में कैद कर दिया और वह सात

बरस पीछे वहां से मरा निकला। शाहजहां ने जैसा किया था वैसे उसे फल मिला। उसने भी अपने बाप जहांगीर से लड़ाई ठानी थी और अपने भाइयों और उनकी सन्तान को मरवा डाला था। देखो तो मुगल वंश के पहिले दो बादशाहों और इन पिछले दो बादशाहों में कितना भेद था। बाबर ने अपने बेटे के निमित्त अपने प्राण दिये। हुमायूँ ने कई बार उन भाइयों के अपराध क्षमा किये जो उसकी जान के प्यासे थे। शाहजहां और औरङ्गजेब ने अपने बाप से लड़ाई ठानी और अपने भाइयों को मरवा डाला।

३६—औरङ्गजेब।

(१६५८ ई० से १७०७ ई० तक)

१—यों तो औरङ्गजेब ने भी अकबर की भांति पचास बरस राज किया पर और बातों में अकबर के विरुद्ध था। दस बरस तक तो यह उन राजपूत सरदारों को अप्रसन्न करने से डरता था जो इसके सेनापति थे। पहिले तीन बरस इसने अपने भाई भतीजों के मारने मरवाने में बिताये। जब तक यह न होलिया उसको अपनी कुशल में सन्देह रहा। फिर बाप का भी उसे ध्यान था। जब तक वह जीता था उसे भय था कि कहीं राजपूत लोग उसे फिर सिंहासन पर न बैठा दें। इस कारण उसे इसने आगरे के किले में बन्द रक्खा और वहां से १६६६ ई० में ७७ बरस की पूरे आयु होने पर वह मर कर ही निकला।

२—औरङ्गजेब अब सुचित होकर सिंहासन पर बैठा और दस बरस तक उन हिन्दुओं और ईसाइयों को जो पहिले बादशाहों के नौकर थे अलग करता गया और उनकी जगह पर

मुसलमानों को नियुक्त किया। अकबर ने बहुत से हिन्दुओं को नौकर रक्खा था और उनपर बहुत दयालु था। राजपूत अकबर पर प्राण देते थे और उन्होंने ने उसके राज्य को बड़ा शक्तिमान बना दिया था। अब वही राजपूत औरङ्गजेब से घृणा करने लगे। राजपूत और और हिन्दू उससे लड़े और मुगल राज्य को जिसकी नेव अकबर ने डाली थी तहस नहस कर दिया। औरङ्गजेब ने



औरङ्गजेब ।

शिया मुसलमानों का भी नाक में दम कर दिया था ; बहुत से शियों की जागीरें छीन लीं जो उनको अकबर ने दी थीं ।

३—औरङ्गजेब स्वच्छप्रकृति और अपने धर्म का पक्का था ; मद्यपान और भोगविलास से चिढ़ता था, अपने सुख के निमित्त रुपया नहीं फेंकता था वरन अपने हाथों टोपियां सीकर पैसा कमाता था। बहुत सादे कपड़े पहिनता था। उस समय को छोड़ कर जब वह सिंहासन पर बैठता था और कभी

वह चांदी सोने या जड़ाऊ चीज़ नहीं पहिनता था। अकबर की भांति वह भी बड़ा वीर था और सेनापति ऐसा था कि कैसी ही बिकट मुहिम हो न डरता था न भिभकता था ।

४—औरङ्गजेब बड़ा कठोर और क्रूर था। यह अपने दबदबे से काम लेता था। राज काज में छोह को अपने पास न फटकने देता था। उसके भय से उसके बेटों के ही प्राण सूखा करते थे। उनमें से एक की तो यह दशा थी कि जब कभी पिता का पत्र

उसके पास आता था उसे देखते ही पीला पड़ जाता था। औरङ्गजेब आज्ञा टालने को सह नहीं सकता था। जो उसकी आज्ञा से मंह फेरता उसको वह कभी क्षमा नहीं करता था। सारे सेनाध्यक्ष और कर्मचारी उसके नाम से थर्राते थे।

५—औरङ्गजेब नाच और गाने वजाने से घृणा करता था। सिंहासन पर बैठतेही उसने उन गवैयों और बेसवावों को निकाल दिया जो उसके बाप के समय के नौकर थे। कुछ ही दिन पीछे लोगों ने एक अर्थी बनाई और उसे लेकर रोते पीटते भरोखों के नीचे से निकले। बादशाह ने सिर उठाकर देखा और पूछा कि यह किसका मुर्दा है। उन्होंने उत्तर दिया कि यह संगीत विद्या का मुर्दा है। हम लोग इसे गाड़ने लिये जाते हैं। बादशाह ने उत्तर दिया कि इसे ऐसा नौचे गाड़ो कि फिर न निकल सके।

६—सम्भव है कि औरङ्गजेब अपने मनही मन में लज्जित हुआ हो कि मैंने अपने बाप और भाइयों के साथ बुरा बर्ताव किया और अपनी हिन्दूप्रजा का चित दुखाया। इसी कारण उसने अपने राज्यकाल में इतिहास लिखने का निषेध कर दिया था। उसके समय का वृत्तान्त जो कुछ कि हम लिखते हैं खफ़ी खां के रचे इतिहास से लिया गया है। यह छिपे छिपे और डरते डरते जो कुछ होता गया लिखता रहा। जब तक औरङ्गजेब जीता था इसने अपना लिखा हुआ किसी को नहीं दिखाया। जान पड़ता है कि औरङ्गजेब को अपनी आयु में कभी सुख न मिला और अन्तिम काल में अपनी निठुराई सोच सोच कर वह बड़ा दुखी रहता था। नव्वे बरस की आयु में औरङ्गजेब अपने बेटे को लिखता है कि मैं अपने राज्य का रक्षक नहीं था अब मेरी मृत्यु निकट है; मैं अपने पापों का फल अपने साथ ले जाऊंगा। कौन जानता है ईश्वर मुझे क्या दंड दे।

७—दखिन को जीतने का ध्यान इसे जन्म भर रहा। बहमनी राज्य के टूटने पर जो पांच रियासतें दखिन में स्थापित हुई थीं इनमें से तीन अर्थात् बीदर, बरार और अहमदनगर तो इसके बाप ही के राज में जीती जा चुकी थीं। रही गोलकुंडा और बीजापुर की रियासतें सो उनके जीतने का बीड़ा औरङ्गजेब ने उठाया। पच्चीस बरस तक इसके सेनापतियों ने इन दो पठानी रियासतों के आधीन करने में कठिन परिश्रम किया परन्तु कुछ लाभ न हुआ। अन्त में जब औरङ्गजेब ने देखा कि यह काम करना ही है तो मुझे आप करना चाहिये। यह ठानकर पैंसठ बरस की आयु में दिल्ली से निकला और रणभूमि में ऐसा गया कि वहां से वह फिर दिल्ली लौटकर न आया। उसके राज के अन्तिम पच्चीस बरस दखिन के युद्ध में बीते। बरसों को लड़ाई और मारकाट के पीछे गोलकुंडा और बीजापुर मुगल राज्य में मिला लिये गये। उस समय मुगल राज्य इतना लम्बा चौड़ा था जैसा पहिले कभी नहीं हुआ था। इन दोनों रियासतों को मिलाकर एक नया सूबा बनाया गया। पहिले पहिल इस सूबे का हाकिम नवाब या सूबेदार कहलाता था पीछे दखिन का निज़ाम कहलाने लगा। हैदराबाद इसकी राजधानी थी।

८—इसी समय मरहटों के छोटे छोटे झुण्डों के आपुस में मिल जाने से एक नई जाति बन गई। बीजापुर के सुलतान ने इनके सदर्दारों को दबा रक्खा था। अब औरङ्गजेब को मरहटों के राजा शिवाजी का सामना करना पड़ा। यह पुराने मरहटा सरदारों से बहुत शक्तिमान था। शिवाजी का वृत्तान्त आगे चलकर एक अलग अध्याय में लिखा जायगा; यहां इतना कह देना उचित है कि औरङ्गजेब शिवाजी को आधीन न कर सका।

९—पंजाब में भी सिक्खों की नई जाति का जन्म हुआ।

बाबर के समय में गुरु नानक एक महात्मा हो गये थे। हिन्दू मुसलमानों का आपस में लड़ना इनको अच्छा नहीं लगता था। इन्होंने ने कुछ बातें हिन्दू धर्म की लीं और कुछ मुसलमान मत की और दोनों को मिला कर एक नया पंथ चलाया। बहुत से मनुष्य उनके अनुगामी हुए जो सिख (शिष्य) अथवा चेले कहलाये। बाबर और और बादशाहों ने इनसे कुछ छेड़ छाड़ न की। कारण यह था कि यह बड़े शान्त स्वभाव के थे, न कर देने में बखेड़ा करते थे न किसी को सताते थे। पर औरङ्गजेब ने इन्हें बड़ा कष्ट दिया और बहुत से सिक्खों को मरवा डाला। इस कारण इन्हें अपने प्राणों की रक्षा के निमित्त हथियार बांधने पड़े और इनको एक लड़नेवाली जाति बन गई। औरङ्गजेब ने इनको हरा दिया और इनको भागकर



नानक ।

हिमालय में शरण लेनी पड़ी। औरङ्गजेब के मरने पर यह पहाड़ों से लौट आये और उत्तरीय भारत में सब से शक्तिमान हो गये।

१०—मरहटों से लड़ते लड़ते औरङ्गजेब के सैनिक थक गये थे। भोजन करने को अन्न न मिलता था। कूओं में विष डाल दिया गया था। पानी को तरसते थे। बादशाह की आयु अब नव्वे बरस की थी। ऐसा कोई मनुष्य उसके निकट न था जिससे वह कुछ सलाह पूछता। बेटे बाप की कठोरता और बहुत दिन राज करने से चिढ़ गये थे। एक बेटा मरहटों से जा मिला था, एक

भाग कर फ़ारस चला गया था। अमीर बिगड़े हुए थे। प्रजा धिक्कारती थी। अब समय आगया था कि बादशाह संसार के भगड़ों से मुक्त हो। निदान बुढ़ापे ही के रोग से निर्जोव होकर १७०७ ई० में चलता बना। उसके थोड़े ही दिनों पौछे मुग़ल राज भी नष्ट भ्रष्ट होने लगा।

४०—भारतवासियों और यूरोपवालों में वाणिज्य व्यवहार का आरम्भ होना।

१—आज कल भारतवर्ष ब्रिटिशराज का एक भाग है। इङ्ग्लैण्ड का बादशाह कैसर हिन्द भी कहलाता है। पर हमको देखना चाहिये कि अङ्गरेजों ने भारतवर्ष में कब प्रवेश किया कैसे आये, उनके आने का कारण क्या था और भारतवर्ष ब्रिटिशराज में कैसे आगया। अब इस पुस्तक में इसी बात का वर्णन होगा।

२—लगभग ३०० बरस हुए, पहिले पहिल अंगरेज यहाँ वाणिज्य की अभिलाषा से आये थे। काली मिर्च, चावल, रूई, नौल, अदरक, गरम मसाला, नारियल, पोस्ता जिससे अफीम निकलती है, गन्ना जिससे खांड और शक्कर तैयार होती है इत्यादि वस्तु इङ्ग्लैंड ऐसे शीत स्थान में नहीं उपजतीं। प्राचीन काल में भारतवर्ष की मलमल और रूई और रेशम के कपड़े इङ्ग्लैंड को अपेक्षा अच्छे बनते थे। अङ्गरेज सौदागर यह सब वस्तु यहाँ से विलायत ले जाते थे और विलायत से कपड़ा लोहे ताँबे और फ़ौलाद का बहुत सा सामान लाते थे जो यहाँ प्राप्त नहीं होता था।

३—पहिले भारतवर्ष का माल थल राह से ऊंटों और खच्चरों पर लद कर विलायत जाता था। भारतवर्ष से जो कारवां चलते थे वह अफ़ग़ानिस्तान, फ़ारस और ऐशिया कोचक होते हुए जाते थे।

जब अरबों ने यह देश जीत लिये तो इस तरह का बाणिज्य बहुत कुछ बन्द हो गया। सैकड़ों बरस तक अरबों और ईसाइयों में युद्ध होता रहा इस कारण ईसाई सौदागर पुराने रास्ते माल अस्वाब नहीं ले जा सकते थे।

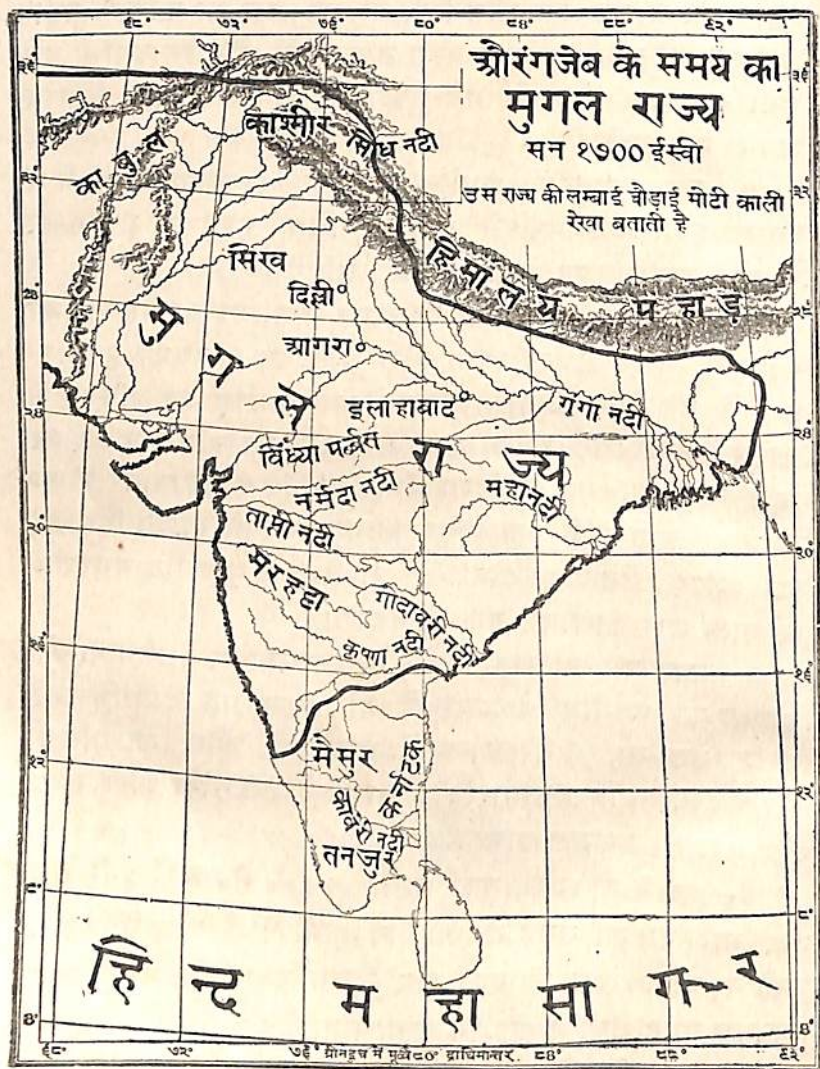
४—जब यूरोपवाले प्राचीन थल पथ से अस्वाब ले जाने में असमर्थ हुए तो उनको इस बात की चिन्ता हुई और यह सूझी कि कोई रास्ता समुद्र का निकालना चाहिये।

५—उनदिनों सब से सुगम समुद्र का रास्ता वह था जो अफ्रिका के पश्चिम और दक्षिण होता हुआ आता था। इसको पुर्तगाल-वालों ने ढूँढ निकाला था। समुद्र में जहाज़ छोड़ कर अफ्रिका के किनारे किनारे चले इसका फल यह हुआ कि दक्षिणीय तट पर पहुँच कर ज्यों पूर्व की दिशा में मुड़े त्यों हिन्द महासागर में जा निकले। होते होते एक प्रसिद्ध पुर्तगीज़ कप्तान वास्को डिगामा कुछ जहाज़ लेकर १४८८ ई० में भारतवर्ष के पश्चिमीय समुद्रतट पर आया और कालीकट नगर में उतरा।

६—कालीकट का राजा ज़मोरिन कहलाता था। उसने वास्को डिगामा को पुर्तगीज़ बादशाह के नाम एक पत्र दिया जिसका सारांश यह था, “मेरे राज्य में दारचीनी, लौंग, कालीमिर्च और अदरक अधिक होती है, मैं तुम्हारे देश से सोना चांदी मूंगा और करमज़ी मखमल चाहता हूँ”।

७—अब से सौ बरस तक अर्थात् १५०० ई० से १६०० ई० तक भारतवर्ष का समुद्रीय व्यापार पुर्तगीज़ों के हाथ में रहा। उन्होंने गोवा स्थान में एक बड़ा किला बना लिया था। आज तक यह स्थान उन्हीं के आधीन चला आता है।

८—यूरोप के और और देशवालों ने जो देखा कि पुर्तगीज़ भारत के व्यापार से बड़े धनी हुए जा रहे हैं तो उनके मुंह में



पानी भर आया और उन्होंने ने सोचा कि कोई ऐसा उपाय करना चाहिये कि हमलोग भी इस व्यापार में सामी हों। निदान हालैंड, इङ्गलैंड, फ्रान्स, जर्मनी, डेनमार्क और स्वीडन के व्यापारियों ने अपने अपने जहाज़ भेजने आरम्भ किये। पर कुछ सफलता हुई तो केवल हालैंड, इङ्गलैंड और फ्रान्सवालों को। और किसी को कुछ लाभ न हुआ और उन्होंने कुछ दिन में भारतवर्ष के साथ व्यापार करना बन्द कर दिया।

८—पुर्तगीज़ के पोछे भारतवर्ष में डच आये। यह यूरोप के उस छोटे देश के रहनेवाले थे जिसे हालैंड कहते हैं। अब यह लोग बल और पौरुष में बहुत घट गये हैं पर अब से ३०० बरस पहिले यह यूरोप की जहाज़ी कौमों में सब से चढ़े बढ़े थे और जहाज़ भी इन्हीं के सब से अच्छे होते थे। यह लोग पुर्तगीज़ से अधिक शक्तिमान थे; इस कारण इन्हीं ने पुर्तगीज़ों को गोवा छोड़ और सब स्थानों से निकाल दिया और १६०० ई० से १७०० ई० तक गरम मसाले का व्यापार अपने हाथ से न जाने दिया। इनकी कोठियां कोचीन, जावा, लंका और सुमात्रा के टापुओं में भी थीं।

४१—संयुक्त ईस्ट इंडिया कम्पनी।

१—१६०० ई० में लण्डन के लगभग सौ सौदागरों ने मिलकर मन्सूबा किया कि भारतवर्ष के साथ व्यापार किया जाय। इस अर्थ से उन्होंने एक कम्पनी बनाई जिसका नाम “इंगलिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी” था। कम्पनी ने इलीज़बेथ से जो उस समय इंगलिस्तान की रानी थी यह आज्ञा ले ली थी कि भारतवर्ष को जहाज़ भेजे। अकबर उस समय भारत का बादशाह था।

१६१२ ई० में कम्पनी ने सूरत नगर में जो मुगलराज का सब से बड़ा बन्दरगाह था एक कोठी बनाई। कम्पनी के कर्मचारी साल भर तक भारत के व्यापारियों से माल मोल लेकर कोठी में इकट्ठा रखते थे और जब उनके जहाज़ आते थे तो उनपर लाद कर यूरोप को भेज देते थे; और इङ्ग्लैण्ड का जो माल जहाज़ों पर आता था उसको अपनी कोठी में उतार लेते थे और बेचते रहते थे। अपने माल और प्राण की रक्षा के लिये उन्होंने ने कोठी के चारों ओर एक पुष्ट दीवार बनाली थी, उसपर तोपें चढ़ा दी थीं।

२—इङ्गलिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी को इतना लाभ हुआ कि अङ्गरेजों ने और और कम्पनियां भी बनालीं और भारतवर्ष के साथ व्यापार करना आरम्भ कर दिया। अन्त में लगभग सौ बरस पीछे यह सब कम्पनियां मिलाकर एक कर दी गईं। यह बात १७०० ई० की है। इस बड़ी कम्पनी का नाम “संयुक्त ईस्ट इण्डिया कम्पनी” रख दिया गया और इङ्ग्लैण्ड के बादशाह ने भारतवर्ष से व्यापार करने का पूरा अधिकार इस कम्पनी को दे दिया।

३—१६३८ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने चन्द्रगिरि के राजा से जो कर्नाटक में एक छोटी सी पहाड़ी गढ़ी का शासक था मदरास मोल ले लिया। यह उस समय मकुओं का एक छोटा सा गांव था। अंगरेजों ने इस स्थान पर एक किला बनवाया और उसका नाम सेण्ट जार्ज का किला रक्खा। बहुत से हिन्दू यहां आकर इनकी शरण में रहने लगे और इनके साथ लेन देन करने लगे।

४—बम्बई पहिले पहिल पुरतगीज़ों के आधीन था। इङ्ग्लैण्ड के बादशाह द्वितीय चार्ल्स ने पुर्तगाल के बादशाह की बेटी से



ब्याह किया और पुर्तगाल के बादशाह ने १६६२ ई० में अपनी लड़की के जहेज़ में बम्बई इज़लेण्ड के बादशाह को दे दिया। इसके छः बरस पीछे चार्ल्स ने यह नगर ईस्ट इण्डिया कम्पनी को

दस पाउण्ड सालाना किराये पर दे दिया। बम्बई बहुत अच्छा बन्दरगाह था। इस कारण यह नगर बहुत बड़ा होगया और बहुत से हिन्दू यहां आकर बस गये। कुछ काल बीतने पर अंगरेज़ अपना कुल कारखाना सूरत से उठा कर यहीं ले आये।

शाहजहां के राज में मदरास मोल लेने के एक साल पीछे अर्थात् १६४० ई० में अंगरेज़ों ने गङ्गा जी के मुहाने के निकट हुगली स्थान पर एक कोठी बनवाई और औरङ्गजेब के राज में उन्होंने ने तीन गांव मोल लिये जो कि हुगली की अपेक्षा गङ्गा जी के मुहाने के और भी निकट थे। इनमें से एक गांव का नाम कालीघाट था। यह वही स्थान है जो अब कलकत्ते के नाम से प्रसिद्ध है। १६६० ई० में अंगरेज़ों ने यहां पर एक किला बनवाया और उसका नाम फोर्ट विलियम रक्खा।

५—इनके अतिरिक्त अंगरेज़ों की और भी कोठियां थीं। पूर्वीय तट पर मदरास के दक्षिण में एक कोठी थी जो सेण्ट डेविड के किले के नाम से प्रसिद्ध थी। एक कोठी मसलीपटम, एक बङ्गाला, एक पटना और एक ढाके में थी और एक बङ्गाले के नवाब की राजधानी मुर्शिदाबाद के निकट कासिमबज़ार में थी।

६—फ़्रांसीस भी भारतवर्ष में अंगरेज़ों के साथ ही साथ आये थे और उन्होंने ने भी अपने व्यापार की कोठियां बना रखी थीं। इनमें से बड़ी बड़ी यह थीं,—पश्चिमीय समुद्र तट पर माही, मदरास के दक्षिण में पांडीचरो, पूर्वीय समुद्रतट पर बङ्गाले में कलकत्ते से बीस मील की दूरी पर चन्द्रनगर।

७—डच लोगों के व्यापार के स्थान भिन्न थे। उनमें से बड़े बड़े यह थे, कोचीन पश्चिमीय समुद्रतट पर, पुलीकट, अर्थात् पलिया घाट, मदरास के उत्तर में पूर्वीय समुद्रतट पर और चन्द्रनगर के पास चिंसुरा बङ्गाले में।

४२—शिवाजी की बढ़ती ।

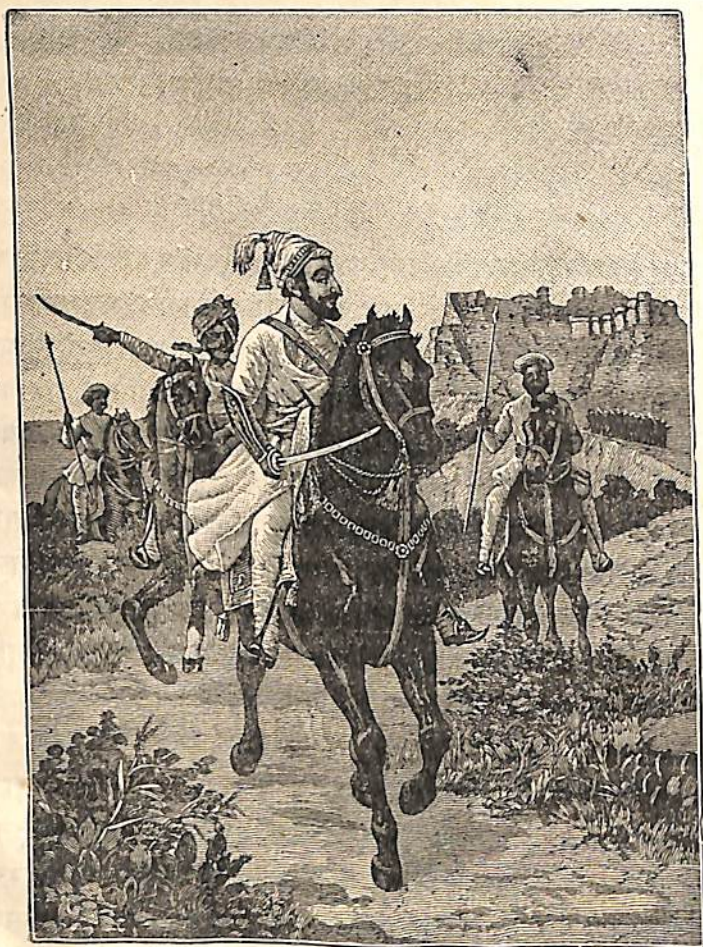
मरहटे ।

(१६२७ ई० से १६८० ई० तक)

१—मरहटे भारत के उस पहाड़ी हिस्से में रहते थे जिसे अब बम्बई हाता कहते हैं। यह लोग डील डील में छोटे, बदन के पुष्ट, बीर और स्वभाव में सीधे साधे थे। इनका देश पहाड़ियों से पटा पड़ा था। उस समय सड़कों न थीं और पहाड़ियों पर घने वन थे। लगभग हर पहाड़ की चोटी पर एक गढ़ था; और हर गढ़ का एक सरदार था जो आस पास के गावों का हाकिम था। बहुत दिनों तक यह सरदार दखिन के मुसलमान सुलतानों के आधीन थे और उनको कर देते रहे। केवल इतना ही नहीं परन्तु उनके साथ होकर मुगल सम्राटों की सेना से युद्ध भी करते थे। शिवाजी ने उन सब को मिलाकर एक बली जाति बना ली।

२—शिवाजी शाहजहां की राजगद्दी को साल सन् १६२७ ई० में पदा हुआ था। उसका बाप बीजापुर के दरबार में नौकर था। बाप नौकरी में था, शिवाजी पूने में पल रहा था। लिखना पढ़ना तो पण्डितों और ब्राह्मणों का काम समझा जाता था इस कारण शिवाजी को नहीं सिखाया गया; अलबत्ता शस्त्र विद्या की सब कलायें सिखाई गईं, जैसे घोड़े पर चढ़ना, तीर चलाना, कुश्ती लड़ना, बल्लम चलाना इत्यादि। उसको प्राचीन हिन्दू सूर वीरों के चरित याद थे। और उसकी अभिलाषा थी कि मैं भी उनको भांति काम करके नाम और उन्नति प्राप्त करूँ।

३—मरहटे सरदारों की यह रीति थी कि जब अवसर



शिवाजी ।

पाते थे तो अपने पहाड़ी गढ़ों से उतर कर नीचे के इलाकों में लूट मार करने लगते थे । शिवाजी बहुधा इनके साथ जाया करता था और बीस बरस की अवस्था में आप एक भुण्ड का सरदार बन

गया था। उसने पहले पुरन्धर का गढ़ लिया और फिर एक एक करके और गढ़ जीत लिये; हथियार और सामान और रुपया इकट्ठा किया और उसका नाम दूर दूर तक फैल गया।

४—होते होते बीजापुर के सुलतान को भी उससे डर लगने लगा। उसने शिवाजी से युद्ध करने के लिये अपने सेनापति अफ़ज़ल खां को भेजा। शिवाजी ने कहला भेजा कि मुझ में खां साहब का सामना करने की शक्ति कहां है; अगर वह शस्त्र छोड़ कर अकेले मुझसे मिलें तो मैं उनकी आधीनता स्वीकार करने को तैयार हूँ। अफ़ज़ल खां के जी में कुछ संदेह न हुआ। वह सब सेना और अरदली के सवार पीछे छोड़ गया और पत ती मलमल का बस्त्र पहन कर खाली एक आदमी अपने साथ लेकर शिवाजी से मिलने चला। इधर यह जवान मरहटा सरदार दावघात का पक्का, ऊपरी बस्त्र के नीचे कवच पहने हुए था; सुट्टी में बिकुवा और बांह में कटार छिपी हुई थी। अफ़ज़ल खां जो उससे मिलने को बढ़ा तो शिवाजी बाघ की भांति उस पर टूट पड़ा। पहले बिकुवा उसके पेट में घुसेड़ दिया फिर कटार से उसे मार डाला। शिवाजी के सैनिक जो पासही पेड़ों की आड़ में छिपे थे निकल कर मुसलमानों पर टूट पड़े। मुसलमान कुछ लड़ाई के लिये तैयार हो कर तो आये ही न थे हार कर भाग गये।

५—शिवाजी ने सारे देश को रौंद डाला और सारे दखिन का महाराजा बन गया। लगभग सब छोटे मोटे मरहठे सरदार और राजा उसके आधीन और सहायक हुए। यह मुसलमानों का बैरी था और उन्हें उसने जता दिया कि मैं गौ और ब्राह्मणों की रक्षा के लिये युद्ध करता हूँ। यह वह समय था कि जब दखिन के मुसलमान बादशाह औरङ्गजेब की सेना से युद्ध कर रहे थे।

उनको इतना अवकाश न था कि अपने बल को इकट्ठा करके शिवाजी को पराजित करने में लगते। परिणाम यह हुआ कि शिवाजी सबल होता गया और बीजापुर के सुलतान को उससे यह सन्धि करनी पड़ी कि अब से शिवाजी पश्चिमीय समुद्रतट का राजा माना जाय।

६—अब औरङ्गजेब भी सम्राट के पद पर पहुँच चुका था। इस मरहटे सरदार की बढ़ती को देखकर यह भी डरा और एक बहुत बली सेना देकर शाइस्ता खाँ को जो दखिन का सूबेदार था उसको परास्त करने के लिये भेजा। शाइस्ता खाँ इस भारी सेना को लेकर पूना में घुस गया। शिवाजी ने देखा कि ऐसे बली बैरी से खुले मैदान में लड़कर बिजयी होना तो असम्भव है। इस कारण उसने बैरागियों का भेस बना लिया। उसके साथ बीस जवान और थे; उन्होंने भी यही भेस बना रक्खा था। शिवाजी उन बीसों साथियों के साथ एक रात पूना में घुस गया और जिस घर में शाइस्ता खाँ ठहरा था उस में घुस कर उसे मारही लिया था पर वह खिड़की की राह कूद कर निकल गया। शिवाजी उसके पीछे दौड़ा और एक हाथ तलवार का जो मारा तो उसकी अंगुलियां कट कर गिर गईं। मरहटे जिस भाँति आये थे उसी भाँति लौट गये परन्तु शाइस्ता खाँ ऐसा डरा कि पूना छोड़ कर चला गया। अब शिवाजी निडर जहाँ चाहता था जाता था और देश जीत कर अपना राज बढ़ाता रहा।

७—इसके पीछे कुछ सैनिक लेकर शिवाजी पश्चिमीय तट के धनो बन्दरगाह सूरत में पहुँचा; छः दिन तक नगर को लूटा। यहाँ अंगरेजों की कोठी थी। उन्होंने उसकी बड़ी सावधानी से रक्षा की और शिवाजी को पास न आने दिया।

८—औरङ्गजेब ने फिर उसे दवाने को एक बड़ी भारी सेना

भेजी। इस बार शिवाजी ने सन्देश भेजा कि जो बादशाह मेरा कुछ राज मेरे पास रहने दे और मुझे अपनी सेना में कोई जंची पदवी दे तो मैं उसकी आधीनता स्वीकार करने को तैयार हूँ। औरङ्गजेब ने यह बात मान ली। वह यह चाहता था कि जो किसी भांति शिवाजी मेरे हाथ आ जाय तो मैं उसे मरवा डालूँ। शिवाजी दिल्ली पहुँचा और राज दरबार में हाज़िर हुआ परन्तु यहां उसके साथ ऐसा बुरा बरताव किया गया कि वह जान गया कि अब मेरा कुशल नहीं है। शिवाजी एक घर के भीतर बन्द होकर पड़ रहा और बीमारी का बहाना किया। उस घर की चारों ओर मोगल सैनिकों का पहरा था; फिर भी उसके साथी उसे कुशल पूर्वक एक सुरक्षित स्थान पर ले गये। निकालते समय उन्होंने उसे एक टोकरे में बैठाकर ऊपर से मिठाई रख दी। पहरेवालों ने समझा कि यह केवल मिठाई का टोकरा है, इस कारण उन्होंने कोई रोक टोक न की और यह निकल गया। कैद से निकलते ही शिवाजी ने दाढ़ी मोछ मुड़ा डाली गेरुवा वस्त्र धारण कर लिया, भभूत बदन पर मली; किसी ने न जाना कि यह कौन है; इस भांति शिवाजी फिर अपने देश में पहुँच गया।

८—औरङ्गजेब ने फिर उसको कितनी ही बार पकड़ने की चेष्टा की, बड़े बड़े लालच दिये, और बुलाया परन्तु वह उसके फंदे में न फँसा।

१०—अब शिवाजी राजगद्दी पर बैठा और वह मरहटों का राजा कहलाया। वह बड़ी भारी सेना लेकर दक्षिण की ओर चला; मद्रास के पास आया परन्तु उस पर चढ़ाई नहीं की। उसने मैसूर और करनाटक के सब गढ़, जैसे जिंजी, बेलहोर, आरनो, बंगलौर और बिलहारी ले लिये; अठारह महीने के मुहिम के पीछे पूना लौट आया। जो देश उसने जीते थे उनके हाकिमों ने

शिवाजी को चौथ अर्थात् अपनी आमदनी का चौथा भाग देना स्वीकार किया।

११—इसके कुछ काल पीछे सन् १६८० ई० में शिवाजी की मृत्यु हुई। उस समय उसकी आयु ५२ बरस की थी। मरहटों में ऐसा वीर और बुद्धिमान सरदार दूसरा न था। उन दिनों के मरहटों के हाथ के चित्र जो मौजूद हैं उन में दिखाया गया है कि शिवाजी घोड़े पर चढ़ा चला जा रहा है और चावल फांक रहा है। अर्थात् उसे आराम के साथ खाने का भी समय नहीं मिलता था।

१२—शिवाजी के पीछे उसका बेटा सम्भाजी (शम्भुजी) बाप की गद्दी पर बठा परन्तु उसमें बाप को योग्यता कुछ भी न थी। वह आलसो और निर्दयी था। औरङ्गजेब ने उसे थोड़े ही दिनों में पकड़ लिया और मरवा डाला।

४३—मुग़लराज की घटती।

(सन् १७०७ ई० से १७४८ ई० तक)

१—मुग़ल घराने के कुल १५ बादशाह हुए। उनमें से पहिले छः शक्तिमान और सचमुच सम्राट कहे जाने के योग्य थे। मुग़ल घराने के इन सच्चे सम्राटों में औरङ्गजेब अन्तिम था। उसके समय में मुग़ल राज की हद इतनी बढ़ गई थी कि पहिले किसी सम्राट के समय में न हुई थी पर औरङ्गजेब के बुरे बर्ताव ने जगह जगह बैरी पैदा कर लिये थे। सिक्ख, राजपूत और मरहटे बिगड़ गये। औरङ्गजेब के जीवन के अन्तिम बीस बरस युद्धक्षेत्र में इस चेष्टा में बीते कि मरहटों को पराजित किया जाय परन्तु मरहटे बिद्रोही ही बने रहे।

२—औरङ्गजेब का बड़ा बेटा बहादुर शाह के नाम से अपने बाप के सिंहासन पर बठा परन्तु केवल पांच बरस राज करने पाया था कि परलोक सिधारा। उसकी मृत्यु के पीछे सात बरस के समय में तीन सम्राट हुए। राज्य क्या था कठपुतलियों का खेल था ; क्योंकि दरबार के उमराव लोग ऐसे शक्तिमान हो गये थे कि जिसे चाहते थे गद्दी पर बैठाते थे और जिसे चाहते थे गद्दी से उतार कर मरवा डालते थे। औरङ्गजेब की मृत्यु के बारह बरस



बहादुर शाह ।



मुहम्मद शाह ।

पीछे अर्थात् सन् १७१६ ई० में मुगल घराने का एक सम्राट जिसका नाम मुहम्मद शाह था सिंहासन पर बैठा और ३० बरस अर्थात् सन् १७४८ ई० तक नाम मात्र का सम्राट रहा ।

३—औरङ्गजेब की मृत्यु के पीछे किसी बड़े सूबे का सूबेदार दिल्ली के सम्राट का दबाव न मानता था और आप ही वहां का हाकिम और राजा बन बैठा था। सूबेदार सम्राट को कुछ रुपया भेजते रहते थे परन्तु जो

जो चाहता था सो भेजते थे। दिखाने को यह लोग अभी तक सम्राट के आधीन थे परन्तु असल में सम्राट केवल दिल्ली का बादशाह था।



निजामुलमुल्क ।

४—जिस भांति सूवेदार सम्राट की आधीनता से निकल गये थे उसी भांति नवाब सूवेदारों की आधीनता से निकल गये थे ; यद्यपि अभी तक सूवेदारों के आधीन कहलाते थे। इनमें से बड़े बड़े सूवेदार और नवाब यह थे ; उत्तरीय भारत में अवध का सूवेदार, और बङ्गाल और बिहार का नवाब, और दखिन में हैदराबाद का सूवेदार जो निजामुल-मुल्क कहलाता था, और करनाटक का नवाब ।

४४—मरहटों की बढ़ती ।

(सन् १७०८ ई० से १७४८ ई० तक)

१—ऊपर कहा जा चुका है कि शिवाजी मरहटों को लिये हुए सारे दखिन में फिरता था और उनको लूट खसोट का पाठ पढ़ा रहा था। मरहटों ने जो देखा कि रुपया इकट्ठा करने का यह उपाय सब से सहज है तो खेती के कटते ही और वर्षा-ऋतु के समाप्त होते ही बड़े बड़े हथियारबन्द भुण्ड बांध कर निकलने लगे और मध्य भारत को रौंद डाला ।

२—कुछ समय पाकर उनका हियाव ऐसा बढ़ा कि विन्ध्याचल के उत्तर में दिल्ली तक धावा मारने लगे ; जहां जाते थे वहां के

हाकिम से चौथ मांगते थे, जब तक चौथ न मिलती प्रजा को सताते और मारते थे और जो कुछ पाते थे लूट कर ले जाते थे ।

३—औरङ्गजेब की मृत्यु के पीछे साहु मरहटों का राजा था । वह सम्भाजी का बेटा था जिसे औरङ्गजेब ने पकड़ कर मरवा दिया था । वह औरङ्गजेब के दरबार में पढ़ाया लिखाया गया था, बादशाह उसको साहु अर्थात् विश्वासपात्र कहा करता था और शिवाजी को चोर । जब औरङ्गजेब की मृत्यु हुई तो उसको आज्ञा हो गई कि अपने देश लौट जाय और वहां के बादशाह का आधीन होकर मरहटों का राजा बने । इस कारण वह मरहटों का राजा हुआ और सितारा को उसने अपनी राजधानी बनाई । परन्तु साहु कुबुद्धि और मूर्ख था और बड़ा विषयी था ; मेहनत से जो चुराता था । उसने कुल काम अपने ब्राह्मण मंत्री पर जो पेशवा कहलाता था छोड़ दिया था । पेशवा की पदवी मौरूसी हो गई और जिस भांति एक घराना राजा का था उसी भांति दूसरा घराना पेशवा का बन गया था । पेशवा देखने में तो राजा का आधीन था और उसी के नाम से सब राज काज करता था परन्तु वास्तव में धीरे धीरे मरहटों का हाकिम और राजा हो गया था । सब मरहटे उसे अपना सरदार जानते थे । सन्धि और विग्रह करना सब उसी के हाथ में था और वह सारे महाराष्ट्र मंडल का अधिकारी था ।

४—पहिला पेशवा बालाजी विश्वनाथ था । औरङ्गजेब की मृत्यु के एक बरस पीछे अर्थात् सन् १७०८ ई० में साहु ने उसको पेशवा बनाया और यह सन् १७२० ई० तक मंत्री बना रहा । इसने महम्मद शाह को दबा कर सारे दखिन में चौथ लेने की आज्ञा ले ली ।

५—दूसरा पेशवा बाजीराव था । यह सन् १७२० ई० से

१७४० ई० तक राज-काज करता रहा। इसने बड़े बड़े मरहठों को आज्ञा दी कि जहां तुम्हारा जो चाहै जाओ और उस देश से चौथ लो। महम्मद शाह ने दिल्ली को बचा रखने के कारण मरहठों को आज्ञा दे दी कि दिल्ली के सिवाय जहां चाहो वहां चौथ लो। महम्मद शाह अभी तक नाममात्र मुगल राज्य का सम्राट था। इससे मरहठों को अधिकार हो गया कि भारत के हर प्रांत से चौथ लें।

६—उसके समय में मरहठों के पांच बड़े राज बन गये। मरहठों के प्रधान लोगों ने जहां किसी सूबेदार या नवाब को दुर्बल पाया उसे सूबे से निकाल दिया और आप वहां के हाकिम बन गये।

७—महाराष्ट्र अर्थात् मरहठों का प्राचीन देश वहां था जहां अब बम्बई हाता है। उसका राजा मरहठों का नाम मात राजा था जो सितारे में रहता था पर वास्तव में देश का राजा पेशवा था जो बम्बई से अस्सी मील के लगभग अग्निकोण की ओर पूने में रहा करता था। गुजरात एक मरहठ सरदार के आधीन था जो गायकवाड़ कहलाता था। मालवे में दो राजा थे,—होलकर जिसकी राजधानी इन्दौर थी और सिन्धिया जिसकी ग्वालियर रही। बरार और गोंडवाने में जो अबतक मध्यदेश का सूबा कहलाता है भोंसला राजा था। उसकी राजधानी नागपुर थी।

८—यह रियासतें मौरूसी थीं; अर्थात् बाप के पीछे बेटा गद्दी पर बैठता था। इस से यह जाना गया कि महाराष्ट्र के सिवाय मरहठों के चार बड़े बड़े राज और थे। पहिले उन राजों के अधिकारों को चौथ लेते थे उसे पेशवा के पास भेज देते थे परन्तु पीछे से उन्होंने चौथ का भेजना बंद कर दिया। उनमें से

तीन राज अब तक हैं। इनके नाम यह हैं गुजरात या बड़ौदा, ग्वालियार, और इन्दौर।

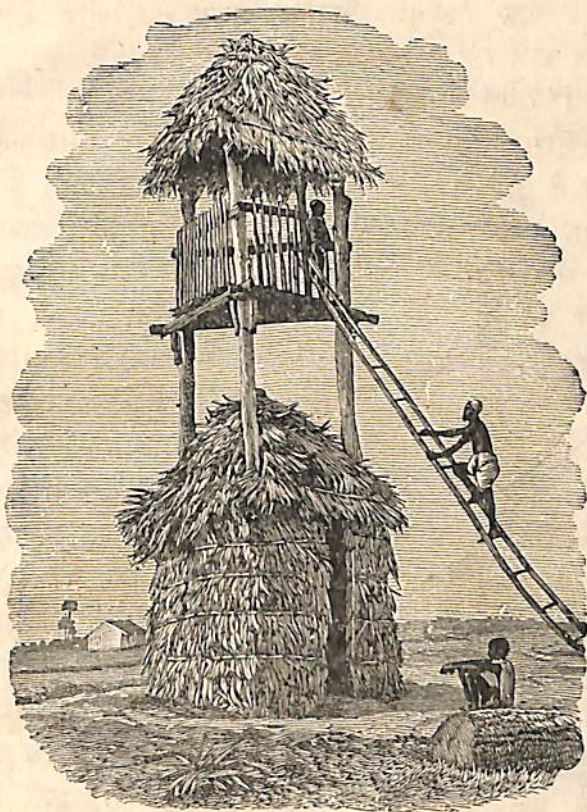
८—मरहटों ने हैदराबाद लेने की बड़ी चेष्टा की परन्तु उनका सब उपाय व्यर्थ रहा। निज़ाम हैदराबाद और मरहटों में बराबर युद्ध होते रहे; मरहटे बराबर चौथ मांगते रहें, निज़ाम ने जहां तक हो सका चौथ नहीं दी।

१०—तीसरा पेशवा बालाजी बाजीराव था। यह अपने बाप और दादा के पीछे सन् १७४० ई० से सन् १७६१ ई० तक राज करता रहा।

११—औरङ्गजेब की मृत्यु के पचास बरस पीछे तक भारत का हाल वही हो गया था जो किसी समय में पठान बादशाहों के राज में हुआ था अर्थात् इसके बीच में कोई ऐसा बली राजा न था जैसा अब है जो प्रजा को डाकुओं से बचाता है और उसके जान और माल की रक्षा करता है। मरहटे डाकुओं के दल के दल देश में फिरते थे; अपने घोड़ों के लिये किसानों की खड़ी खेतियां काट डालते थे और प्रजा को लूटते मारते थे। इस समय में लोग हर गांव के पास पास दृढ़ कोट बनाते थे और चारों ओर कांटों को बाड़ लगाई जाती थी जिसमें कि लुटेरे न घुस आयें। किसान हल जोतने जाते थे तो अपनी तलवार साथ ले जाते थे। ऊंचे मचानों पर रखवारे बैठाये जाते थे जिसमें कि चारों ओर देखते रहें और जब डाकुओं के आने की धूल उड़ती हुई देखें तो जता दें। हर गांव में एक बड़ा भारी धौसा रहता था जिसकी धमक एक मोल की दूरी पर सुनाई देती थी। जहां डाकू आते दिखाई दिये और धौसे पर चोट पड़ी लोग उसे सुनते ही खेतों से भागकर गावों के कोट के भीतर चले जाते थे।

१२—रास्ते लुटते थे। इस कारण लोग अपनी रक्षा के निमित्त

सिपाही को साथ लिये बिना राह नहीं चलते थे। इलाके के इलाके उजाड़ पड़े थे। जो कुछ सड़कें पहिले की बनी मौजूद थीं बिल्कुल चौपट हो गई थीं। कोई उनकी देख भाल नहीं करता था, गाड़ियों



गांव का सचान।

का चलना बन्द हो गया था, लोग घोड़ों या बैलों पर चढ़ कर यात्रा करते थे। हर इलाके का सरदार अलग था। यात्री जब तक उनको कुछ भेंट न देते थे वह लोग उनको अपने इलाके में

होकर जाने न देते थे। यह उतरवाई कहलाती थी। कभी कभी बौस मौल की जात्रा में दस बारह जगह उतरवाई देनी पड़ती थी।

४५—नादिरशाह ।

१—औरङ्गजेब के मरने के तीस बरस पीछे नादिर खां नाम एक सरदार ने फ़ारस की राजगद्दी पर अधिकार जमा कर अपना नाम नादिरशाह रख लिया और अफ़ग़ानिस्तान को भी पराजित कर लिया। इसके पीछे महम्मदशाह के पास मित्रता व्यवहार में एक दूत भेजा। महम्मदशाह ने दूत के साथ वैरभाव का बरताव किया और कहने लगा कि “आज नादिरशाह बादशाह हो गये हैं”।



नादिरशाह ।

२—नादिर क्रोधी स्वभाव का पक्का मुसलमान था। उसने महम्मदशाह पर यह दोष लगाया कि वह मुसलमान बादशाह के धर्मानुसार काम नहीं करता अर्थात् उसने हिन्दुओं से जज़िया क्यों नहीं लिया और भयभीत होकर मूर्तिपूजक मरहठों को चौथ क्यों दी।

इस बहाने से नादिरशाह ने महम्मदशाह को दण्ड देने का विचार किया। और ईरानियों और अफ़ग़ानों की एक बड़ी सेना लेकर जिस तरह ३४० बरस पहिले तैमूरलङ्ग आया था यह भी खैबर के दर्रे से निकल कर पंजाब को कुचलता और सत्यानाश करता हुआ दिल्ली में आ गया।

३—नादिरशाह बड़े डील डील का मनुष्य था। वह छः फुट लम्बा, बदन का रंग काला, माथे पर बाल पड़ा हुआ, घनी भँवें, बोली में बादल के समान गर्ज, आँखें बिजली की नाईं चमकती हुई थीं। वह भेड़ के बच्चे की काली खाल के चमड़ों का चोगा पहिनता था और फ़ारस की नोकदार कुलाह दिया करता था। परन्तु भारत में आकर उसने लाल रंग का बड़ा मुड़ासा सिर पर बांधा; कमर में खंजर हाथ में लोहे का तबर रखता था। हिन्दुओं की दृष्टि में वह पूरा राक्षस जान पड़ता था।

४—नादिरशाह कहता था कि जो मुझे बहुतसा धन मिल जायगा तो मैं नगर को न उजाड़ूँगा। परन्तु रात के समय दिल्ली के लोगों ने नादिरशाह के कुछ सोते हुए सैनिक मार डाले। नादिरशाह ने जब सबेरे यह हाल देखा तो उसके शरीर में आग लग गई और उसने आज्ञा दी कि नगर को लूट लो और जो सामने आये उसको मार डालो। दिन भर नादिरशाह की सेना ने तैमूर के तुकों की नाईं लूट खसोट, अग्निदाह और हत्याकाण्ड मचा रक्खा। सायंकाल को महम्मदशाह आकर नादिरशाह के पैरों पर गिरा और प्रार्थना की कि अब यह हत्याकाण्ड बन्द कर दिया जाय। नादिरशाह ने अपनी सेना को आज्ञा दी बस अब किसी को न मारो और सेना ने उसकी आज्ञा मान ली।

५—दूसरे दिन नादिरशाह और उसके साथियों ने दिल्ली के उस कुल धन को समेटा जो बाबर के समय से मुगल सम्राट बटोरते आये थे। शाहजहाँ का तख्ते ताऊस, शाही ताज और बेगमों के जड़ाऊ गहने, अच्छे से अच्छे हाथी, घोड़े, तोपें, बहुमूल्य अतलस, कमखाव, मलमल, शाही खज़ाने और दिल्ली और अवध के बड़े आदमियों और रईसों के जमा किये हुए धन के ढेर अपने साथ ले गया। नादिरशाह के हाथ इतना धन लगा कि वह

हैरान था कि इसको क्या करूँ। इस कारण उसने कुल सेना को तीन मास की तनखाह अगौड़ दे दी और एक बरस तक फ़ारस के रहनेवालों से किसी प्रकार का कर न लिया।

६—इस नादिरशाह की चढ़ाई ने बचे खुचे मुग़ल राज्य का नाश कर दिया। सूबेदारों और नवाबों ने रुपये की भेंटें भेजनी बन्द कर दीं। मरहठों को और भी बन गई। उन्होंने कुल दखिन और बंगाले को चौपट कर डाला और जहाँ गये वहीं चौथ लगा दी। कलकत्ते के अंग्रेजी व्यापारी भी भयभीत हुए। उन्होंने एक गहरी खाई खोदी जिस में मरहठे उन्हें लूट न सकें और इस खाई का नाम मरहठाडिच अर्थात् मरहठा खाई रक्खा गया।

**Sri Ramakrishna Ashram
LIBRARY
SRINAGAR**

*Extract from
the Rules :-*

1. Books are issued for one month only.
2. An over - due charge of 20 Paise per day will be charged for each book kept over - time.
3. Books lost, defaced or injured in any way shall have to be replaced by the borrower.

आगरा-अवध संयुक्त प्रदेश के लिये उपयोगी किताबों की फहरिस्त ।

हिन्दूरी ।

भारतवर्ष का इतिहास, पहिला भाग, ई. सार्संडन और लाला सीताराम रचित, १० आना ।
भारतवर्ष का इतिहास, दूसरा भाग, ई. सार्संडन और लाला सीताराम रचित, ५ आना ।
हिन्दुस्तान के इतिहास की सरल कहानियाँ (मानचित्र और चित्र समेत) १० आना ।
मिडल वर्नेकुलर हिन्दूरी रीडर, डे. सार्संडन, डी. ए. का बनाया, ऊर्दू और हिन्दी
प्रत्येक ५ आना ।

जिन्दोगाफी ।

जिन्दोगाफी, संयुक्त देशकी इर और उधे क़ासों के लिए, बाबू दरनाम दस भी
ए. की बनायी मणिव और काँत रंगीन मानचित्र, संयुक्त देशके लिये, हिन्दी
और ऊर्दू प्रत्येक ४ आना ।

फिज़िकल ट्रेनिंग ।

ए टेक्स्ट-बुक अफ़ फिज़िकल डिल, हिन्दुस्तान के स्कूलों के आदर्शप्रणीत द्रव्य विशेषरूप से
अङ्कित हैं । डे. सा. कैमचर और जी. आर. काए का बनाया १० आना ।
(ऊर्दू और हिन्दी में भी) ।

मैकमिलन हिन्दी ग़रामर ।

भाषा मुग़ल व्याकरण, पार्ट १, १ आना ; पार्ट २, २ आना ।
मैकमिलन डिग्लट ग़रामर, हिन्दी-इंग्लिश, बुक १-शब्द भेद, ३ आना ; बुक २-
सरल पदपरिचय, ४ आना ।

मैकमिलन ऊर्दू ग़रामर ।

वुसूल उन् कावाएद, सम्पूर्ण संगीधित और परिदक्षित । ए. सी. मुहजि बी. ए. का
बनाया, पार्ट १, २ आना ; पार्ट २, ३ आना ।
कावाएद-ऊर्दू मौलवी मक़मद हबीबुल्ला एम. ए. का बनाया, पार्ट १, १ आना ;
पार्ट २, २ आना ।
मैकमिलन डिग्लट ग़रामर, ऊर्दू-इंग्लिश, बुक १-शब्द भेद, ४ आना ; बुक २-
सरल पदपरिचय, ४ आना ।